✻ श्रीद्वारकेशो जयति ✻

श्रीवल्लभीय ग्रंथमाला

पुष्प संख्या १०

श्री द्वारकाधीशजी–तृतीय-गृह के वर्ष भर के

कीर्तन-प्रणाली के पद

(कुल पद संख्या १२१०)

[नित्य तथा वसंत धमार के पद सहित]

(सचित्र)

संपादक-संशोधक :
तृतीय-गृह तिलकायत
गो० श्री ब्रजभूषणलालजी महाराज
कांकरौली.

UNIVERSITY LIBRARY
24 FEB 1961
ALLAHABAD.

प्रकाशक
द्वारकादास परीख, मथुरा.

वि० सं० २०१५]

न्यौछावर ८) रुपया.

[वल्लभाब्द ४८१

प्रकाशक :
द्वारकादास परीख
मंत्री
अष्टछाप स्मारक समिति, मथुरा ।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथमावृत्ति १००० प्रतियाँ
जन्माष्टमी, २०१५ वि०

मुद्रक :
त्रिलोकीनाथ मीतल
अग्रवाल प्रेस, मथुरा.

कीर्तन प्रणाली के पद—

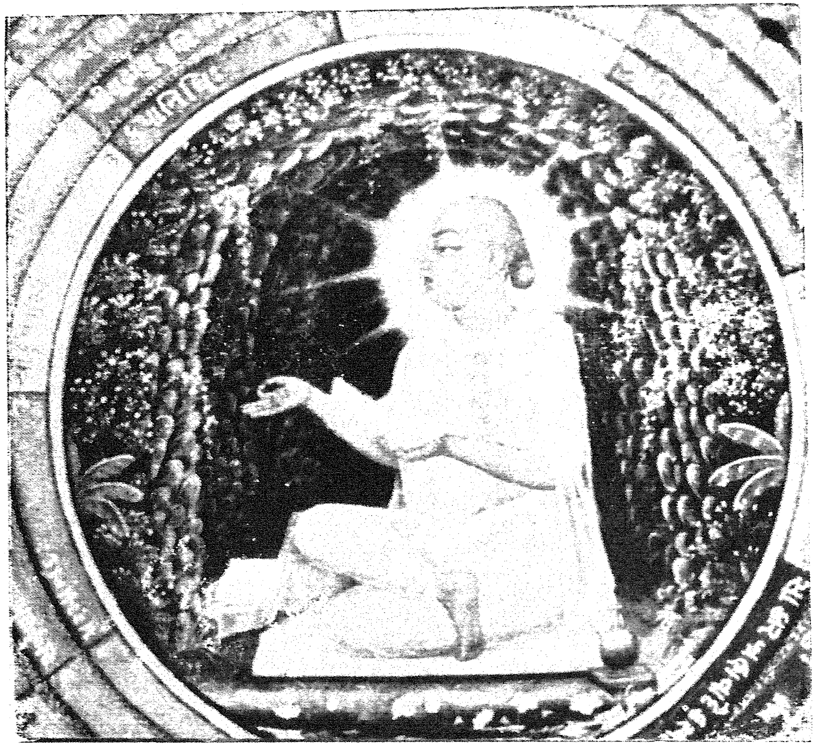

भगवत्सेवा में कीर्तन भक्ति को सर्व प्रथम स्थान देने वाले

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जी

प्राकट्य संवत् १५३५ वैशाख कृष्ण ११

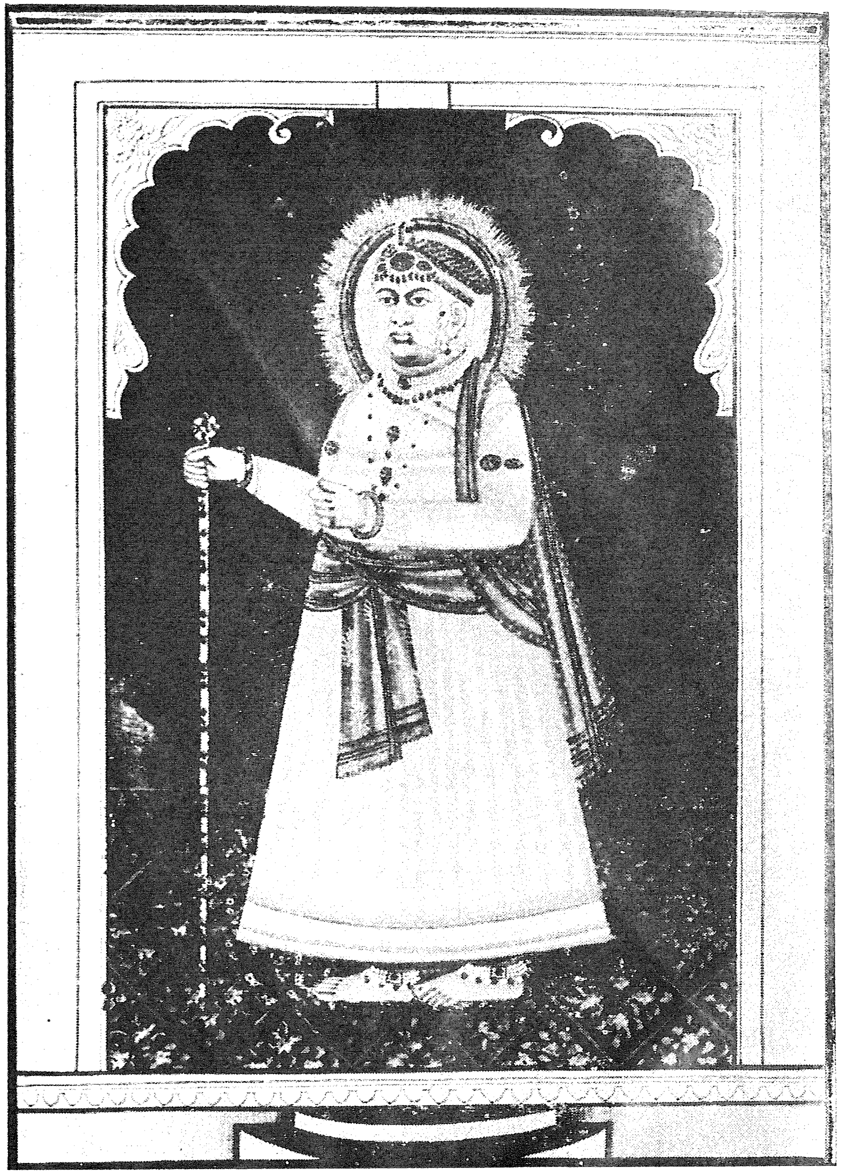

कीर्तन प्रणाली के आदि निर्माता, अष्टछाप के संस्थापक

प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथ जी गुसांई जी

* संपादन के विषय में *

श्रीद्वारकाधीश जी तृतीय गृह के वर्ष भर के 'कीर्तन-प्रणाली के पद' नामक ग्रन्थ का सम्पादन व संशोधन इसी गृह के अधिपति विद्यमान परम पूज्य व्रजभाषा एवं कीर्तन साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् आचार्य-रत्न गो० श्री व्रजभूषण लाल जी द्वारा हुआ है। आज से पूरे पच्चीस वर्ष पहले वि० सं० १९९० में जब मेरा निवास काकरौली में था तब पूज्यपाद महाराजश्री को अपने निजी प्राचीन हस्तलिखित संग्रहो के आधार पर अपने यहाँ मदिर मे गाये जाने वाले इन कीर्तनो का सपादन करते हुए मैने देखे थे। उस समय पू० पा० महाराज श्री मुद्रित एवं अमुद्रित कीर्तनों की प्रतियो को मिलाते हुए प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध पदों का संकलन, संपादन एवं संशोधन जिस लगन से और गौर पूर्वक करते थे उसको देख कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य होता था। क्यों कि उस समय आपकी केवल बाईस वर्ष की ही उम्र थी किन्तु तब भी कीर्तन और भापा संबधी आपका ज्ञान प्रौढ विद्वानो को भी मात करता था। मुझे स्मरण है कि व्रजभाषा और कीर्तन के एक मथुरास्थ प्रसिद्ध विद्वान को उस समय आपने पूछा था कि 'देवी के द्वारे ते निकसी देवो दुल्हन' और 'देवी के द्वारे ते निकसी प्यारी दुल्हन' इन दो पाठों में कीर्तन के भाव की दृष्टि से किस पाठ को ग्रहण करना चाहिये। उक्त विद्वान् ने झट कह दिया कि 'प्यारी दुलहन' वाला पाठ ही रखना चाहिए। तब पू० पा० महाराज श्री ने कहा कि नही अभी तो वह कन्या है इसलिये 'प्यारी' की अपेक्षा 'देवी' पाठ ही रखना उत्तम होगा।

उस समय पू. पा. महाराज श्री ने रात और दिन श्रम लेकर ७६१ पदो का सकलन, संपादन और सशोधन किया था। जैसे ही मन्दिर की सेवा पहुँच कर बाहर आते थे वैसे ही इस कार्य मे आप संलग्न हो जाते थे। उस समय भोजन आदि कार्यों मे भी बड़ा विलंब हो जाता था। आप संपादन आदि के अनन्तर इन पदों की टाइप–प्रति भी अपने हाथ से ही करते थे।

पू पा. महाराज श्री जैसे विद्वान् हैं वैसे उदार भी है। उसी समय मैने आपके समक्ष आपकी टाइप की हुई प्रति की प्रतिलिपि करने की इच्छा प्रकट की। आपने उसे सहर्ष मुझे दी और मैने उसकी एक प्रतिलिपि कर भी ली। मुझे मेरे साम्प्रदायिक जीवन के प्रारम्भ से ही अर्थात् बारह वर्ष की वय से ही कीर्तन सुनने और समझने की तीव्र इच्छा रहती थी और आज भी है। इसी के फलस्वरूप मै अपने ३८ वर्ष के इस साम्प्रदायिक जीवन मे सैकडों कवियो के अप्रसिद्ध, ऐतिहासिक तथा भावना प्रधान पदो का सग्रह अपने हाथों से तैयार कर सका हूँ। उस समय मै केवल अन्त: सुखाय इन पदों का सग्रह करता था। किन्तु यह किसे ज्ञात था कि आगे चल कर इन पदो और भक्त कवियों के चरित्रों का भी प्रकाशन–कार्य श्री हरि मेरे जैसे एक अविद्वान् के द्वारा ही सम्पन्न करेगे। यही पुष्टिमार्गीय अङ्गीकृति का लक्षण है। अयोग्य को योग्य करना और योग्य की उपेक्षा करना इस प्रकार के भगवान के 'कर्तुम् अकर्तुम, व अन्यथा कर्तुम्' विरुद्ध धर्मों को कौन नही जानता है। अस्तु

पिछले आठ–दस वर्षों से इस प्रणाली के पदों को छपाने की प्रेरणा मुझे कीर्तन-रसिक भगवदीयों द्वारा कई बार होती रहती थी। किन्तु वह कार्य मेरे लिये असंभव-सा था। क्यो कि ये पद तो केवल ७६१ ही थे जब कि वर्ष भर की प्रणाली के पदो की संख्या १२१० के करीब होती है। अतः

मै इसकी उपेक्षा ही करता रहा। पश्चात् एक बार बहादरपुर के कीर्तन-प्रेमी भाई श्री पुरुषोतमदास को मैने कहा कि इस प्रणाली के शेष पद बहादरपुर के कीर्तनिया श्री छगन भाई के पास है, (क्योकि उन्होंने वर्षों तक काकरौली मे रह कर बड़े चाव से कीर्तन की सेवा की है) अतः उनसे शेष पदो को लिख कर मुझे आप वे पद अवश्य भेजे । उन्होने यह कार्य शीघ्र सपन्न किया । किंतु श्री छगन भाई की प्रति के पद 'गुजरातीपन' को लिये हुए थे । उनको शुद्ध करना बड़ा कठिन काम था। इसलिये यह कार्य ज्यों का त्यो पड़ा रहा ।

अगले वर्ष २०१४ के पौष मे जब मेरा काँकरौली जाना हुआ तब भगवत्प्रेरणा से मैने महाराजश्री से इन पदो को छपाने की आज्ञा माँगी । आपने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा प्रदान की और अपनी टाइप की हुई प्रसिद्ध एव अप्रसिद्ध पदो की दोनो प्रतियाँ भी मुझे दी । साथ मे शेष पदो के सग्रह, संपादन आदि कार्यों का भार भी मुझ पर छोड़ा गया । मैने पू० पा० महाराज श्री के सपादित पदों को मथुरा मे आकर शीघ्र छपवाये और फिर जब महाराज श्री काकरौली से बड़ौदा पधारे तब मै भी अक्षय तृतीया के अगले दिन मथुरा से बडौदा आया । वहाँ से कुछ दिन डभोई रह कर मैने श्री छगनभाई की पोथी के करीब ४५० पदो की प्रेस–प्रति तैयार की और यथामति उन्हे सपादित भी किये । फिर उन पदों को पू० पा० महाराज श्री के चरणो मे भेट किये । तब पू० पा० महाराज श्री ने उनको शीघ्र ही संशोधित कर मुझे छपवाने को दिये । शीघ्रतावश पहले पदो की तरह इन ४५० पदो का सशोधन नहीं हो सका है तब भी उनमे 'गुजरातीपन' नही रहा है । आज यह संशोधित पदों का सग्रह पाठको के हाथ मे है, इसको देख कर सभी को सतोष होगा, ऐसा विश्वास है ।

पू० पा० महाराज श्री ने प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर जिन पदो के जिन पाठों मे भाव-चमत्कार वा काव्य-चमत्कार रखा है उनके दृष्टान्त रूप से दो-तीन पदो का संकेत यहाँ किया जाता है–

पद सं० ४ पृष्ठ–सं० १ पर—

मुद्रित प्रतियों में—"छीके तें सगरो दधि उखल चढ़ि काढि लेहु" । संशोधित पाठ–"छीके पर सगरी दधि उखल चढि उतार धरी" ।

संशोधित पाठ में वातसल्य भाव का जैसा चमत्कार दीखता है वैसा मुद्रित प्रतियों के पाठ में नहीं है । उसमें माता अपने नन्हें से बालक को ऊखल पर चढ कर सगरो दधि काढ लेने का आदेश देती है जो वात्सल्य के उत्कर्ष और श्री कृष्ण की वय से भी विरुद्ध हैं । यशोदा भी जब ऊखल पर चढे तभी वह दही नीचे आ सकता है । तो छोटे से बालक के ऊखल चढ़ने पर वह कैसे आ सकेगा ? यह सब दृष्टव्य है । साथ में बालक विशेष दही प्राप्ति की जिद्द न करे इस लिये माता ने पहले से ही यह कह दिया कि घरकी 'सगरी' दधि छीके पर ही धरी है । कैसा सुदर पाठ है ?

इसी प्रकार इस ग्रन्थ के पद संख्या ४४ और पृष्ठ–सख्या १३ पर 'श्रवन सुन सजनी बाजे मंदिलरा' में मुद्रित प्रतियों के इसी पद की तुकों की संख्या और पंक्तियों के क्रम में भी भेद मिलेगा। मुद्रित में १४ तुक है इसमे केवल नौ; इसी प्रकार इन तुको के क्रम में भी है ।

इसी तरह 'वाघंबर ओढे सांवरो' वाले इस ग्रंथ के पद (सं. ६६०) में और मुद्रित प्रतियों के इसी पद में भी आपको तारतम्य मिलेगा। मुद्रित प्रतियों में केवल सात तुक हैं इसमे नौ है। इसी प्रकार तुक के क्रमों में भी है। ऐसे-ऐसे कितने ही पद इस ग्रन्थ में ऐसे है जो काव्य और भाव दोनों दृष्टि से अत्यंत चमत्कार पूर्ण कहे जा सकते है। मर्मज्ञ पाठकों को पढ कर बड़ा आनन्द होगा। इस ग्रन्थ में करीब ४०० ऊपर ऐसे पद हैं जो अभी भी अप्रसिद्ध है। अस्तु।

इस ग्रन्थ को सर्वोपयोगी और अन्य धमार, वसंत एवं नित्य के पद-संग्रहों से निरपेक्ष रखने के लिये नित्य सेवा के ऐसे पद इसमे और अवशिष्ट पदो के नाम से जोड दिये है जो वर्षोत्सव में नहीं मिलते है। वर्षोत्सव में फागुन आ ही जाता है। अतः वसंत और धमार तो इस ग्रन्थ में बहुतायत रूप में मिल ही जाते है। नित्य की सेवा के और पनघट आदि विशिष्ट विषयों के पदों की संख्या-सूची देकर इस ग्रन्थ को सर्वांगपूर्ण बनाया है। इस ग्रन्थ को प्राप्त कर लेने पर वर्षोत्सव, नित्य और वसंत धमार कीर्तन के इन तीनों ग्रन्थो की अपेक्षा नही रहती है। इस प्रकार का सम्पादन सम्प्रदाय मे सर्व प्रथम हुआ कहा जा सकता है। यद्यपि 'कीर्तन रत्नाकर' और 'कीर्तन कुसुमाकर' ग्रन्थ इस प्रकार के थे किंतु संशोधित संपादन की दृष्टि से वे दोनो इसकी श्रेणी में नही आ सकते। उन ग्रन्थो में काफी 'गुजरातीपन' और पाठों की अशुद्धियाँ भी थी। आज वे ग्रन्थ भी अप्राप्य हो चुके है। अतः कीर्तन के वर्षोत्सव, नित्य और बसंत धमार ये तीनों संग्रह, जिनकी कीमत रु० १३) से कम नही होती है, उनकी गरज केवल आठ रुपये के इस ग्रन्थ से सर जाती है। उपरांत इस में अप्रसिद्ध चुने हुए और प्रामाणिक पदों का संकलन होने से इससे कीर्तन रसिको को भावानंद की प्राप्ति उसके नवीन तरंगों के साथ मिलती रहेगी। आज 'वर्षोत्सव' का पुस्तक भी अप्राप्य हो रहा है। ऐसी स्थिति में यही सर्वाङ्गपूर्ण कीर्तन ग्रन्थ सभी वेष्णवो के लिये आश्रय रूप माना जा सकता है।

प्रेस कर्मचारियो की शीघ्रता के कारण इस ग्रन्थ मे न तो शब्दों का रूप ही एक सा रह सका है न इसका त्रुटि रहित होना कहा जा सकता है। कम से कम चार पद (सं. ११०१, ११३९ ११४३, ११४४,) दुहेरा भी छप गये हैं। ये दुहेरा पदों के पाठ और तुक-क्रम भी अशुद्ध है। इन्हे गाना नही चाहिये। इसी प्रकार शीघ्रता के कारण कही-कही राग का निर्णय नही हो सका है इसलिये वहाँ जगह छोड़ दी गई है। पाठक स्वयं उन रागो का निर्णय करले।

कागजों की महार्घता के कारण इन कीर्तनों की अकारादि सूची नही दी जा सकी है। इसी प्रकार कवियों की नामावली और उनके पदों के एकीकरण की सख्या भी; जिसका हमें क्षोभ है।

शुद्धि पत्रक साथ मे लगाया गया है। अतः प्रथम शुद्ध करके ही पीछे इस ग्रन्थ का उपयोग करना चाहिये। अंत मे भाई ओच्छवलाल तथा जमनादास डभोई वालो ने इस ग्रन्थ-मुद्रण कार्य मे विना ब्याज रु. १३००) की रकम उधार दी है। अतः उनका स्मरण करना आवश्यक है। इसी प्रकार अग्रवाल प्रेस के मालिक श्री त्रिलोकीनाथजी मीतल ने भी बडे यत्न से इस कार्य को पार पाड़ा, इसलिये उनको भी धन्यवाद देते हुए इस वक्तव्य को समाप्त करता हूँ।

—**द्वारकादास परीख**

❀ कीर्तन-प्रणाली के पदन को शुद्धि-पत्रक ❀

कृपया पढ़ने से पूर्व इन स्थानों को सुधार लीजिये+

पृ० सं.	पंक्ति सं.	अशुद्ध	शुद्ध
५	१९	जगमोहन में	गोपीवल्लभ भोगआये जगमोहन में
९	२०	राग मालव	सेन के दर्शन में राग मालव
२२	१०	द्वन्द्व	द्वन्द
२५	१९	राग सारंग	राजभोग दर्शन में राग सारंग
२६	११	हरिये ले ले	हरुवे ले ले
२६	२२	राग बिलावल	शृंगार समय राग बिलावल
३८	३	हो वृषभान	हो चंद्रभान
४२	९	'विष्णुदास' प्रमु	'विष्णुदास' प्रभु
४६	४	बिसरायो हो जे	बिसरायो हो। जे
४७	४	रसकि	रसिक
४८	२३	बांहन दे हे	बांहन दे हो
७०	१४	बिलकिर	किलकिर
७२	३	२२७	२२८
७५	११	स्याम को	स्याम कों
८०	६	२५	२५६
८५	३	अनगित	अगनित
८७	६	गोधन सेवक	गोधन के सेवक
८७	२२	भुजमानो रघुपति	भुजमानो। रघुपति
९६	२३	थिलांग	धिलांग
१०८	२१	॥३॥	॥३॥❀३४२❀
१०९	१५	॥३४६॥	॥३४५॥
११६	२१	॥३६६॥	॥३७६॥
११७	१६	ध्यावत	प्यावत
११७	२५	॥५८१॥	॥३८१॥
११८	१९	रे हांक	दे हांक
११९	२४	❀३९०❀	❀३९१❀
१२०	२०	❀१९६❀	❀३९६❀
१२२	४	❀४०४❀	❀४०३❀
१२२	१२	सुर	'सूर'
१२८	१०	उर वाहक	उर दाहक

पृ० सं.	पंक्ति सं.	अशुद्ध	शुद्ध
१३४	२४	हि रामरा...४६७	हित रामराय...४६८
१३५	२५	॥४॥	॥४॥❀४७०❀
१५०	५	घूम अंबर	धूम अंबर
१५९	१७	❀५६३❀	❀५६२❀
१६२	१८	❀५७२❀	❀५७१❀
२४१	२४	रागबिलावल	राग बिलावल ❀शृंगार ओसरा❀
२४२	१७	भोरज लजात	भोर जलजात
२४५	२४	वंदो करो	वंदो कोऊ करो
२५६	६	तेंपूजी	तें पूजी।
२६५	४	❀८२४❀	❀८२६❀
१६५	१९	❀८२५❀	❀८२७❀
२६६	५	❀८२६❀	❀८२८❀
२६६	१४	❀८२७❀	❀८२९❀
२६८	२२	लहां बलि	लहों। बलि
२८९	२	बाँह धरों	बाँह धरो
२९२	१७	कुच कुंम कुम	कुच कुंभ कुमकुमा
२९४	१३	❀९१३❀	❀९१२❀
२९५	२	॥२॥	॥२॥९१५❀
२९८	८	❀९९०❀	❀९३०❀
३०६	११	खसी सब।	सखी सब
३०७	४	॥२॥	॥२॥९७२❀
३२८	१६	है उर	है डर
३३१	२	डरत वारी	डारत वारी
३३३	१४	सुहाय	सुहायो।
३३४	१५	दसन धुति	दसन द्युति।
३३६	६	❀१०९❀	❀१०९५❀
३३६	९	❀१०९❀	❀१०९६❀
३३६	१२	❀१०९❀	❀१०९७❀
३६५	५	❀११८२❀	❀११८३❀
३६५	१०	❀११८३❀	❀११८४❀
३६५	१३	❀११८४❀	❀११८५❀
३६५	१८	❀११८५❀	❀११८६❀
३६५	२०	❀११८६❀	❀११८७❀
३६६	३	❀११८७❀	❀११८८❀

+कही कही मात्रा तथा बिंदी छपते छपते टूट गई है, पाठक स्वयं यथास्थान सुधार लै इसी प्रकार 'ब' के स्थान पर 'व' और मिले हुए शब्दों को भी समझ कर सुधार ले।

❋ श्रीद्वारकेशोजयति ❋

❋ तृतीय गृह की कीर्तन-प्रणालिका ❋

❋ उत्सव-सूची ❋

★

मिती	उत्सव
भाद्र० कृष्ण ८	जन्माष्टमी (श्रीकृष्ण-जयन्ती)
,, ,, ९	नन्दमहोत्सव और श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव ... ...
,, ,, १०	. ...
,, ,, १३	छट्ठी को पालना ... ...
,, ,, १४	श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई
,, शुक्ल १	राधाष्टमी की बधाई ... ...
,, ,, २	श्रीगिरिधरलाल जी को उत्सव
,, ,, ५	श्रीचन्द्रावलीजी को उत्सव
,, ,, ७	.. ..
,, ,, ८	राधाष्टमी
,, ,, ९	श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव
,, ,, १०	....
,, ,, ११	दान-एकादशी
,, ,, १२	श्रीवामन-जयन्ती
,, ,, १३	... ...
,, ,, १४	... ...
,, ,, १५	... ...
आश्विन कृष्ण १	साँझी को प्रारंभ
,, ,, ६	श्रीबालकृष्णजी के उत्सव की बधाई
,, ,, १२	श्रीगोपीनाथजी को उत्सव
,, ,, १३	श्रीबालकृष्णजी को उत्सव
आश्विन कृष्ण १४	... ...
,, शुक्ल १	....
,, ,, १०	दशहरा अन्नकूट की बधाई
,, ,, ११	... ...
,, ,, १३	छप्पन भोग को उत्सव
,, ,, १५	शरद् (रासोत्सव)

मिती	उत्सव
कार्तिक कृष्ण १	....
,, ,, २	श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई
,, ,, ५	. ... .
,, ,, ७	श्रीबालकृष्णलालजी के गादी विराजवे को उत्सव
,, ,, १२	....
,, ,, १३	धनतेरस
,, ,, १४	चतुर्दशी
,, ,, ३०	दीपावली
,, शुक्ल १	अन्नकूट
,, ,, २	भाईदूज (यमद्वितीया)
,, ,, ७	... .
,, ,, ८	गोपाष्टमी
,, ,, ११	प्रबोधिनी
,, ,, १२	....
,, ,, १३	.. ..
मार्गशीर्ष कृष्ण १	व्रतचर्या प्रारम्भ
,, ,, ५	श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई
,, ,, ८	श्रीगोविन्दरायजी तथा श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव
,, ,, ११	श्रीगोकुलनाथजी के उत्सव की बधाई
,, ,, १३	श्रीघनश्यामजी को उत्सव
,, ,, १४	श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव
,, शुक्ल २	श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव
,, ,, ४	श्रीमथुराधीश श्रीद्वारकाधीश एक सिंहासन पर विराजे

मिती	उत्सव
मार्गशीर्ष शुक्ल ७	श्रीगुसांईजी के उत्सव की बधाई तथा श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव
पौष कृष्ण ७	छप्पन भोग को उत्सव
,, ,, ८	... ...
,, ,, ९	श्रीगुसांईजी को उत्सव
,, ,, १०	... ...
,, ,, ११	श्रीविट्ठलनाथजी के उत्सव की बधाई
,, ,, १३	... ...
,, ,, १४	श्रीविट्ठलनाथजी को उत्सव
,, ,, ३०	... ...
मकर-संक्रान्ति के प्रथम दिन	भोगी संक्रान्ति
,,	... ...
माघ कृष्ण ४	गुप्त उत्सव
,, ,, ९	श्रीविट्ठलनाथजी को जन्म-दिन
,, शुक्ल ४	... ...
,, ,, ५	वसन्त-पंचमी
,, ,, ६	... ...
,, ,, १४	पूर्णिमा को होरी रोपण हो तो आज
,, ,, १५	सायंकाल होरी ,, ,, ,,
,, ,, १५	प्रातःकाल ,, ,, ,, ,,
फाल्गुन कृष्ण २	श्रीव्रजभूषणलालजी को जन्म-दिन
,, ,, ४	श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव
,, ,, ७	श्रीनाथजी को पाटोत्सव
,, ,, ८	... ...
,, ,, १३	... ...
,, शुक्ल १	....
,, ,, ८	होलिकाष्टक
,, ,, ११	कुंज-एकादशी
,, ,, १२	... ...
फा० शुक्ल १३	८४ खंभ को बगीचा
,, ,, १४	... ...
,, ,, १५	होरी

मिती	उत्सव
चैत्र कृष्ण १	दोलोत्सव
,, ,, २	द्वितीया पाट
,, ,, ९	गुप्त उत्सव
,, ,, १०	छप्पन भोग को उत्सव
,, शुक्ल १	संवत्सरोत्सव
,, ,, ३	गनगौर
,, ,, ४	... ...
,, ,, ६	श्रीयदुनाथजी को उत्सव
,, ,, ८	श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव
,, ,, ९	श्रीराम-जयन्ती तथा श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव
,, ,, १०	... ...
,, ,, ११	श्रीमहाप्रभुजी के उत्सव की बधाई
,, ,, १५	छप्पन भोग को उत्सव
वैशाख कृष्ण ७	श्रीमथुरेशजी श्रीद्वारकाधीशजी एक सिंहासन पर विराजें
,, ,, १०	... ...
,, ,, ११	श्रीमहाप्रभुजी को उत्सव
,, ,, १२	... ...
,, ,, १३	श्रीपुरुषोत्तमजी के उत्सव की बधाई
,, शुक्ल १	श्रीपुरुषोत्तमजी को उत्सव
,, ,, ३	अक्षय तृतीया
,, ,, ४	... .
,, ,, ११	श्रीद्वारकेशजी के उत्सव की बधाई
,, ,, १३	....
,, ,, १४	श्रीनृसिंहजी-जयन्ती तथा श्रीद्वारकेशजी को उत्सव
ज्येष्ठ कृष्ण ५	छप्पन भोग को उत्सव
ज्येष्ठ शुक्ल ४	श्रीव्रजनाथजी के उत्सव की बधाई
,, ,, ७	श्रीव्रजनाथजी को उत्सव

मिती	उत्सव
ज्येष्ठ शुक्ल १०	गंगादशमी
,, ,, ११	....
,, ,, १४	... .
,, ,, १५	स्नान यात्रा
आषाढ़ कृष्ण ६	श्रीद्वारकेशलालजी को उत्सव (खसखाना)
,, शुक्ल १	रथयात्रा के प्रथम दिन
,, ,, २	रथयात्रा
,, ,, ३	,, ,, के द्वितीय दिन
,, ,, ५	श्रीद्वारकाधीश को पाटोत्सव
,, ,, ६	कसूँभी छठ
,, ,, ११	देवशयनी एकादशी
,, ,, १५	....
श्रावण कृष्ण १	हिंडोरा विराजैं वा दिन
,, ,, ४	जन्माष्टमी की बधाई
,, ,, १०	श्रीबालकृष्णलालजी के उत्सव की बधाई
,, ,, १३	श्रीबालकृष्णलालजी को उत्सव दुहेरा मडान
,, ,, ३०	हरियाली अमावस
,, शुक्ल ३	ठकुरानी तीज
,, ,, ४	....
,, ,, ११	पवित्रा एकादशी
,, ,, १२	....
,, ,, १५	राखी-उत्सव

मिती	उत्सव
भाद्रपद कृष्ण	हिंडोरा विजय होय वा दिन
,, ,,	जन्माष्टमी-बधाई में मुकुट धरैं तब
,, ,,	,, ,, किरीट धरैं तब
,, ,,	,, ,, टिपारा धरैं तब
,, ,,	,, ,, पगा धरैं तब
,, ,,	,, ,, फेंटा धरैं तब
,, ,,	जन्माष्टमी-बधाई में दुमाला धरैं तब
,, ,, ७	छट्ठी को उत्सव

ग्रहण की रीति ....

शीतकाल-सम्बन्धी रीति ....

१ टिपारा धरैं तब
२ किरीट ,, ,,
३ दुमाला ,, ,,
४ दुपेची खिरकीदार पाग धरैं तब
५ केशरी पाग, बागा धरैं तब
६ पाग धरैं तब
७ घटा होय तब
८ सेहरा धरैं तब
९ मोरचन्द्रिका धरैं तब
१० वर्षा में
११ सफेद जरी की पाग पर मोरचन्द्रिका धरैं तब

नोट—इन उत्सवन के पदन की सूची में उत्सवन की पृष्ठ-संख्या दीनी है। सो वाके अनुसार उत्सवन के दिन निकाल लेने।

नित्य की प्रणाली

प्रथम श्री ठाकुर जी जागे तब नित्य श्री महाप्रभु जी को एक पद, और श्रीगुसांई जी को एक पद, ऐसे दो बिनती के पद गावने। पीछे एक जागवे को, और दो कलेवा के, एक जमुना जी को, और एक खंडिता को ऋतु अनुसार गावनो।

बाल लीला और बधाई के दिन खंडिता को पद नहीं गवे।

मंगल भोग सरे 'मंगल मंगलं ब्रज भुवि मंगलं' गावनो। मंगला के दर्शन में, शृंगार समय, और शृंगार के दर्शन में ऋतु अनुसार पद गावने।

ग्वाल बोले धैया के पद गावने। बधाई के दिन होय तो बधाई। बसंत धमार के दिन होय तो वाके कीर्तन गावने। ग्वाल के दर्शन मे एक पलना सदा गवे।

राजभोग आये ऋतु अनुसार [सीतकाल में घर भोजन के, ब्रजभक्तन के घर भोजन के, उष्णकाल में छाक के चार गावने, ऐसे ही वर्षा में वर्षा की छाक के, बधाई के दिन में बड़ी होय तो एक बधाई, छोटी होय तो चार गवे। ऐसे ही वसंत और धमार में बसंत-धमार चार गवे छोटी होय तो] राजभोग सरे अचवायवे को एक पद गावनो तथा एक बीरी को पद गावनो।

राजभोग दर्शन में, भोग दर्शन में और संध्या के दर्शन में ऋतु अनुसार।

साँझ कों ग्वाल बोले दो पद धैया के, बधाई के दिन में बधाई, बसंत धमार में बसंत धमार।

शयन भोग आये दो पद ब्यारू के, दूसरे भोग में एक पद दूध को। शयन के दर्शन में एक पद ऋतु अनुसार। पोढवे में मान को और एक पोढवे को, ऐसे दो कीर्तन गावने। आश्रय के दो तामें एक श्रीमहाप्रभु जी को और एक श्रीगुसांई जी को गावनो।

[नित्य सेवा के कीर्तनों के लिये देखो समयानुसार कीर्तनों की संख्या-सूची]

❀ नित्य-सेवा के ऋतु-समयानुसार के पद–कीर्तनन की संख्या–सूची× ❀

(१) जगावे के समय श्रीमहाप्रभुजी की विनती के—१, २, ८५७ इत्यादि।

(२) श्री ठाकुरजी के जगावे के ३, ७३२, ७७०, ८०३, ११९४*, ११९५* इत्यादि।

(३) कलेऊ के—४, ४८६, ११९६* इत्यादि।

(४) श्रीयमुनाजी के—५, ९३५, ९४० से ९६१ इत्यादि

(५) खंडिता के—४६२, ४६४ से ४६८ ८९२†,८९३†, ९६२, १००८* इत्यादि।

(६) मंगल भोगसरवे के—८, इत्यादि।

(७) मंगला दर्शन के—४६३,४६९‡,७३३,७४४†,७७१†, ८०४†, ८७३†, ९२२†,९२३†, १००८*,१०२८*, १०५०*, १०७४* इत्यादि।

(८) शृंगार ओसरा (समय) के—२३५$, २३६$, ३५७, ३५८, ५२४‡, ५२५‡, ७४५, ७४६, ७६७$, ७७३† से ७७५†, ८०५† से ८८७†, ८५४†, ८७५†, ८७६$, ८७७, ८९२†, ८९३†, ९२४†, ९२५†, १०२०*, १०२१*, १०२९*, १०३०*, १०६३*, १०६६* इत्यादि।

(९) शृंगार दर्शन के—७६८, ७४७,७६४,७७८, ७७९, ९०८†, ९२६†, ९६२†, ९८०, १०१३*, १०२२*, १०३१*, १०६७*, ११०४* इत्यादि।

(१०) ग्वाल समे के—१६४, ५०३ (उरहाने तथा खेल के) घैया के—१२०९।

(११) पलना के—५१, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१.

(१२) राजभोग आये—

‡ घर भोजन के—३६३, ४१४ से ४१७, ५३५, ५३६ से ५३९.

‡ ब्रज-भक्तन के घर भोजन के—३६२, ३६४, ३६५ इत्यादि।

† छाक के—१७९ से १८१, ३८४ से ३८९, ६०९ से ६१३.

* छाक के—११९७ से १२०० इत्यादि।

(१३) राजभोग सरे अचवायवे के-३६६, ३९०,१२०१.

(१४) बीरी के—३६७†, ३९१†, ५३९, ८७९†, १२०२* इत्यादि।

(१५) माला के—७६५ इत्यादि।

(१६) राजभोग दर्शन के—१६३‡, ४६८‡, ७४०†, ७४८†, ७४९†, ७५०†, १००७*, १०१३*, १०३२*, १०३३*, १०८०* इत्यादि।

(१७) भोग के दर्शन के—१६५, ३९३ से ३९६, ७६७.

(१८) संध्या के—१६६, ३९६,३९७,४०४, ४२०, ७६८, १००३*,१०३५*, १०४१* इत्यादि।

(१९) सांझ की घैया के—१२१०.

(२०) शयन भोग आये—३९८ इत्यादि।

(२१) दूसरे भोग के—८९० इत्यादि।

(२२) शयन दर्शन—४२१, ४२८, ४३२† से ४३५, ४३९, ४४०‡ से ४४५‡, ४५४, ७५३, ७५५, ७६८ आदि।

(२३) मान के—२७७, ३१३,४०५, ४४१, ४४२, ४४७, ४४८, ४५२, ४५७, ५१०, ९२०, ९३४.

(२४) पोढवे के—९८, १०४, १५०, २७८, ३१४,३२०, ३२१, ४०६, ४९३‡, ५११, ५३१‡, ५३२‡, ५३३‡, ७५६, ८०१, ८९६, ९२१.

(२५) आश्रय माहात्म्य आदि के—१५६, १५७, ४२२, १२०५ इत्यादि।

❋ विशेष समय के ❋

(२६) व्रतचर्या के—१२०३, १२०४.

(२७) लालितमालकोस के—५`३ से ५`६ तक।

(२८) पनघट के—९२४ से ९३३, ९७२ इत्यादि।

(२९) फूलमंडली के—७४१, ७८९ इत्यादि।

(३०) फूल के शृंगार के—९७२, ९७३ इत्यादि।

(३१) खसखाने के—९६९, ९७०, ९७१ इत्यादि।

(३२) नाव के—९१७, ९१८ इत्यादि।

(३३) जलविहार के—९६३ से ९६६ इत्यादि।

(३४) मल्हार के—१००३, १००४, १०१४, १०३८, १०४६, १०४९ इत्यादि।

(३५) मुरली के—९८० इत्यादि।

(३६) सांझी के—१२०६ से १२०८ तक।

(३७) हिलग के—४४०, ११६८, ११७८ आदि।

पाग, फेंटा, दुमाला, पगा, कुल्हे, सेहरा, टिपारा, मुकुट, धोती, पिछौरा आदि शृंगारन के विविध समय के तथा घटान के पद 'उत्सवन के पदन की सूची' में सूं निकासि लेने। —संपादक

× बिना चिह्न वाले बारहो मास गायवे के। * इस चिह्न वाले वर्षाऋतु के। ‡ सीतकाल के। † उष्णकाल के।
$ अभ्यंग होय तब के।

विशिष्ट पदन की—

❀ तिथि-समय की सूची ❀

(१) जन्माष्टमी की बधाई*—श्रावण कृष्ण ४ से भाद्र कृष्ण ८ तक सब समय में
(२) श्री राधाष्टमी की बधाई—भादों सुदी १ से भादों सुदी ८ तक ,,
(३) दान एकादशी के पद—भादों सुदी ११ से आश्विन वदी ३० तक ,,
(४) साँझी के पद—आश्विन कृष्ण १ से ,, ३० तक भोग संध्या में
(५) नवरात्रि के पद—[विलास] आश्विन सुदी १ से ९ तक शृंगार में
(६) अन्नकूट के पद—दशहरा से अन्नकूट [आ. सु. १० तें का. सु. १ तक] सब समय में
(७) गोवर्द्धन लीला इंद्र मान भंग के पद—कार्तिक सुदी ७ तक ,,
(८) व्रतचर्या के पद—मार्गशीर्ष वदी १ से मार्गशीर्ष सुदी १५ तक मंगला शृंगार में
(९) खंडिता में, ललित मालकोस के पद—पौष में मङ्गला शृङ्गार में
(१०) पनघट में, राग टोडी के पद—मार्गशीर्ष बदी १ से पौष तक राजभोग में
(११) हिलग के, धनाश्री, आसावरी टोडी राग के — ,, ,,
(१२) श्री गुसांई जी की बधाई—मार्गशीर्ष सुदी ७ से पौषकृष्ण ९ तक सब समय में
(१३) वसंत धमार के पद—वसंत पंचमी से डोल तक सब समय में
(१४) फूल मण्डली के कुंज के पद—चैत्र कृष्ण २ से राजभोग में,
(१५) श्री महाप्रभु जी की बधाई—चैत्र शुक्ल ११ से बैसाख कृष्ण ११ तक सब समय में,
(१६) खंडिता में सुहा, सुघराई राग के पद—स्नान यात्रा सुं रथयात्रा तक
(१७) पनघट में, सारंग के पद—जेठ सुदी १ से १५ तक राजभोग में
(१८) पनघट में, राग बिलावल के—जेठ सुदी ११ सू १५ तक शृंगार में,
(१९) राजभोग में गौड सारंग के पद—स्नान यात्रा सूं रथयात्रा तक।
(२०) भोग में, सारंग राग के—अक्षय तृतीया सूं स्नान यात्रा तक।
(२१) भोग में सोरठ राग के—स्नान यात्रा सूं रथयात्रा तक।
(२२) संध्यार्ति में हमीर राग के—अक्षय तृतीया सू स्नान यात्रा तक।
,, ,, सोरठ राग के—स्नान यात्रा सूं रथयात्रा तक।
(२३) मल्हार के पद—रथयात्रा सूं आरंभ।
(२४) हिंडोरा श्रावण कृष्ण १ से भाद्र कृष्ण १ तक। संध्या में अथवा संध्यार्ति पीछे।

---

*प्रत्येक उत्सव की बधाई के पूर्ण होने पर बाललीला गवें।
बधाई के दिनन में जो विशेष उत्सव आवे वाके पद प्रणाली अनुसार गवें।

❀ श्रीद्वारकेशो जयति ❀

तृतीय गृह की कीर्तन प्रणालिका

उत्सवन के पदन की सूची

❀ भाद्र-कृष्णा ८ (जन्माष्टमी) ❀

पद-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
१	श्रीवल्लभ २ गुन गाऊँ०	१
२	जय २ श्रीवल्लभ प्रभु०	१
३	जागिये व्रजराजकुँवर०	१
४	छगन मगन प्यारेलाल०	१
५	जय २ श्रीसूरजा कलिन्द०	२
६	आज बड़ो दरबार देख्यो०	२
७	माइ सोहिलरा आज नन्द०	२
	मंगल भोग सरे ।	
८	मंगल मंगलं व्रज भुवि०	२
	मंगला दर्शन ।	
९	नैन भर देखो नंदकुमार०	३
	पंचामृत दर्शन ।	
१०	व्रज भयो महरि के पूत०	३
	अभ्यंग समय ।	
११	आपुन मंगल गावे०	५
१२	मिलि मंगल गाओ माइ०	५
	तिलक के दर्शन । (राग सारंग की आलापचारी)	
१३	आज बधाई को दिन नीको०	५
१४	जसोदारानी जायो हो सुत नीको०	५
	गोपी-वल्लभ आये ।	
१५	आज बन कोऊ वे जिनि जाय०	५
१६	यह सुख देखो री तुम०	६
१७	जनम फल मानत जसोदा०	६
१८	झगरिन तें हौं बहोत०	६
१९	जसोदा नाल न छेदन देहौं	६
	राजभोग आये (ढाढ़ी)	
२०	हौं व्रज माँगनो जू०	६
२१	नंदजू मेरे मन आनंद०	७
२२	नंदजू तिहारे सुख दुख०	७
२३	व्रजपति माँगिये जू०	८
	राजभोग दर्शन ।	
२४	(ए हो ए) आज नंदराय के०	८
	भोग के दर्शन । तमूरा सूँ (राग पूरवी)	
२५	रानी जू जायो पूत सुलच्छन०	९
२६	कन्हैया कब चलि है०	९
	संध्या-समय	
२७	मेरे मन आनंद भयो०	९
	सेन के दर्शन । (झाँझ-पखावज सूँ राग मालव की अलाप)	
२८	मोहन नंदराय कुमार०	९
२९	पद्म धरयो जन ताप०	९
	जागरण के दर्शन ।	
३०	धन रानी जसुमति गृह०	१०

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
३१ गावत गोपी मधु मृदु० १०
३२ प्यारे हरि को विमल जस० १०
३३ यह धन धर्म ही ते पायो० १०
३४ एसो पूत देवकी जायो० ११
३५ हरि जन्मत ही आनंद भयो० ११
३६ आनंद बधावनो० ... ११
३७ जन्म लियो सुभ लग्न० १२
३८ रंग बधावनो हो व्रज में० १२
३९ आज तो आनंद माइ आज तो० १२
४० भादों की अति रेन अँधियारी० १२
४१ अँधियारी भादों की रात० १२
४२ आठें भादों की अँधियारी० १२
४३ भादों की रात अँधियारी० १३
४४ श्रवन सुन सजनी बाजे मंदिलरा० १३
४५ रावरे के कहें गोप० ... १४
४६ जसोदे बधाइयाँ० ... १४
४७ श्रीगोपाललाल गोकुल चले० १४

जन्म-समय।

... व्रज भयो महरि के पूत० (पद-सं. १०)

छट्ठी पूजन-समय।

४८ आज छठी जसुमति के सुत की० १४
४९ मंगल घोस छठी को आयो० १५

महाभोग के दर्शन। (तमूरा सूँ)

५० ललना हों वारी तेरे या मुख पर० १५

पलना खुले पहले टीकेत गावे।

... मंगल मंगलं व्रज भुवि० (पद-सं. ८)
५१ प्रेंख पर्यंक शयनं० ... १५

पदसंख्या पद-प्रतीक पृष्ठसंख्या

नंदमहोत्सव के दर्शन।

(राग सारंग की आलापचारी)

... (ए हो ए) आज नंदराय के० (पद-सं. २४)
५२ सब ग्वाल नाचे गोपी गावे० १६
५३ आँगन नंद के दधिकादो० १६
५४ नंदजू तिहारे आयो पूत० १६
५५ नंद बधाई दीजे हों० ... १६
५६ आज महामंगल महराने० १६
५७ घर-घर ग्वाल देत हैं हेरी० १७
५८ नंदमहोत्सव हो बड़ कीजे० १७
५९ तुम जो मनावत सोइ दिन आयो० १७

बैठ के गावनो।

... जसोदारानी जायो हो सुत० (पद-सं. १४)
६० जसोदारानी सोवन फूलन फूली० १७
६१ रानी तेरो चिरजीयो गोपाल० १७
६२ बधाई माइ आज० ... १८
६३ बाला मैं जोगी जस गाया० १८
६४ झूलो पालने गोविंद० (पलना) १९
६५ अपने बाल गोपाले० ... १९
६६ नंद को लाल व्रज पालने० १९
६७ हालरो हुलरावत माता० ... १९
६८ माइ री कमलनैन स्याम० २०
६९ फूली चायन हुलरावे० ... २०
७० वारी मेरे लटकन पग० ... २०
७१ तुम व्रजरानी के लाला० २०

आरती समय।

७२ जसुमति तिहारो घर सुबस बसो० २१

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

(ढाढ़ी ठाढ़े होय के नंदरायजी कूँ संग ठाढ़े राख के गावे) ।

··· नंदजू मेरे मन आनंद भयो० (पद-सं.२१)
··· हों व्रज माँगनो जू० (,, २०)
··· नंदजू तिहारे सुख दुख० (,, २२)

धीरे-धीरे चलनो०

··· व्रजपति माँगिये जू० (पद-सं. २३)

(भये पुरंदर चले पुरन की यातुक सूँ, जगमोहन मे पधारे तब०)

जगमोहन के बाहर आय के० ।

'व्रजभयो' में से 'मिल निकसी है देत असीस' बैठक में आयके पूरो करनो । फेर—

७३ गह्यो नंद सब गोपिन० २१

भाद्र कृ० ६ (श्रीव्रजभूषणजी महाराज को उत्सव)

मंगल आरती ।

७४ आज बधाई मंगलचार० २२

राजभोग आये ।

७५ श्रीलछमन गृह महामंगल भयो० २२
७६ सुभ वैसाख कृष्ण एकादशी० २२
७७ जे वसुदेव किये पूरन तप० २२
७८ श्रीवल्लभनन्दन रूप अनूप० २२

भोगसरे ।

७९ गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ० २२

राजभोग दर्शन ।

८० जब मेरो मोहन चलेगो० २३

आरती समय ।

··· आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं.१३)

भोग के दर्शन ।

८१ जो पे श्रीविट्ठल रूप न धरते० २३
८२ नांतर लीला होती जूनी० २३

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय ।

··· मेरे मन आनंद भयो० (पद-सं. २७)

शयन भोग आये ।

८३ भक्तिसुधा बरखत ही प्रगटे० २३
८४ श्रीलछमन गृह प्रगट भये हैं० २३
८५ श्रीवल्लभलाल के गुन गाऊँ० २३
८६ आज धन भाग्य हमारे० २४

भोगसरे ।

८७ गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण० २४

शयन के दर्शन ।

··· यह धन धर्म हीं ते पायो० (पद-सं.३३)
··· जसुमति तिहारो घर सुबस० (पद-सं.७२)

पोढवे में ।

८८ कुंजभवन आज मंगल है री २४
८९ कुंज भवन में पौढ़े दोऊ० २४

भाद्र कृ० १० मंगला दर्शन ।

९० जा दिन कन्हैया मोसों मैया० २४

शृंगार समय ।

९१ सोभित कर नवनीत लिये० २५
९२ व्रज की रीत अनोखी री माई० २५
··· बाला मैं जोगी जस गाया० (पद-स.६३)

शृंगार दर्शन ।

९३ आज प्रात ही तुतरात० २५

राजभोग आये, भोजन के कीर्तन ।

राजभोग दर्शन ।

··· नंदजू मेरे मन आनंद भयो (पद-सं.२१)
९४ आँगन खेलिये झनक-मनक० २५

भोग के दर्शन ।

९५ दुहूँकर फोंदना मुख मेलत० २५

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय।
९६ काहु जोगिया की नजर० २६
शयन भोग आये ब्यारू के कीर्तन।
शयन दर्शन।
९७ चलो मेरे लाडिले हो० २६
पोंढवे में।
९८ सोवत नींद आय गई स्यामे० २६
भाद्र कृ० १३ छट्ठी को पलना।
मंगला दर्शन।
९९ सखीरी नंदनंदन देख० २६
शृंगार समय।
··· बाला मैं जोगी जस गाया०(पद-सं.९३)
१०० जसोदा अपनो लाल खिलावे० २६
शृंगार दर्शन।
१०१ आये सो आँगन बोले माइ जसोदा० २७
राजभोग आये, भोजन के कीर्तन।
राजभोग दर्शन।
१०२ क्रीडत मनिमय आँगन रंग० २७
भोग के दर्शन।
१०३ सोहत स्याम तन पीत झगुलिया० २७
संध्या समय।
··· काहु जोगिया की० (पद-सं. ९६)
शयनभोग आये, ब्यारू के कीर्तन।
शयन दर्शन।
··· चलो मेरे लाडिले हो० (पद-सं. ९७)
पोंढवे में।
१०४ अहो मेरे लाडिले नींद करो० २७
भाद्र कृ० १४ (श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई आश्विन कृ० ६ समान)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

भाद्र शु० १ (राधाष्टमी की बधाई)
मंगला मे—श्रीठाकुरजी की बाललीला
शृंगार समय।
१०५ जनम बधाई कुँवरि लली की० २८
१०६ आज बधाई है बरसाने० २८
१०७ बाजत रावल माँझ बधाई० २९
१०८ आज रावल में जय-जयकार० २९
राजभोग आये।
१०९ जनम लियो वृषभान गोप के बैठे सब सिंहद्वार री० २९
११० बरसाने वृषभान गोप के आनंद की निधि आई जू० ३०
राजभोग दर्शन।
१११ आज वृषभान के आनंद० ३१
भोग के दर्शन।
११२ प्रगट्यो सब ब्रज को शृङ्गार० ३१
११३ आज बधाई की विधि नीकी० ३१
संध्याभोग आये।
११४ आज बरसाने बजत बधाई० ३१
संध्या समय।
११५ हों तो फूली अंग न समाऊं मेरे मन० ३१
शयन भोग आये।
११६ बजत वृषभान के परम बधाई० ३२
११७ माइ प्रगटी कुँवरि वृषभान के० ३२
११८ जबते राधा भूतल प्रगटी० ३२
११९ रावल आज कुलाहल माई० ३२
शयन दर्शन।
१२० रावल राधा प्रकट भई। अब भज० ३३

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

पोढवे मे।

··· धन रानी जसुमति गृह० (पद-सं. ३०)

भाद्र० शु० २ (श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव)

आश्विन कृ० १३ समान।

भाद्र० शु० ५ (श्रीचन्द्रावलीजी को उत्सव)

मंगला दर्शन।

१२१ प्रगटी नागरी रूपनिधान० ३३

शृंगार समय।

१२२ श्रीवृषभानके हो आँगन मंगल भीर० ३३

शृंगार दर्शन।

१२३ बाजे बाजे मंदिलरा वृखभान नृपति०३५

राजभोग आये।

१२४ महारस पूरन प्रगट्यो आन० ३५

राजभोग दर्शन।

··· आज वृखभान के आनंद (पद-सं. १११)
१२५ आज चन्द्रभान के बधाई० ३५
१२६ आठें भादों की उजियारी ३६

भोग के दर्शन।

··· प्रगट्यो सब ब्रज को शृंगार (पद-सं. ११२)
··· आज बधाईकी विधि नीकी० (पद-सं. ११३)

संध्या समय।

··· होंतों फूली अंग न समाउं०(पद-सं. ११५)

शेष क्रम भाद्र० शु० १ के समान
विशेष मे भादों की उजियारी गवे।

भाद्र० शु० ७ भोग के दर्शन।

१२७ मुदित निशान बजाबही० ३६

संध्या समय।

१२८ ढाढिन नृत्यत सुलप सुदेश० ३६

शयन भोग आये।

१२९ आज छठी की रात द्योस० ३६
१३० आज बहुत वृषभान घोष मे० ३६
१३१ फूलि फूलि वृषभान गोप ने० ३७

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

१३२ आदर के वृषभान सबन कों० ३७

शयन भोग सरे।

१३३ सकल भुवन की सुंदरता० ३७
१३४ प्रगट भई सोभा त्रिभुवन की० ३७

शयब दर्शन।

१३५ धनि धनि प्रभावती जिन'जाईऐसीबेटी३ ८
··· आठे भादों की उजियारी० (पद-सं. १२६)

भाद्र० शु० ८ (राधाष्टमी)

श्री के जागवे सूँ झाँझ-पखावज सॅ कीर्तन होय

मंगला दर्शन।

··· प्रगटी नागरी रूपनिधान० [पद-सं. १२१]

शृंगार समय।

··· जनम बधाई कुँवरि ललीकी० [पद-सं. १०५]
··· आज बधाई है बरसाने० [पद-सं. १०६]
··· बाजत रावल माँझ बधाई० [पद-सं. १०७]
··· आज रावल में जयजयकार० [पद-सं. १०८]
··· जनम लियो वृषभान गोपके० [पद-सं. १०९]

शृंगार दर्शन।

···बाजे बाजे मंदिलरा० [पद-सं. १२३]

राजभोग आये।

१३६ आनंद आज भवन वृषभान के ३८
१३७ चलो वृषभान गोप के द्वार० ३८
··· महारस पूरन प्रगट्यो आन० [पद-सं. १२४]
१३८ राधेजू सोभा प्रगट भई० ३८
१३९ रावल राधा प्रगट भई। श्रीवृषभान० ३८
१४० आज वृषभान के घर फूल० ३८
१४१ महरजू दीजे मोहि बधाई० ३९
१४२ चलचल ढाढी बिलम न कीजे० ३९
१४३ नंदराय को ढाढी आयो वृषभान० ३९
१४४ कुँवरी प्रगटी जान गावत ढाढी० ३९

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राजभोग दर्शन ।

··· आज वृषभान के आनंद० [पद-सं. १११]

आरती पीछे भीतर तिलक होय तब ।

१४५ राधा जू को जन्म भयो सुन माइ ४०

भोग के दर्शन ।

··· प्रगट्यो सब व्रज को शृंगार०(पद-सं.११२)
··· आज वधाई की विधि नीकी०[पद-सं.११३]

ढाढी आवे तब ।

१४६ जदुबंसी'जजमान तिहारो ढाढी आयो० ४०

संध्या समय ।

··· मेरे मन आनंद भयो० [पद-सं. २७]

शयन भोग आये ।

··· माइ प्रगटी कुँवरि वृषभानके [पद-सं.११७]
१४७ आज वृषभान के बेटी जाइ० ४०
··· बजत वृषभान के परम बधाई. [पद-सं.११६]
··· रावल राधा प्रगट भइ० (पद-सं. १२०)
··· प्रगट भई शोभा त्रिभुवन की० [पद-सं.१३४]
··· सकल भुवन की सुन्दरता० [पद-सं.१३३]
१४८ भादों सुद आठें उजियारी ४०
··· आठें भादों की उजियारी० [पद-सं. १२६]
१४९ श्रीवृषभानरायजू के आँगन बाजत ४१

पोढवे मे उत्सव के ।

भाद्र० शु० ६ (श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव)

मंगला दर्शन

··· आज बधाई मंगलचार. [पद-सं. ७४]

शृंगार समय ।

१५० बहुरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटे० ४१
१५१ प्रगटे श्रीवल्लभ निज नाथ० ४१

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
१५२ चहुँजुग वेद वचन प्रतिपारयो० ४१
१५३ अबके द्विजवर ह्वै सुख दीनो० ४२
१५४ जय श्रीलच्मण सुवन नरेश० ४२

राजभोग आये ।

··· श्रीलच्मण गृह महामंगल भयो०[पद-सं.७५]
··· सुभ बैसाख कृष्ण एकादशी० [पद-सं.७६]
··· जे वसुदेव किये पूरन तप० [पद-सं. ७७]
···श्रीवल्लभनंदन रूप अनूप स्वरूप०[पद-सं.७८]

भोगसरे ।

··· गोवल्लभ गोवर्धनवल्लभ० [पद-सं.७९]

राजभोग दर्शन ।

··· आज बधाई को दिन नीको० [पद-सं.१३]

भोग के दर्शन ।

··· जो पे श्रीबिट्ठल रूप न धरते० (पद-सं.८१)
··· नातर लीला होती जूनी० [पद-सं. ८२]

संध्या भोग आये ।

१५५ कृपासिंधु श्री विट्ठलनाथ० ४२

संध्या समय ।

१५६ हौं चरनात पत्र की छैया० ४२

शयन भोय आये ।

··· भक्तिसुधा बरखत ही प्रगटे० [पद-सं.८३]
··· श्रीलच्मणगृह प्रगट भये हैं० [पद-सं.८४]
१५७ श्रीविट्ठलनाथ बसत जिय जाके० ४२

शयन भोग सरे ।

··· गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण. (पद-सं.८७)

शयन दर्शन ।

··· आज धनि भाग्य हमारे० (पद-सं. ८६)
१५८ श्रीगोकुल जुग-जुग राज करो० ४२

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

पोढवे में उत्सव के पद ।

भाद्र० शु० १० मंगला दर्शन ।

१५९ कुँवरि राधिके तुव सकल सौभाग्य० ४३

शृंगार समय ।

१६० अहो मेरी प्रानप्यारी० ४३
१६१ हित की बात कहत है मैया० ४४

राजभोग आये ।

१६२ खेलन गइ नंदबाबा के महर गोद० ४५

राजभोग दर्शन ।

१६३ कहा जु भयो मुख मोरे काहू कछू० ४७

भोग के दर्शन ।

१६४ तू नेक बरज री जसोदा मैया० ४७
१६५ रूप देखि नैना पलक लगे नहिं० ४७

संध्या समय ।

१६६ अहो विधना तोपे अचरा पसार० ४७

शयन भोग आये ।

१६७ यह दुलरी वृषभान लई कब० ४७
१६८ जसोदा तब गोपाल बुलायो० ४७

शयन दर्शन ।

१६९ गूजरिया गर्व गहेली० ४८

पोढवे में ।

१७० जसुमति सुत पलका पोढावे० ४८

भाद्र० शु० ११ (दान एकादशी)

मंगला दर्शन ।

१७१ हमारो दान देहो गुजरेटी० ४८

शृङ्गार-समय (झाँझ पखावज)

१७२ कहो किन कीनों दान दही को० ४८
१७३ पिछोरी बांहन दे हे दान० ४८
१७४ माधोजू जान देहो चली बाट० ४९

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

१७५ मटुकी आन उतार धरी० ४९
१७६ कैसो दान दानी को० ४९
१७७ गोवर्धन की सिखर ते हो० ४९

शृंगार दर्शन ।

१७८ कहो जू कैसो दान माँगिये हम० ५१

राजभोग आये ।

१७९ दानघाटी छाक आइ० ५२
१८० आगे आव री छकहारी० ५२
१८१ आज दधि मीठो मदनगोपाल० ५२
१८२ लालन छाँडो हो बरआइ० ५२
१८३ कृपा अवलोकन दान दे री० ५२
१८४ यमुनाघाट रोकी हो रसिक० ५३

राजभोग दर्शन ।

१८५ चलन न देत हो यह बटिया० ५३

भोग के दर्शन ।

१८६ ये कौन प्रकृति तिहारी हो ललना० ५३
१८७ आज वृन्दावन में दधि लूटी० ५३

संध्याभोग आये ।

१८८ कहो जू दान बहो लैहो कैसे० ५३

संध्या समय ।

१८९ ए तुम चले जाओ ढोटा अपने० ५३

शयनभोग आये ।

१९० घेरो घेरो ब्रजनारी० ५४
१९१ दधि न बेचिये हमारे कुल० ५४
१९२ कुँवर कान्ह छाँडो हो० ५४
१९३ गिरिधर कौन प्रकृति तिहारी० ५४

भोग सरे ।

१९४ अहो ब्रजराज राइ० ५४

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शयन दर्शन।

१९५ कापर ढोटा नैन नचावत० ५५
१९६ दान माँगत ही मैं आन कछु० ५५

मान में।

१९७ नवल निकुंज नवल मृगनैनी० ५५

पोढवे में

१९८ पोढे पिय मदनमोहन श्याम० ५५

भाद्र० शु० १२ (श्रीवामनजयंती)

जन्म के पंचामृत समय-राग धनाश्री

१९९ प्रगटे श्रीवामन अवतार० ५६

उत्सव भोग आये।

२०० वलि के द्वारे ठाडे वामन ५६
२०१ राजा एक पंडित पौरि तिहारी० ५६
२०२ मेरे क्यों आये बिप्र वामन० ५७

समय होय तो और गावने

राजभोग आरती।

··· कृपा अवलोकन दान दे री० (पद-सं.१८३)

भाद्र० शु० १३ राजभोग दर्शन।

२०३ वलि वामन हो जग पावन करन० ५७

और एक दान को कीर्तन

भोग के दर्शन।

२०४ ऐसो दान न माँगिये हो प्यारे० ५७

भाद्र० शु० १४ भोग के दर्शन।

२०५ श्रीवृंदाविपिन सुहावनो० ५७

भाद्र० शु० १५ मंगला दर्शन

··· हमारो दान देहो गुजरेटी (पद-सं.१७१)

शृंगार समय।

··· गोवर्धन की सिखर ते हो० (पद-सं.१७७)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शृंगार दर्शन।

··· कहो जू कैसो दान माँगिये० (पद-सं.१७८)

राजभोग आये, छाक के कीर्तन।

राजभोग दर्शन।

२०६ ए तुम पैंडोइ रोके रहत० ५९

भोग के दर्शन

··· ऐसो दान न माँगिये हो० (पद-सं. २०४)

संध्या समय।

··· अहो विधिना तोपे अचरा (पद-सं. १६६)

शयन दर्शन।

··· कुंवर कान्ह छाँडो हो ऐपी (पद सं. १९२)

मान० पोढवे में।

··· नवल निकुंज नवल मृगनैनी०(पद-सं.१९७)
२०७ पढिये लाल लाडिली संग ले ५९

आश्विन कृ० १ आज सूँ आश्विन कृ० ३०
तक भोग तथा संध्या समय साँझी के कीर्तन
और समय में दान के कीर्तन।

आश्विन कृ० ६ (श्रीबालकृष्णजी के उत्सव की बधाई)

मंगला दर्शन।

··· आज बधाई मंगलचार० (पद-सं. ७४)

शृंगार समय।

··· व्रज भयो महरि के पूत० (पद-सं. १०)
··· बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल० (पद-सं१५०)
··· प्रगटे श्रीवल्लभ निज नाथ (पद-सं. १५१)
···चहुँजुग वेद वचन प्रतिपारयो०(पद-सं.१५२)
··· जय श्रीलक्ष्मणसुवन नरेश० (पद-सं१५४)
२०८ जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने ६०

सर्वोत्तम की ३५ तुक गावनी।

२०९ जो पे श्रीविट्ठलनाथहि गावें ६२

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

नामरत्न, की बधाई की ३५ तुक गावनी ।

शृंगार दर्शन ।

··· यह सुख देखो री तुम माइ० (पद-सं.१६)

राजभोग आये ।

··· बधाइ माइ आज० (पद-सं.६२)

सर्वोत्तम और नामरत्न की बधाई ।
छेल्ली तुक राख के गावनी ।

राजभोग दर्शन ।

··· (एहो ए) आज नंदराय के० (पद-सं.२४)

सर्वो० नाम० की छेल्ली तुक ।

भोग के दर्शन ।

२१० सब मिल गाओ गीत बधाई० ६५

संध्या समय ।

··· मेरे मन आनंद भयो० (पद-सं २७)

शयन भोग आये ।

··· गावत गोपी मधु मृदु० (पद-सं.३१)
··· प्यारे हरि को विमल यस० (पद-सं.३२)
··· श्रीलछमणगृह प्रगट भये हैं० (पद-सं.८४)
··· श्रीवल्लभलाल के गुन गाऊँ० (पद-सं.८५)

शयन भोग सरे ।

··· गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण० (पद-सं.८७)

शयन दर्शन ।

··· यह धन धर्म ही ते पायो (पद-सं.३३)
··· धन रानी जसुमति गृह० (पद-सं.३०)

आश्विन कृ० १२ (श्रीगोपीनाथजी को उत्सव)

भाद्र० शु० ९ के समान ।

आश्विन कृ० १३ (श्रीबालकृष्णजी को उत्सव)

श्री के जागवे सूँ झाँझ पखावज बजे,
जागवे में ।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

··· श्रीवल्लभ ३ गुन गाऊँ० (पद-सं. १)
··· जय २ श्रीवल्लभ प्रभु० (पद-सं. २)
··· जागिये व्रजराजकुँवर० (पद-सं. ३)
··· छगन मगन प्यारे लाल० (पद-सं. ४)
··· जय २ श्रीसूरजा कलिन्द० (पद-सं. ५)
··· आज बड़ो दरबार० (पद सं. ६)
··· माइ सोहिलरा आज नन्द० (पद-सं. ७)

भोगसरे ।

··· मंगल मंगलं व्रज भुवि० (पद-सं.८)

मंगला दर्शन ।

··· नैन भरि देखो नंदकुमार० (पद-सं. ९)

शृंगार समय ।

··· व्रज भयो महरि के पूत० (पद-सं.१०)
··· बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल० (पद-सं.१५०)
··· प्रगटे श्रीवल्लभ निज नाथ० (पद-सं.१५१)
··· चहुँजुग वेद वचन प्रतिपारयो०(पद-सं.१५२)
··· जय श्रीलछमणसुवन नरेश०(पद-सं.१५४)
··· जोपे श्रीवल्लभरूप० ३५ तुक (पद-सं.२०८)
··· जोपे श्रीविट्ठलनाथहि० ३५ तुक(पद-सं.२०९)

शृंगार दर्शन ।

··· यह सुख देखो री तुम माइ० (पद-सं.१६)

पादुकाजी कूँ स्नान होय तब ।

··· आपुन मंगल गावे० (पद-सं.११)
··· मिलि मंगल गाओ माइ० (पद-सं.१२)

राजभोग आये ।

२११ मंगल मंगलं अखिल भुवि० ६६
२१२ जयति श्रीभट्ट लछमन तनुज० ६६

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

२१३ प्रगटया एमा श्रीवल्लभदेव० ६६
··· सब ग्वाल नाचे० (पद-सं.५२)
··· श्रीलछमन गृह महामंगल० (पद-सं.७५)
२१४ पोस निर्दोस सुख कोष० ६७
२१५ भूतल महामहोत्सव आज० ६७
··· जसोदारानी सोवन फूलन० (पद-सं.६०)
२१६ बधाई श्रीलछमन राजकुमार० ६७
··· नंद बधाई दीजे हो ग्वालन० (पद-सं.५५)
··· नंदजू तिहारे आयो पूत० (पद-सं.५४)
··· आज महामंगल महराने० (पद-सं.५६)
२१७ प्रगटे श्रीबालकृष्ण सुजान० ६७
२१८ भयो श्रीविट्ठल के मन मोद० ६८

सर्वो० नाम० की छेल्ली तुक राखके गानी

२१९ भयो यह श्रीवल्लभ अवतार० ६८
··· अबके द्विजवर ह्वै सुख० (पद-सं.१५३)
२२० अबके सबही रूप धरचो० ६८
२२१ भाग्यन वल्लभ जनम भयो० ६९
२२२ पोस कृष्ण नौमी को सुभ दिन० ६९
२२३ भाग्यन वल्लभ भूतल आये० ६९
२२४ पुत्र भयो श्रीवल्लभ के गृह० ७०

भोगसरे...पलना ४ ढाढी ५

२२५ श्रीवल्लभलाल पालने झूले० ७०
२२६ अक्का जू ऐसो सुत जायो० ७०
··· माइरी कमलनैन० (पद-सं.६८)
··· तुम व्रजरानी के लाला० (पद-सं.७१)
··· हों व्रज माँगनों जू० (पद-सं.२०)
··· नंदजू मेरे मन आनंद० (पद-सं.२१)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

२२७ तिहारो ढाढी श्रीलछमनराज० ७१
२२८ हों जाचक श्रीवल्लभ तिहारो० ७१
··· नंदजू तिहारे सुख दुख० (पद-सं.२२)

राजभोग दर्शन।

··· (ए हो ए) आज नन्दरायके० (पद-सं.२४)
··· नंदमहोत्सव हो बड़ कींजे० (पद-सं.५८)
··· तुम जो मनावत सोइ दिन० (पद-सं.५९)
··· आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं.१३)

सर्वो० नाम० की छेल्ली तुक।
भोग के दर्शन।

··· सब मिलि गाओ गीत बधाई०(पद-सं.२१०)
··· जोपे श्रीविट्ठल रूप न धरते० (पद-सं.८१)
··· नांतर लीला होती जूनी० (पद-सं.८२)
··· कृपासिंधु श्रीविट्ठलनाथ० (पद-सं.१५५)

संध्या समय।

··· मेरे मन आनंद भयो० (पद-सं.२७)

शयन भोग आये।

··· गावत गोपी मधु मृदु० (पद सं.३१)
··· भक्तिसुधा बरखत ही प्रगटे० (पद-सं.८३)
··· गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण० (पद-सं.८७)
··· श्रीलछमनगृह प्रगट भये हैं० (पद-सं.८४)
··· प्यारे हरि को विमल जस० (पद-सं.३२)
··· श्रीवल्लभलाल के गुन गाऊँ (पद-सं.८५)
२२९ गये पाप ताप दूर देखत० ७२
२३० श्री वल्लभनंदन चंद देखत० ७२
२३१ श्रीविट्ठलनाथ चंद ऊग्यो जगमें० ७२
··· आनंद बधावनो० (पद-सं. ३६)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

··· हरि जन्मत ही आनंद भयो० (पद-सं. ३५)
··· जनम लियो शुभ लगन० (पद-सं. ३७)
२३२ श्रीलक्ष्मणवर ब्रह्म धाम० ७२
२३३ प्रभु श्रीवल्लभगृह जनम लियो० ७२
... श्रीविट्ठलनाथ बसत जिय० (पद-सं. १५७)
··· आज धन भाग हमारे० (पद-सं. ८६)

शयन दर्शन।

··· यह धन धर्म ही ते पायो० (पद-सं. ३३)
··· जसुमति तिहारो घर सुबस० (पद-सं. ७२)

पोढवे मे उत्सव के पद।

आश्विन कृ० १४ बाललीला भाद्र कृ० १० के समान। बिशेष मे दान तथा साँझी, बाललीला ८ दिन तक गावें

आश्विन शु० १ मंगला दर्शन।

२३४ देखो देखो री नागरनट० ७३

शृंगार समय तथा अभ्यंग।

२३५ कर मोदक माखन मिश्री ले० ७३
२३६ कहा ओछी ह्वै जै है जात ७३
२३७ चलहु राधिके सुजान० ७३
२३८ स्यामाजू आज नागरीकिसोर० ७४

शृंगार दर्शन।

२३९ नाचत है नागर बलवीर० ७४
२४० से २४८ शृंगार समय आजसूँ ७४ से ७७

नवमी तक नित एक विलास गावनो।

राजभोग आये छाक के कीर्तन

राजभोग दर्शन।

२४९ बलिहारी रासविहारिन की० ७७
२५० नाचत रास में लाल बिहारी० ७८

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठसंख्या

भोग के दर्शन।

२५१ नागरी नटनारायन गायो० ७८

संध्या समय।

२५२ गोपवधू मंडल मधि० ७८

शयनभोग आये ब्यारू के कीर्तन।

शयन दर्शन।

२५३ गिड गिड थुंग थुंग० ७८

मान पोढवे मे।

२५४ राधिका आज आनंद में डोले० ७८
२५५ दोउ मिल करत भाँवते बतियाँ

जा दिन सूँ शस्त्र धरे, तब भोग के दर्शन में एक दिन।

२५६ बालिनंदन बली बिकट० ७९
२५७ बनचर कोन देस तें आयो ८०

दूसरे दिन।

२५८ अरे बालि के बाल एतो बोल० ८०

संध्या समय भी करखा गवे।

आश्विन शु० १० (दशहरा, अन्नकूट की बधाई)

मंगला दर्शन।

२५९ प्यारी भुज ग्रीवा मेल० ८१

शृंगार समय।

··· कर मोदक माखन मिश्री ले (पद-सं. २३५)
··· कहा ओछी ह्वै जैहै जात० (पद-सं. २३६)

और शृंगार-शस्त्र के कीर्तन।

शृंगार दर्शन।

२६० उलटो झगा उलटी है सूथन० ८१

ग्वाल बोले राग बिलावल की अलापचारी झाँझ पखावज सूँ

२६१ गोकुल को कुलदेवता ८१
२६२ नंदादिक व्रज मिल बैठे ८१

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठसंख्या
२६३ सात बरस को साँवरो० ८२
२६४ बार बार हरि सिखवन लागे ८२
राजभोग आये।
२६५ गोद बैठ गोपाल कहत ब्रजराज० ८२
भोग सरे भीतर तिलक होय तब 'गोद बैठ' या कीर्तन की तुक 'ब्रजरानी कर आरती' गवे।
राजभोग दर्शन।
२६६ गोधन पूजो गोधन गावो० ८७
उत्थापन भोग आये।
··· बालिनंदन बली० (पद-सं.२५६)
··· अरे बालि के बाल० (पद-सं.२५८)
भोग के दर्शन में राग नट की आलापचारी।
जवारा धरें तब।
२६७ आज दशहरा शुभ दिन नीको० ८७
संध्या भोग आये।
२६८ सीतापति सेवक तोहि देखन० ८७
२६९ कपि चल्यो सिय संबोधि के० ८८
समय होय तो और भी करखा गावने।
संध्या भोग आये।
२७० जब कूद्यो हनुमान उदधि० ८८
शयनभोग आये।
२७१ दूसरे कर बान न लैहों ८८
२७२ जिनि मंदोदरी बरजे० ८८
२७३ तब हौं नगर अयोध्या जैहों० ८९
२७४ सो दिन त्रिजटी कहै० ८९
शयन के दर्शन।
२७५ आज रघुपति चढ़े लंक गढ़ लेन० ८९
२७६ जयति जयति श्रीहरिदास० ८९
मान पोढवे मे।
२७७ बेग चल साज दल चतुर चंद्रावली० ९०

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
२७८ चाँपत चरन मोहनलाल० ९०
जा दिन सूँ शस्त्र धरे वा दिन सूँ मान में ये कीर्तन होंय।
२७९ मानगढ़ क्यों हू न टूटत० ९०
२८० आलीरी मानगढ़ करे लिये ९०
··· बेग चल साज दल चतुर (पद-सं.२७७)

आश्विन शु० ११ मंगला दर्शन।

२८१ चोवा में चहल कहाँ गये० ९०
आज सूँ पूनम तांई रास और अन्नकूट के कीर्तन सब समय में भेले ही होय।

आश्विन शु० १३ (छप्पनभोग को उत्सव)

चैत्र कृष्ण १० समान।

आश्विन शु० १५ (शरद को उत्सव)

मंगला दर्शन।
··· देखो देखो री नागरनट० (पद-सं.२३४)
श्रृंगार समय।
··· चलहु राधिके सुजान० (पद-सं. २३७)
··· स्यामाजू आज नागरी० (पद-सं. २३८)
२८२ बन्यो रासमंडल माधो गति में० ९१
श्रृंगार दर्शन।
··· नाचत है नागर बलवीर० (पद-सं.२३९)
२८३ श्रीवृषभाननंदिनी नाचत रासरंग० ९१
राजभोग आये।
२८४ अन्नकूट कोटिक भाँतिन सों० ९१
२८५ देखो री हरि भोजन खात० ९२
भोग सरे।
२८६ आनि और आनि कहत० ९२
अन्नकूट तक नित भोग आये और सरे येही कीर्तन राजभोग दर्शन में।
२८७ बन्यो रासमंडल अहो जुवतिजूथ० ९२

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

··· बलिहारी रासबिहारन की० (पद-सं.२४९)

भोग के दर्शन

२८८ चलिये जू नेक कौतुक देखन० ९२
२८९ उरझी कुंडल लट० ९३

संध्या भोग आये।

२९० रास विलास गहे कर पल्लव० ९३
२९१ ततथेई रासमंडल में बने नाचत० ९३

संध्या समय।

... गोपवधूमंडल मधिनायक० (पद-सं.२५२)

शयन भोग आये।

··· गिड़ गिड़ थुंग थुंग० (पद सं.२५३)
२९२ लाल संग रास रंग० ९३
२९३ रसिकन रस भरे हो नृत्यत रास० ९४
२९४ बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु० ९४
२९५ बंसीबट के निकट हरि रास रच्यौ० ९४
२९६ मंडल मध्य रंगभरे स्यामा,स्याम० ९४
२९७ सुन धुनि मुरली हो बन बाजे० ९५
२९८ अहो रैन रीझी हो प्यारे० ९५

शयन दर्शन, बीरी अरोगे तब तक राग मालव की अलापचारी होय। बेणु धरे तब।

२९९ अलाग लागन उरप तिरप० ९५
३०० पूरी पूरनमासी० ९५
३०१ रास रच्यौ हो श्रीहरि ९६

आरती समय।:

३०२ श्रीवृषभाननंदिनी हो नाचत लालन० ९६

पोढवे में। झाँझ पखावज सूँ

३०३ सरद उजियारी हो कैसी नीकी० ९६
··· दोउ मिल करत भावते० [पद-सं.२५५]

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

कार्तिक कृ० १ मंगला दर्शन।

··· देखो देखो री नागर नट० [पद-सं.२३४]

शयन दर्शन।

३०४ स्याम सजनी सरद रजनी० ९६
··· बन्यो मोरमुकुट० [पद-सं.२९४]

पोंढवे मे। शरद के समान

कार्तिक कृ० २ श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई भाद्र० शु० ९ के समान।

कार्तिक कृ० ५ (गिरिधरलालजी को उत्सव)
(मंगलासूँ राजभोग तक भाद्र शु० ९ के समान)

भोग के दर्शन।

३०५ स्याम खिरक के द्वारे करावत० ९७
३०६ खिरक खिलावत गायन ठाड़े० ९७

संध्या समय।

३०७ खेली बहु खेली गांग बुलाई धूमर० ९७

शयन भोग आये।

३०८ कान जगावन चले कन्हाई० ९७
३०९ आज अमावस दीपमालिका० ९७
३१० आज कुहू की रात है माधो० ९८
३११ आजु दीपत दिव्य दीपमालिका० ९८

शयन दर्शन।

३१२ मानत परव दिवारी को सुख० ९८

मान, पोढवे में।

३१३ तोहि मिलन कों बहुत करत हैं० ९९
३१४ वे देखो बरत झरोखन दीपक० ९९

कार्तिक कृ० ७ (श्रीबालकृष्णलाल जी के गादी बिराजे को उत्सव

मंगला दर्शन

··· आज बधाई मंगलचार० [पद-सं.७४]

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शृंगार समय।

··· बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल० [पद-सं. १५०]
प्रगटे श्रीवल्लभ निजनाथ० [पद-सं. १५१]
··· गोद बैठ गोपाल कहत० [पद-सं.२६५]

राजभोग आये

··· श्रीलक्ष्मण गृह महा० (पद-सं. ७५)
३१५ आज कहा संभ्रम है तिहारे घर तात० ९९
··· भयो श्रीविट्ठल के मन मोद०[पद-सं.२१८]
··· प्रगटे श्रीबालकृष्ण सुजान० (पद-सं.२१७)

राजभोग दर्शन।

३१६ बड़रिन कों आगे दे गिरिधर० १०१
··· आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं.१३)

भोग के दर्शन।

३१७ गाय खिलावत सोभा भारी० १०१

सध्या समय।

३१८ गाय खिलावत मदनगोपाल० १०१

सयन भोग आये।

··· कान जगावन चले कन्हाई (पद-सं.३०८)
··· आज अमावस दीपमालिका० (पद-सं.३०९)
··· आज कुहू की रात है माधो०(पद-सं.३१०)
३१९ जयति व्रजपुर सकल० १०१

शयन दर्शन।

··· आज दीपति दिव्य दीप० (पद-सं. ३११)
··· मानत परव दिवारी को० (पद-सं.३१२)

मान, पोढवे में

३२० राय गिरिधरन संग राधिकारानी० १०२
३२१ स्यामाजू दुलहिनी० १०२

सेहरा धरै तब राजभोग दर्शन।

··· बड़रिन को आगे० (पद-सं.३१६)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

मुकुट धरै तब राजभोग दर्शन।

३२२ गोवर्धन पूजा कर गोविंद० १०२

टिपारो धरे तब।

३२३ मदनगोपाल गोवर्धन पूजत० १०२

कुलह धरे तब राजभोग दर्शन।

३२४ चले री गोपाल गोवर्धन पूजन १०३

भोग समय तिवारी में बिराजें तो
भोग संध्या समय।

··· आज कहा संभ्रम है तिहारे० (पद-सं.३१५)

कार्तिक कृ० १२ राजभोग दर्शन।

३२५ अपने अपने टोल कहत ब्रजवासियाँ १०३

कार्तिक कृ० १३ शृंगार समय।

३२६ आज माई धन धोवत नंदरानी १०५
३२७ जसोदा मदनगोपाल बुलावे० १०५
३२८ प्यारी अपनो धन जु सँवारे० १०५
३२९ धनतेरस दिन अति सुखदाई १०५

कातिक कृ० १४ (रूप चतुर्दशी)

अभ्यंग समय।

३३० न्हात वलकुँवर कुँवर गिरिधारी० १०५
३३१ न्हात वलदाऊ कुँवर कन्हाई० १०५
३३२ न्हवावत सुत कों नंदरानी० १०६
३३३ आज न्हाओ मेरे कुँवर कन्हाई० १०६

राजभोग दर्शन।

३३४ गुर के गूँजा पूवा सुहारी० १०६

पोंढ़वे में, उत्सव के कीर्तन।

कार्तिक कृ० ३० (दिवाली)

मंगला दर्शन।

३३५ पूजा विधि गिरिराज की १०६

शृंगार समय।

··· न्हात वलदाऊ कुँवर० [पद-सं. ३३१]
३३६ घरी एक छाँडो तात विहार० १०६

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

३३७ आज दिवारी बड़ो परब घर० १०७
३३८ आज दिवारी मंगलचार० १०७

श्रृंगार दर्शन ।

३३९ यह दिवारी बरस दिवारी० १०७

राजभोग आये ।

३४० पूजन चले नंद गिरिवर कों० १०७
३४१ पूजा करी देव गोधन की० १०८
३४२ पूज सबे रंग भीने० १०८
··· अन्नकूट कोटिक भाँतनसों० [पद-सं.२८४]
··· देखो री हरि भोजन खात० [पद-सं.२८५]

भोग सरे ।

··· आनि और आनि कहत० [पद-सं.२८६]

राजभोग दर्शन ।

३४३ फूले गोप ग्वाल घर-घर ते० १०८
··· गुर के गूँजा पुवा सुहारी० [पद-सं.३३४]

भोग के दर्शन ।

··· स्याम खिरक के द्वारे० [पद-सं.३०५]
··· गाय खिलावत सोभा० [पद-सं.३१७]

संध्याभोग आये ।

··· खेली बहु खेली गांग० [पद-सं.३०७]

संध्या समय ।

३४४ नीकी खेली गोपाल की गैया० १०९

कान जगावे पधारे तब । राग कान्हरा की आलापचारी करके ।

··· कान जगावन चले कन्हाई० [पद-सं.३०८]
··· आज अमावस दीपमालिका० [पद-सं.३०९]
··· आज कुहू की रात है माधो० [पद-सं.३१०]
··· आज दीपित दिव्य दीप० [पद-सं.३११]

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

मंदिर में पधारते समय ।

३४५ देखो इन दीपक की सुघराई० १०९

हटरी में आरती को टकोरा होय तब ।

३४६ सुरभी कान जगाय० १०९
३४७ कान जगाय गोपाल मुदित मन० १०९
··· मानत परब दिवारी को० [पद-सं.३१२]
३४८ दीप दान दे हटरी बैठे० ११०

पोढवे के कीर्तन आज नहीं होय ।

कार्तिक शु० १ (अन्नकूट)

राजभोग आये ।

··· अपने अपने टोल० [पद-सं.३२५]
३४९ गिरि पर कोप के० ११०

भोगसरे ।

··· आनि और आनि कहत० [पद-सं.२८६]

राजभोग दर्शन ।

··· गुर के गूँजा पुवा सुहारी०[पद-सं.३३४]

गोवर्धन पूजा करवे पधारे तब राग सारंग की आलापचारी ।

··· चले री गोपाल गोवर्धन० [पद-सं.३२४]
··· बडरिन कों आगे दे० [(पद-सं.३१६]
··· गोवर्धन पूजा कर गोविंद० [पद-सं.३२२]
··· खिरक खिलावत गायन० [(पद-सं.३०६]

पाछे पधारे तब ।

३५० बने री गोपाललाल रस आवत० १११
३५१ आवत हैं गोकुल के लोचन० १११
३५२ आओ मेरे गोकुल के चंदा० १११

तिलक होय तब ।

३५३ गोवर्धन पूज के घर आये १११

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय ।

३५४ जै जै जै मोहन बलवीर० ११२

शयनभोग आये व्यारू के ।

शयन दर्शन ।

३५५ कान्ह कुँवर के करपल्लव पर० ११२

पोढवे में उत्सव के ।

कार्तिक शु० २ (भाई दूज यमद्वितीया)

मंगला दर्शन ।

३५६ गोवर्धन नख पर धरचो मेरे० ११२

शृंगार समय ।

··· कर मोदक माखन मिश्री ले०[पद-सं.२३५]
··· कहा ओछी ह्वै जैहैं जात०[पद-सं.२३६]
३५७ आओ गोपाल सिंगार बनाऊँ० ११२
३५८ पीतांबर को चोलना० ११३
३५९ बलिहारी गोपाल की० ११३

शृंगार दर्शन ।

३६० आज बन्यो नवरंग पियारो० ११३

तिलक होय तब ।

३६१ आज दूज भैया की कहियत० ११३

राजभोग आये ।

३६२ लाडले गोपाल आज हमारे० ११३
३६३ बल गइ स्याम मनोहर गात० ११४
३६४ कहत प्यारी राधिका अहीर० ११४
३६५ आज गोपाल पाहुने आये० ११४

भोग सरे ।

३६६ भोजन कर जु उठे दोउ भैया० ११४
३६७ पान खवावत कर कर बीरी० ११४

राजभोग दर्शन ।

३६८ आओ रे आओ भैया ग्वालो० ११४

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

३६९ तारवतारो री ब्रजजन लोचन० ११५

भोग के दर्शन ।

३७० साँवरे बल गइ भुजन की० ११५

संध्या समय ।

··· जै जै जै मोहन बलवीर० [पद-सं.३५४]

शयन दर्शन ।

··· कान कुँवर के करपल्लव० [(पद-सं.३५५]

पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

कार्तिक शु० ७

मंगला दर्शन ।

··· बलिहारी गोपाल की० (पद-सं. ३५९)

शृंगार समय ।

३७१ गोवर्धन धरनी धरयो० ११५
३७२ गोवर्धन गिरि कर धरयो० ११५

शृंगार दर्शन ।

३७३ याते जिय भावे सदा गोवर्धनधारी० ११६

राजभोग दर्शन ।

··· तारवतारो री ब्रजजन० (पद-सं.३६९)

भोग के दर्शन ।

··· साँवरे बल गइ भुजन की० ((पद-सं.३७०)

संध्या समय ।

३७४ चिरजीयो लाल गोवर्धनधारी० ११६

शयन दर्शन ।

३७५ सुरराज आज पायन परयो० ११६

पोढवे में इच्छानुसार ।

कार्तिक शु० ८ (गोपाष्टमी)

मंगला दर्शन ।

३७६ चल री सेन दई ग्वालिन कों० ११६

शृंगार समय ।

··· कर मोदक माखन मिश्री ले०(पद-सं.२३५)
··· कहा ओछी ह्वै जैहैं जात० (पद-सं.२३६)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

ग्वाल बोले राग आसावरी की आलापचारी करके ।

३७७ प्रथम गोचारन चले कन्हाई० ११६
३७८ चले बन गोचारन सब गोप० ११७
३७९ मैया गाय चरावन जैहों० ११७
३८० ब्रज तें बन कों चलत कन्हैया० ११७
३८१ आज अति आनंदे ब्रजराय० ११७
३८२ सोहत लाल लकुट कर राती० ११७

ग्वाल आरती समय ।

३८३ चले हरि बच्छ चरावन माई० ११८

राजभोग आये ।

··· आगे आव री छकहारी० (पद-सं.१८०)
३८४ पीत उपरना वारे ढोटा० ११८
३८५ बंसीबट बैठे हैं नँदलाल० ११८
३८६ बिहारीलाल आओ आइ छाक० ११८
३८७ कुमुद बन भली पहुँचो आय० ११८
३८८ कौन बन जैहो भैया आज० ११९
३८९ गोपाल आज कानन चले सकारे० ११९

भोग सरे ।

३९० छाक खाय खाय धाय० ११९
३९१ बैठे लाल कालिंदी के तीरा० ११९

राजभोग दर्शन ।

३९२ गोविंद चले चरावन गैया० ११९

भोग के दर्शन ।

३९३ धौरी धूमर कारी काजर० १२०
३९४ गैया गई दूर टेरो जू कान्ह० १२०
३९५ चेरी कीनी नंददुलारे० १२०
३९६ ए हाँके हटक हटक गाय० १२०

पद-संख्या पद प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय ।

३९७ गोधन के पाछे-पाछे आवत० १२०

शयन भोग आये ।

३९८ कहो कहाँ खेले हो लालन० १२१
३९९ लाल तुम कैसी गाय चराई० १२१
४०० मैया हौं न चरैहौं गैया० १२१
४०१ मैया मैं कैसी गाय चराई० १२१
४०२ धेनन को ध्यान निसदिन मेरे० १२१
४०३ कैसे-कैसे गाय चराई हो० १२१

शयन के दर्शन ।

४०४ आगे गाय पाछे गाय० १२२
··· आओ मेरे या गोकुल के० (पद-सं.३५२)

मान पोढवे मे ।

४०५ काहे न बोलत नागरी बैना १२२
४०६ बलैया लैहो पोढ़ रहो घनस्याम० १२२

कार्तिक शु० ११ (प्रबोधिनी)

मंगला दर्शन ।

४०७ गोविंद तिहारो स्वरूप निगम० १२२

शृंगार समय ।

··· कर मोदक माखन मिश्री० (पद-सं.२३५)
··· कहा ओछो ह्वै जैहैं जात० (पद-सं.२३६)
··· आओ गोपाल सिंगार० (पद-सं.३५७)
··· पीतांबर को चोलना० (पद-सं.३५८)

देव जगे तब राग बिलावल की आलापचारी

४०८ जागे जगजीवन जगनायक० १२२

उत्सव भोग आये ।

४०९ आज प्रबोधिनी परममोद कर० १२३
४१० आज एकादसी० १२३

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
४११ सुकलपच्छ और सुकल एकादशी० १२३
४१२ सुभग प्रबोधिनी सुभग आज दिन० १२३

आरती समय।

२१३ नंद को लाल उठ्यो जब सोय० १२४

साँझ कूँ देव उठे तो भी ये कीर्तन राग बिलावल में होयँ।

राजभोग आये।

४१४ यह तो भाग्य पुरुष मेरी माइ० १२४
४१५ सुतहिं जिमावत यसोदा मैया० १२४
४१६ लाल कों मीठी खीर जो भावे० १२४
४१७ हरि भोजन करत विनोद सों० १२५

भोगसरे।

··· भोजन कर उठे दोउ भैया०(पद-सं.३६६)
··· पान खवावत कर कर बीरी०(पद-सं.३६७)

राजभोग दर्शन।

··· क्रीडत मनिमय आँगन रंग० (पद-सं.१०२)

भोग के दर्शन।

४१८ आज माइ मनमोहन पिय ठाढ़े० १२५
४१९ आज बने व्रजराज कुँवर० १२५

संध्या समय।

५२० कनक कुंडल मंडित कपोल० १२५

शयन दर्शन राग मालव की आलापचारी माहात्म्य के कीर्तन।

··· मोहन नंदराज कुमार० (पद-सं.२८)
··· पद्म धर्यो जन ताप निवारन०(पद-सं.२९)
४२१ बंदे धरन गिरिवर भूप० १२५
४२२ चरनकमल बंदौं जगदीश जे० १२५

जागरण।

४२३ सोहत लाल पाग० १२६
४२४ सोहत कनक कुसुम करन० १२६
पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
४२५ आज बने री लालन गिरधारी० १२६
४२६ तरुन तमाल तरे त्रिभंगी तरुन० १२६
४२७ मोहनलाल के ढिंग ललना यो० १२६
४२८ मेरे तो कान्ह हैं री प्रान सखी० १२७
४२९ लाल की रूप माधुरी० १२७
४३० माइ बाँके लोचन नीके० १२७
४३१ तेरे सुहाग की महिमा० १२७
४३२ जब जब देखो जाय० १२८
४३३ जिय की न जानत हो पिय० १२८
४३४ हस पीक डारी० १२८
४३५ नैन छबीले० १२८
४३६ आज बनी वृषभान कुँवरि की० १२८
४३७ अधर मधुर पूरित मुखरित० १२८
४३८ आज बनेरी लाल गोवर्धन० १२९

पहली आरती।

··· रसिकन रसभरे हो नृत्यत० (पद-सं.२८३)
··· बन्यो मोर मुकुट नटवर० (पद-सं.२८४)
४३९ जहाँ तहाँ ढरि परत ढरारे प्रीतम० १२९
४४० व्रज की पौर ठाढ़ो साँवरो० १२९
४४१ तेरी भौंह की मरोरन में० १२९
४४२ तू मोहिं कित लाइ० १२९
४४३ आली के दृगन पर वारों मीन० १३०
४४४ सुन री सखी तेरो दोष नहीं० १३०
४४५ प्यारी पिय कों बरज०

दूसरी आरती।

··· लाल संग रास रंग (पद-सं.२५२)
··· गिड् गिड् थुंग थुंग (पद-सं.२५३)

पद-संख्या   पद-प्रतीक   पृष्ठ-संख्या

दूसरी आरती पीछे जनाने के चौक में तुलसीजी की सगाई होय, तब

४४६ धन धन माता तुलसी बड़ी १३०
४४७ तू अब चल सिंगार हार० १३०
४४८ हौं तोसों अब कहा कहौं० १३०
४४९ आज बनी कुंजेश्वर रानी० १३१
४५० स्याम कपोलन में कनककुंडल १३१
४५१ मिले पिय साँकरी गली १३१
४५२ सिखवत केतिक रात गई० १३१
४५३ तेरे सिर कुसुम बिखर रहे भा० १३१
४५४ विधाता विधहू जानी न जानी० १३१
४५५ बदन कमल पर बैठे मानों० १३२

तीसरी आरती ।

४५६ मोहन मुखारबिंद पर १३२
४५७ लाड़िली न माने लाल आपुन० १३२

कार्तिक शु० १२   मंगल भोग आए कलेवा तथा यमुनाजी के कीर्तन गाइके।

४५८ सखी मोहिं सोनो सीतल लाग्यो० १३२
४५९ रैन बिदा होन लागी० १३३
४६० पाछली रात परछाँहि० १३३
४६१ आज नंदलाल मुखचंद नैनन० १३३
४६२ जागे हो रैन० १३३

मंगल भोग सरे।

··· मंगल मंगलं० (पद-सं. ८)

मंगला दर्शन।

४६३ मंगल आरती गोपाल की० १३३
··· आज बधाई मंगलचार० (पद-सं. ७४)

दर्शन मंगल भये पीछे।

४६४ लालन तहिं जाओ० १३४
४६५ जान न पाये हो जु० १३४
४६६ मोहन घूमत रतनारे नैन० १३४
४६७ साँझ के साँचे बोल तिहारे० १३४

राजभोग आये।

··· श्रीलच्छमण गृह महामंगल० (पद-सं. ७५)
··· सुभ वैसाख कृष्ण एकादशी (पद-सं.७६)
··· जे वसुदेव किये पूरन तप० (पद-सं. ७७)
··· श्रीवल्लभनंदन रूप अनूप० (पद-सं. ७८)

भोग सरे।

··· गोवल्लभ गोबर्धनवल्लभ० (पद-सं. ७९)

राजभोग दर्शन।

४६८ न्याय दीन दूल्हे हो नंदलाल० १३४
··· बधाई को दिन नीको [पद-सं.१३]
··· तिहारो घर सुबस बसो [पद-सं. ७२]

साँझ कूँ भाद्र० शु० ९ समान

कार्तिक शु० १३   मगला दर्शन।

४६९ चिरियन की चिहुचान सुन १३४

शृंगार समय।

४७० ललिता जू के आज बधायो० १३५
··· हित की बात कहत है मैया० [पद-सं.१६१]

शृंगार दर्शन।

··· न्याय दीन दूल्हे हो नंदलाल(पद-सं.४६८)

राजभोग आये।

४७१ श्रीवृषभानुसदन भोजन कौं० १३६

राजभोग दर्शन।

४७२ राधेजू नव दुलही दूलह मदनगोपाल.१३७

भोग के दर्शन।

··· आज बने व्रजराज कुँवर० (पद-सं.४१९)

संध्या समय।

४७३ राधा प्यारी दुलहिनि जू कौ० १३७

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शयन दर्शन ।

४७४ जुगल वर आवत है गठजोरे० १३७

मान पोढ़वे में ।

··· राय गिरिधरन संग० (पद-सं. ३२०)

··· स्यामाजू दुलहिनी० [पद-सं.३२१]

मार्ग० कृ० १ मंगला तथा शृंगार में व्रतचर्या के कीर्तन होयँ मार्ग० शु० १५ तक

मार्ग० कृ० ५ श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई । भाद्र० शु० ६ समान

मार्ग० कृ० ८ श्रीगोविंदरायजी तथा श्रीगिरिधर लालजी को उत्सव भाद्र० शु० ६ समान

मार्ग० कृ० ११ श्रीगोकुलनाथजी के उत्सव की बधाई आश्विन कृ० ६. समान

मार्ग० कृ० १३. श्रीघनश्यामजी को उत्सव० भाद्र० शु० ६. तथा वैशाख कृ० १० समान

मार्ग० कृ० १४ श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव

मंगला के दर्शन ।

··· आज बधाई मंगलचार० (पद-सं.७४)

फेर आश्विन कृ० १३ समान

मार्ग० शु० २ श्री व्रजभूषणजी को उत्सव. भाद्र० शु० ६. समान विशेष मे

राजभोग दर्शन ।

४७५ श्रीवल्लभ श्रीलछमण गृह प्रगट० १३७

मार्ग० शु० ४ श्रीमथुराधीश और श्रीद्वारकाधीश एक सिंहासन पे बिराजे ।

मंगला दर्शन ।

४७६ आज गृह नंद महर के बधाई० १३७

शृंगार समय ।

··· नैन भर देखो नंदकुमार० (पद-सं. ६)

४७७ नंदराय के नवनिधि आई० १३८

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शृंगार दर्शन ।

··· न्याय दीन दूल्हे हो० (पद-सं. ४६८)

राजभोग आये ।

··· श्रीवृषभानु सदन भोजन० (पद-सं. ४७१)

भोग सरे ।

··· नंदतिहारे आयो पूत० (पद-सं. ५४)

राजभोग दर्शन ।

४७८ धनि गोकुल जहाँ गोविंद आये० १३८

··· आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं.१३)

भोग के दर्शन ।

४७९ बसो मेरे नयनन में यह जोरी० १३८

४८० दिन दूल्हे मेरो कुँवर कन्हैया० १३८

संध्या भोग आये ।

४८१ तू बनरा रे बन आया० १३८

संध्या समय ।

··· राधा प्यारी दुलहिनजू को०[पद-सं.४७३]

शयन भोग आये ।

··· प्यारे हरि को विमल यश० [पद-सं. ३२]

··· गावत गोपी मृदु मृदु बानी० (पद-सं.३१)

··· जन्मत ही आनंद भयो० [पद-सं. ३५]

भोगसरे ।

··· यह धन धर्म ही ते पायो० [पद-सं. ३३]

··· तिहारो घर सुबस० [पद-सं.७२]

४८२ लालन की बातन पर बलि जैये० १३६

मान पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

मार्ग० शु० ७ (श्रीगुसाईं जी के उत्सव की बधाई तथा श्री गोकुलनाथ जी को उत्सव आश्विन कृष्ण ६ समान ।

श्रीगुसाईं जी की बधाई में सेहरा धरे तब

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राजभोग दर्शन ।

४८३ प्रगटे श्रीविट्ठलेश चलो जहाँ० १३९

भोग के दर्शन जन्माष्टमी समान ।

संध्या समय ।

४८४ जयति रुक्मिणीनाथ पद्मावती० १३९

और सब समय में ठाकुरजी तथा महाप्रभूजी की बधाई समान टिपारा धरे तब सेन के दर्शन मे ।

४८५ श्रीविट्ठलनाथ आनंदकंद० १४०

पौष० कृ० ७ (छप्पन भोग० चैत्र कृ० १० समान)

पौष कृ० ८ (वैशाख कृ० १० समान)

पौष कृ० ९ (श्रीगुसाईं जी को उत्सव)

शंखनाद सूँ झाँझ पखावज बजे,

··· श्रीवल्लभ ३ गुन गाऊँ० (पद-सं.१)
··· जैजै श्रीवल्लभ प्रभु विट्ठलेश० (पद-सं.२)
··· जागिये ब्रजराजकुँवर कमल० (पद-सं.३)
४८६ हों बलि जाउँ कलेऊ कीजे० १४०
··· जै जै श्रीसूरजा कलिंनंदिनी० (पद-सं.५)
··· आज बड़ो दरबार देख्यो० (पद-सं.६)
··· माइ सोहिलरा आज नंदमहर० (पद-सं.७)

(और सब क्रम आश्विन कृ० १३ समान)
केवल राजभोग आये में १३, १४,
सख्या के कीर्तन नहीं गवे)

पौष कृ० १० (भाद्र. कृ. १० समान)

आठ दिन तक बाललीला गवे

पौष कृ० ११ (श्री विट्ठलनाथ जी के उत्सव की की बधाई) आश्विन कृ. ६ समान

पौष कृ० १३ (वैशाख कृ० १० समान)

पौष कृ० १४ (श्री विट्ठलनाथ जी को उत्सव)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

मंगला दर्शन ।

··· आज बधाई मंगलचार० (पद-सं.७४)

आश्विन कृ० १३ समान ।

पौष कृ० ३० बाललीला तथा ललित मालकोस के कीर्तन भेले होयँ ।

मकर संक्रांति (एक दिन पहले भोगी संक्रांति)

शृंगार दर्शन ।

४८७ बनठन भोगी रस विलसन कों० १४०

राजभोग दर्शन ।

४८८ भोगी भोग करत सब रस कों० १४०
··· क्रीडत मनिमय आँगन नंद०(पद-सं.१०२)

भोग के दर्शन ।

··· आज माइ मनमोहन पिय० (पद-सं.४१८)
४८९ भोगी भोग करत सब रस को० १४१

संध्या समय ।

··· कनककुंडल कपोलमंडित० (पद-सं.४२०)
४९० भोगी को रस बिलसत आवत० १४१

शयन दर्शन ।

४९१ तेरी हौं बलि बलि जाउँ० १४१
४९२ कहारी कहों मनमोहन को सुख० १४१

मान पोढवे में

··· राधिका आज आनंद में० (पद-सं.२५४)
४९३ नीकी ऋतु लागे सीत की० १४१

मकर संक्रान्ति जागवे में ।

४९४ भोर भये भोगी रस बिलस भये० १४१

मंगला दर्शन ।

४९५ तरनितनया तीर आवतहि प्रात० १४१

शृंगार समय ।

४९६ जानि परब संक्रांति नंद घर० १४२

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

४९७ बोल पठाइ स्यामपे जसुमति० १४२
४९८ कहत नंदरानी गोपाल सों० १४२

शृंगार दर्शन ।

४९९ खेले साँवरो गोपाल गोपकुँवरन० १४३

तिलवा भोग आये

५०० आज भलो संक्रांति पुन्य दिन० १४३

राजभोग आये ।

५०१ बैठे ब्रजराजगोद मोद सों० १४३

राजभोग दर्शन ।

५०२ ग्वालिन तै मेरी गेंद चुराई० १४३
५०३ खेलत मे को कहाँ को गुसैया० १४३
५०४ देखो सखी मोहन मदनगोपाल० १४४

भोग के दर्शन ।

५०५ तुम मेरी मोतिनलर क्यों तोरी० १४४

संध्या-समय

५०६ गहे रहे भामिनी की बाँह० १४४

शयन दर्शन ।

५०७ कान्ह अटा चढ़ि चंग उड़ावत० १४४
५०८ कान्ह अटा पर चंग उडावत० १४४
५०९ खेलत गेंद राय आँगन में० १४५

मान पोढवे में ।

५१० आवत जात हों हार परी री० १४४
५११ गिरिधर शयन कीजे आय० १४५

माघ कृ० ४ (गुप्त उत्सव) राधाष्टमी तथा कार्तिक शु० १३ समान ।

माघ कृ० ६ (श्रीविट्ठलनाथजी को जन्मदिन)

मंगला दर्शन ।

··· जन्मफल मानत यशोदा० (पद-सं. १७)

शृंगार समय ।

··· नयन भर देखो नंदकुमार० (पद-सं. ९)
··· यह सुख देखोरी तुम माय० (पद-सं. १६)
५१२ आज नन्दजू के द्वारे भीर० १४५
५१३ आनन्द आज नन्दजू के द्वार० १४५

शृंगार दर्शन ।

५१४ मोद विनोद० १४६

राजभोग आये ।

५१५ धन्य यशोदा भाग्य तिहारे० १४६
५१६ गावो गावो मंगलचार० १४६
५१७ देखो अद्भुत अवगत की गति० १४६
५१८ देवक उदधि देवकी० १४७

राजभोग सरे ।

५१९ सबन सों कहति जसोदामाय० १४७

राजभोग दर्शन ।

··· आये सो आँगन बोले माई०(पद-सं. १०१)
··· आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं. १३)

भोग के दर्शन

··· जायो पूत सुलच्छन० (पद-सं. २५)
५२० साँबरो मंगल रूप निधान० १४८

संध्या समय ।

··· मेरे मन आनन्द भयो० (पद-सं. २७)

शयन भोग आये ।

··· हरि जन्मत ही आनन्द० (पद-सं. ३५)
५२१ अहो पिय सो उपाय कछु कीजे० १४८
··· रावल के कहे गोप० (पद-सं. ४५)
५२२ रानी तेरो भाग्य सबन तें न्यारो० १४८

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शयन भोग सरे।

··· आज धन्य भाग्य हमारे० (पद-सं.८६)

शयन दर्शन।

··· यह धन धर्म ही ते पायो० (पद-सं.३३)
··· श्रीविट्ठल चंद उग्यो जग० (पद-सं.२३१)
··· श्रीविट्ठलनाथ बसतजियजाके(पद-सं.१५७)
··· तिहारो घर सुबस बसो० (पद-सं.७२)

मान पोढवे मे उत्सव के कीर्तन।

माघ शु० ४। मंगला दर्शन।

५२३ सिसिर ऋतु को आगम भयो० १४८

शृंगार समय।

५२४ मदनमत कीनो री मतवारो० १४८
५२५ विधाता अबलन कों सुख दीजे० १४८

शृंगार दर्शन।

५२६ वसंत ऋतु आइ आये पिय घर० १४९

राजभोग दर्शन।

५२७ महल मेरे आये अति मनभाये० १४९

भोग के दर्शन।

५२८ सारंगनैनी री काहे को कियो० १४९

संध्या समय।

५२९ हरिजू राग अलापत गोरी० १४९

शयन भोग आये।

५३० हिमऋतु अति हितकारी री० १४९
५३१ हिमऋतु सिसिरऋतु अति० १५०
५३२ ए मन मान मेरो कह्यो काहे० १५०

शयन दर्शन।

५३३ आली री सज शृंगार सायंकाल० १५०
··· मोहन मुखारविंद पर० (पद-सं.४५६)

मान पोढवे में।

··· राधिका आज आनंद में० (पद-सं.२५४)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

··· नीकी ऋतु लागे सीत की०(पद-सं.४६३)

माघ शु० ५। (वसंतपंचमी)

मंगला दर्शन।

··· सिसिरऋतु को आगम० (पद-सं.५२३)

शृंगार समय।

··· कर मोदक माखन मिश्री० (पद-सं.२३५)
··· कहा ओछी ह्वै जैहैं जात० (पद-सं.२३६)
५३४ भोर भयो जागे जाम लाल० १५०

भैरव की रागमाला।

शृंगार दर्शन।

··· वसंतऋतु आई आए पिय० (पद-सं.५२६)

राजभोग आये।

राग टोडी।

५३५ परोसत गोपी घूँघट मारे० १५१
५३६ परोसत पाहुनी ज्योनारे० १५१
५३७ चित्र सराहत दुरमुर चितवत० १५१
५३८ मोहन जेंवत एरी जिन जाओ० १५१

भोग सरे।

५३९ खंभ की ओझल जेंवत मोहन० १५१
··· पान खवावत कर कर बीरी०(पद-सं.३६७)

वसंत के दर्शन।

झाँझ पखावज।

रागवसंत की आलापचारी।

५४० हरिरिह व्रजयुवतीशतसंगे० १५२
५४१ बिहरति हरिरिह सरस वसंते० १५२

उत्सव भोग आये।

चौक में बैठके।

५४२ गावत चली वसंत बधावो० १५३
५४३ श्रीपंचमी परममंगल दिन० १५४

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

५४४ कुचगडुवा० १५४
५४५ लाल ललित ललितादिक० १५४

राजभोग दर्शन।

५४६ गिरिधरलाल की बानक ऊपर० १५४

भोग के दर्शन।

५४७ आओ वसंत बधावो चली व्रज० १५५
५४८ देखो बृन्दावन श्रीकमलनैन० १५५

सन्ध्या समय।

५४९ नंद के द्वारे आइ हम०, १५५

शयन भोग आये।

५५० राधेजू आज बन्यो है बसंत० १५६
५५१ प्यारी नवल नव बन केलि० १५६
५५२ प्यारी देख बन के चेन० १५६
५५३ प्यारी देख बन की बात० १५६

भोग सरे।

५५४ आई ऋतु चहुंदिस० १५७

शयन दर्शन।

५५५ एसो पत्र पठायो नृपवसंत० १५७
५५६ गोवर्धन की शिखर चारुपर० १५७

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

माघ शु० ६। मंगला दर्शन।

५५७ खेलत बसंत निस पिय संग० १५७

शृंगार समय।

५५८ देखियत लाल लाल दग डोरे० १५७

शृंगार दर्शन।

५५९ स्याम सुभग तन शोभित० १५८

गोपीवल्लभ आये।

५६० जसुदा नहिं बरजे अपनो बाल० १५८

राजभोग आये।

५६१ रिंगन करत कान्ह आँगन में० १५८

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

५६२ अद्भुत शोभा बृन्दावन की० १५९

भोगसरे।

५६३ एक बोल बोलो नंदनंदन० १५९

राजभोग में माघ शु० १५ तक नित गावनें। और ग्वाल के दर्शन में डोल तक ये गावनो–

५६४ अति सुन्दर मनजटित पालनो० १५९

राजभोग दर्शन।

फा० शु० १० तक नित्य गवे

··· गुसाईंजी की अष्टपदी० (पद-सं.५४०)
··· गावत चली बसंत० (पद-सं.५४२)

फाल्गुन कृ० ६. तक मंगला में वसंत के ये कीर्तन गवें।

··· खेलत बसंत निस पियसंग० (पद-सं.५५७)
५६५ आजु कछु देखियत ओरहि० १६०
५६६ कोयल बोली सब बन फूले० १६०
··· देखियत लाल लाल दग० (पद-सं.५५८)
५६७ तेरे नैन उनींदे तीनपहर जागे० १६०

वसंत सूं रोपणी तक.
क्राट धरैं तब.
शृंगार समय।

५६८ बंदों पदपंकज विठलेश० १६१
५६९ गोपीजनवल्लभ जै मुकुन्द० १६१

शृंगार दर्शन।

५७० बंदों पदपंकज नंदलाल० १६१

राजभोग दर्शन

५७१ नंदनंदन श्रीवृषभाननंदनी संग० १६२

भोग के दर्शन।

५७२ राजा अनंग मंत्री गोपाल० १६२

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय।
५७३ हरिजू के आवन की बलिहारी० १६३
शयन भोग आये।
५७४ आयो ऋतुराज साजपंचम० १६३
५७५ ऋतु वसन्त वृंदावन विहरत० १६३
५७६ ऋतुवसंत तरुलसंत मनहसंत० १६३
५७७ ऋतुवसन्त वृन्दावन फूले द्रुम० १६४
शयन के दर्शन।
५७८ देखो वृन्दावन की भूमि को० १६४
सेहरा धरे तब।
शृंगार समय।
... गावत चली वसन्त बधावो० (पद-सं५४२)
शृंगार दर्शन।
५७९ आओ री आओ सब मिल० १६५
राजभोग दर्शन।
५८० देखो राधामाधो सरस जोर० १६५
५८१ और राग सब भये बराती० १६६
भोग के दर्शन।
५८२ खेलत वसन्त बलभद्रदेव० १६६
संध्या समय।
५८३ बहुविध कला बन खेलो सघन० १६६
शयनभोग आये।
५८४ वसंत पंचमी बसन्त बधावो० १६७
५८५ बन ठन खेलन आये री वसंत० १६७
शयन दर्शन।
५८६ खेलत बसंत दूल्हे हो गिरिधर० १६७
टिपारा धरे तब
राजभोग दर्शन।
५८७ उड़त बंदन नव अबीर बहु० १६७

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

५८८ नृत्यत गावत बजावत सासा गग० १६८
भोग के दर्शन।
५८९ आज ऋतुराज सब साज शोभा० १६८
संध्या समय।
... हरिजू के आवन की० (पद-सं.५७३)
शयन भोग आये
५९० देख री देख ऋतुराज आगम० १६८
शयन दर्शन।
५९१ वृन्दावन विहस धाम विहरत० १६९
माघ शु० १४ (पूनम कूँ सवेरे होरी रुपे तो आज)
मंगला दर्शन।
... तेरे नयन उनींदे तीन पहर०(पद-सं.५६७)
शृंगार समय।
५९२ चली है भरन गिरिधरनलाल० १६९
५९३ मोहन बदन बिलोकत अँखियन० १७०
शृंगार दर्शन।
५९४ चटकीली चोली पहरे तन० १७०
राजभोग दर्शन।
... श्रीगुसांईजी की अष्टपदी० (पद-सं.५४०)
... श्रीजयदेवजी की अष्टपदी० (पद-सं.५४१)
... गिरिधरलाल की बानक० (पद-सं५४६)
साँझ कूँ वसंतपंचमी समान
माघ शु० १५ साँझ कूँ होरी रुपे तो
मंगला दर्शन।
... खेलत वसन्त निस पिय० (पद-सं.५५७)
शृंगार समय।
५९५ आज सुभग दिन बसंत पंचमी० १७०
५९६ आज वसन्त सबे मिल सजनी० १७१

पद-संख्या पद-तीक पृष्ठ-संख्या

शृंगार दर्शन।

५९७ आज वसंत बधावो है श्रीवल्लभ० १७१

राजभोग दर्शन।

... श्रीगुसाईंजी की अष्टपदी० (पद-सं.५४०)

... श्रीजयदेव की अष्टपदी० (पद-सं.५४१)

... गिरिधरलाल की बानक० (पद-सं.५४६)

भोग के दर्शन।

५९८ देखत बन व्रजनाथ आज० १७१

संध्या समय।

... नंद के द्वारे आई हम० (पद-सं.५४९)

शयनभोग आये।

होरी रोपवे जाँय तब श्री कूँ दण्डवत करके धमार

५९९ ऋतु वसंत सुख खेलिए हो० १७२

जगमोहन में आयके पूरी करे

शयन दर्शन।

६०० खेलत फाग गोवर्धनधारी० १७३

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

माघ शु० १५. सवेरे होरी रुपे तो मंगल भोग आये,
होरी रोपवे जाँय तब श्री कूँ
दण्डवत करके धमार।

६०१ घोष नृपतिसुत गाइए० १७३

जगमोहन में आयके पूरी करे।

मंगला दर्शन। राग वसंत।

६०२ साँची कहो मनमोहन मोसों० १७४

शृंगार समय।

... घोष-नृपतिसुत गाइए० (पद सं.६०१)

शृंगार दर्शन

६०३ होहो होरी खेले नन्द को० १७४

राजभोग आये।

६०४ रिझवत रसिक किशोर कों० १७५

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राजभोग दर्शन।

अष्टपदी गायके राग बिलावल की अलापचारी।

६०५ नंदसुवन व्रजभाँमते फाग संग० १७५

भोग संध्या समय।

... ऋतु वसंत सुख खेलिए० (पद-सं.५९९)

शयन भोग आये।

६०६ ढोटा दोउ राय के० १७७

शयन दर्शन।

... खेलत फाग गोवर्धनधारी० (पद-सं.६००)

पोढवे में उत्सव के।

फाल्गुन कृ० २ (श्रीव्रजभूषणलालजी को
जन्मदिन)।

मंगला दर्शन।

... जन्मफल मानत यशोदामाइ० (पद-सं.१७)

शृंगार समय।

... आज गृह नन्दमहर के० (पद-सं.४७६)

... यह सुख देखो री तुम माई० (पद-सं.१६)

... आज नन्दजू के द्वारे भीर० (पद-सं.५१२)

... मोद विनोद आज गृहन१० (पद-सं.५१३)

... (धमार) नन्दसुवन व्रजभाँम०(पद-सं.६०५)

... आनन्द आज नन्दजू के० (पद-सं.५१३)

राजभोग आये।

... धन्य यशोदा भाग्य तिहारे०(पद-सं.५१५)

... गाओ गाओ मंगलचार० (पद-सं.५१६)

... पुत्र भयो श्रीवल्लभ के गृह० (पद-सं.२२४)

... पौषकृष्ण नौमी को शुभ० (पद-सं.५२२)

६०७ (धमार) गोरे अंग ग्वालनि० १७७

राजभोग सरे।

... एक बधाई गवे।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राजभोग दर्शन।

६०८ श्रीलछमन कुल गाइए० १७८
··· आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं.१३)

भोग के दर्शन।

६०९ प्रथम सीस चरनन धर० १७८

संध्या समय।

··· प्रथम सीस चरनन धर० (पद-सं.६०९)

शयन भोग आये।

६१० श्रीवल्लभकुलमंडन० १७९

बीड़ी आरोगैं तब तक।

शयन दर्शन।

राल उड़े तब।

६११ गिरिधरलाल रसाल खेलत० १८०
··· यह धन धर्म ही ते पायो० (पद-सं.३३)
··· तिहारो घर सुबस बसो० (पद-सं.७२)

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

फाल्गुन कृ०४, (श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव)

मंगला दर्शन।

··· खेलत बसंत निस पिय० (पद-सं.५५७)

श्रृंगार समय।

··· घोष नृपतिसुत गाइए० (पद-सं.६०१)

श्रृंगार दर्शन।

६१२ होरी खेले मोहना रंग भीने० १८०

राजभोग आये।

··· नंदसुवन व्रजभाँमते० (पद-सं.६०५)

राजभोग दर्शन।

··· श्रीलछमनकुल गाइए० (पद-सं.६०८)

आरती समय।

··· आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं.१३)

पद-संख्या पद प्रतीक पृष्ठ-संख्या

भोग के दर्शन, संध्या समय

··· प्रथम सीस चरनन धर० (पद-सं.६०९)

शयन भोग आये।

६१३ गोकुल गाम सुहावनो सब मिल० १८०
··· श्रीवल्लभकुलमंडन प्रगटे० (पद-सं.६१०)

भोगसरे।

६१४ ललना खेले फाग बन्यो० १८०

शयन के दर्शन।

६१५ स्यामसुन्दर मनभावते मनमोहना० १८१

पोढवे में उसव के कीर्तन

फाल्गुन कृ० ७. (श्रीनाथजी को पाटोत्सव)

जगायवे में।

६१६ खिलावन आवेंगी व्रजनार० १८२

मंगला के दर्शन।

६१७ आज भोरही नन्दपौर व्रज० १८२

श्रृंगार समय।

६१८ खेलिए सुन्दरलाल होरी० १८३
··· घोषनृपतिसुत गाइये० (पद-सं.६०१)

श्रृंगार दर्शन।

६१९ जिनडारो जिनडारो आँखिनमें० १८४

गोपीवल्लभ सरे। भीतर खेल होय तब।

६२० खेलत बल मनमोहना० १८४

राजभोग आये।

राग सारंग की आलापचारी।

६२१ सुरंगी होरी खेले साँवरो० १८५

भोग सरे। तिलक होय तब।

६२२ गहि पाये हो मोहन अब मुख० १८६

राजभोग दर्शन।

राग आसावरी की अलापचारी।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

आरती समय ।

६२३ धन-धन नंद जसोमति हो धन० १८६
६२४ रँगीले री छबीले नैना रसभरे० १८७

भोग संध्यासमय राग काफी
की आलापचारी ।

६२५ निकस कुँवर खेलन चले० १८७

शयनभोग आये । राग रायसा
की आलापचारी ।

६२६ सकल कुँवर गोकुल के० १८९

शयन दर्शन । वीडी आरोगे तब ।

६२७ श्रीगोवर्धनराय लाला० १९०

राल उडे तब ।

··· गिरिधरलाल रसालखेलत० (पद-सं.६११)

पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

फाल्गुन कृ० ८. शृंगार समय ।

··· धन-धन नन्द जसोमति० (पद-सं.६२३)

राजभोग दर्शन ।

··· खेलत बल मनमोहना० (पद-सं.६२०)

श्रीनाथजी के पाटोत्सव पीछे
प्रथम मुकुट धरे तब ।
मंगला दर्शन ।

६२८ कुंज कुटीर मिल जमुनातीर० १९०

शृंगार समय ।

६२९ खेलत गिरिधर राधा नवनिकुञ्ज० १९०
६३० रविजातट कुंजन में गिरिधर० १९१

शृंगार दर्शन ।

६३१ रसिक फाग खेले नवलनागरी० १९२

राजभोग आये ।

६३२ ललना तुम मेरे मन अति बसो० १९२
६३३ माधो चाचर खेलहीं० १९२

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राजभोग दर्शन ।

६३४ एरी सखी निकसे मोहनलाल० १९३
६३५ छाँड़ो-छाँड़ो हमारी बाट० १९४

भोग के दर्शन ।

६३६ बहुरि डफ बाजन लागे हेली० १९४

संध्या समय ।

६३७ होरी खेले लाल डफ बाजे ताल० १९४

शयनभोग आये ।

६३८ गिरिधर यमुनातट कुंजन में० १९४
६३९ गावत धमार आई० १९६

शयन दर्शन ।

६४० खेलत फाग राग रंग बाजे० १९६

पाटोत्सव पीछे सेहरा धरै तब ।
मंगला दर्शन ।

६४१ होहो होरी खेलन जैये आज भलो० १९६

शृंगार समय ।

६४२ रस सरस बसो वरसानो जू० १९६
६४३ हो मेरी आली भानुसुता के तीर० १९८

शृंगार दर्शन ।

६४४ तुम आओ री तुम आओ० १९८

राजभोग आये ।

६४५ मोहन वृषभान के आये० १९९
६४६ सुंदरस्याम सुजान सिरोमनि० २००

भोग सरे ।

६४७ नंदमहर को कुँवर कन्हैया० २०१

राजभोग दर्शन ।

६४८ नंदगाम को पांडे० २०२

भोग के दर्शन ।

६४९ श्रीगोकुलराजकुमार कमलदल० २०३

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय ।

६५० होरी हो होरी हो गोविंदजी होरी० २०४

शयनभोग आये ।

··· सकल कुँवर गोकुल के० (पद-सं.६२६)

भोगसरे ।

६५१ आवे रावल की ग्वार नार० २०५

शयन दर्शन ।

६५२ नवरंगीलाल बिहारी० २०५

पाटोत्सव पीछे टिपारा धरे तब भोग के दर्शन में ।

६५३ आज बनठन खेलन फाग० २०५

संध्या समय ।

६५४ खेलत फाग फिरत रस फूले० २०६

शयनभोग आये ।

६५५ जब हरि हो हो होरी गावे० २०६

पाटोत्सव पीछे मान पोढवे में,
फाल्गुन के भाव के कीर्तन होयँ ।

फाल्गुन कृ० १३ शृंगार समय ।

६५६ अरी मेरे नैन लगे ब्रजपालसों० २०७

शृंगार दर्शन ।

··· रंगीले री छबीले नैना० (पद-सं.६२४)

राजभोग आये ।

६५७ लालन तें प्यारी चित्त हर० २०८

भोगसरे ।

६५८ स्यामा नकबेसर अति बनी० २०९

राजभोग दर्शन ।

··· सुरंगी होरी खेले साँवरो० (पद-सं.६२१)
६५९ अरे कारे प्यारे रतनारे भौंरा० २०९

भोग के दर्शन ।

६६० बाघंबर ओढ़े साँवरो० २०९

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय ।

६६१ औरन सों खेले धमार मोसों० २१०

शयनभोग आये ।

६६२ खेलत है हरि हो हो होरी० २१०

शयन दर्शन ।

६६३ लिये सकल सोंज होरी की० २११

फाल्गुन शु० १. मंगला दर्शन ।

६६४ चलो सखी मिल देखन जैये० २१२

शृंगार समय ।

··· खेलिये सुंदर लाल होरी० (पद-सं.६१८)
६६५ परवा प्रथम कुँवर अति विहरत० २१२

शृंगार दर्शन ।

६६६ मन मेरे की इच्छा पूजी० २१३

राजभोग आये ।

६६७ चल री सिंहपौर चाचर मची० २१३

भोगसरे ।

६६८ अरी सुन डफ बाजे साजे गाजे० २१४

राजभोग दर्शन ।

आरती समय ।

६६९ गोपी हो नंदराय घर माँगन० २१४
६७० होरी के रंगीले लाल गिरिधर० २१५

भोग के दर्शन ।

६७१ परवा प्रथम कुँवर कों देखन० २१५

संध्या समय ।

६७२ आयो फागुन मास कहे सब० २१६

शयन भोग आये ।

६७३ खेलत हैं ब्रजराजकुँवर बर० २१६

शयन दर्शन ।

६७४ फागुन मास सुहायो रसिया० २१७

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

फाल्गुन शु० ८. (होलिकाष्टक क्रम) पाटोत्सव पीछे प्रथम मुकुट धरे वाके समान। विशेष में राल उड़े तब।

··· गिरिधरलाल रसाल० (पद-सं. ६११)

फाल्गुन शु० ११. (कुंज एकादशी)

मंगला दर्शन।

··· कुंज कुटीर मिल जमुनातीर०(पद-सं. ६२८)

शृंगार समय।

··· खेलत गिरिधर राधा नव० (पद-सं. ६२९)
··· रविजातट कुंजन में० (पद-सं. ६३०)

शृंगार दर्शन।

६७५ मिलि खेले फाग वन में श्रीवल्लभ० २१७

राजभोग आये।

६७६ प्यारी तैं मोहनमन हर्यो० २१७
६७७ अहो पिय लाल लड़ेती को० २१८
··· ललना तुम मेरे मन० (पद-सं. ६३२)
६७८ आज हरि कुंजन खेलत होरी० २१९

राजभोग दर्शन। आज सूँ अष्टपदी बंद होय। राग देव गधार की अगारचारी।

६७९ मदन गोपाल झूलत डोल० २२०
६८० झूलत दोउ नवलकिशोर० २२०
६८१ झूलत हंससुता के कूल० २२०
६८२ अद्भुत डोल बनी मनमोहन० २२१

राग पंचम।

६८३ आज ललना लाल फाग० २२१

राग जैतश्री।

६८४ सोभा सकल सिरोमनी० २२१

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राग धनाश्री।

६८५ झूलत युग कमनीय किशोर० २२२

रंग उड़े तब राग सारंग।

६८६ डोल झूलत हैं पियप्यारी० २२२

सारंग।

६८७ डोल झुलावत लालबिहारी० २२३
६८८ डोल झूलत है प्यारो० २२३
६८९ हरि को डोल देख ब्रजवासी० २२३

भोग के दर्शन।

··· एरी सखी निकसे मोहन० (पद-सं. ६३४)

संध्या समय।

··· होरी खेले लाल डफ० (पद-सं. ६३७)

संध्या आरती के पीछे जगमोहन में।

६९० कुंज महल में ललना रसभरे० २२३

शयनभोग आये। ओपटा राग गोरी।

६९१ नवल कन्हाई हो प्यारे० २२३
६९२ मनमोहना रसमत्त पियारे० २२४

आज सूँ होरी तक ये दो कीर्तन नित्त होय।

शयन दर्शन। राग हमीर कल्यान।

६९३ डोल झूलत है गिरिधरन० २२५
६९४ डोल चंदन को झूलत हलधर० २२५
६९५ डोल झूलत है प्यारो० २२५

आरती भये पीछे भीतर सूँ गुलाल दें नत्र मुख पर लगाय के।

६९६ कोई अपनो बलम मोहि माँग्यो दे० २२५

ये गाइ के नाचनो।

पोढवे में उत्सव कीर्तन।

फाल्गुन शु० १२ मंगला दर्शन।

६९७ लरकवा काल जायगी होरी० २२५

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
शृंगार समय।
६९८ बरसाने की गोपी माँगन० २२६
शृंगार दर्शन।
६९९ फगुवा के मिस छल बल लालकों० २२६
राजभोग आये।
७०० खेले चाचर नरनारि माइ होरी० २२७
७०१ होरी खेले नंदलाल० २२७
भोग सरे।
... अरी सुन डफ बाजे० (पद-सं. ६६८)
राजभोग दर्शन। कुँजएकादशी के समान।
भोग संध्या समय।
७०२ सब दिन तुम ब्रजमें रहो हरि होरी० २२७
सयन भोग आये सूँ कुँजएकादशी के समान।
फाल्गुन शु० १३ (बगीचा)
मंगला दर्शन।
... हो हो होरी खेलन जैये० [पद-सं. ६४१]
शृंगार समय।
... नंदगाम को पांडे० (पद-सं. ६४८)
शृंगार दर्शन।:
७०३ हो हो हो कहि बोले गूजरि जोबन० २२९
राजभोग आये।
७०४ रहसि घर समधिन आई० २२९
... नंदमहर को कुँवरकन्हैया० (पद-सं. ६४७)
भोग सरे।
७०५ नंदकिशोर किशोरी जोरी० २३०
बगीचा में भोग आये।
... आज हरि कुंजन खेलत० (पद-सं. ६७८)
७०६ हरि खेलत ब्रज में फाग अति० २३०
... अहो पिय लाल लड़ेनी को० (पद-सं. ६७७)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्य
राजभोग दर्शन (कुंज समान)
भोग संध्या समय।
... श्रीगोकुलराजकुमार कमल० (पद-सं. ६४९)
संध्या आरती पीछे निजमंदिर मे
पधारे तब।
७०७ संग सखन कों ले जु विपिन मध्य० २३१
शयनभोग आये। कुंज समान और—
... सकल कुँवर गोकुल के० (पद-सं. ६२६)
शयन दर्शन।
७०८ झूलत डोल दोउ मिल० २३१
राज बड़े तब।
.. डोल झूलत है प्यारो लाल० (पद सं. ६८८)
फाल्गुन कृ० १४ मंगला दर्शन।
७०९ चोंक परी गोरी होरी में० २३२
शृंगार समय। राग आसावरी।
७१० बरसाने ते राधिका हो खेलन० २३२
राजभोग आये।
७११ जहाँ रहत नहीं कछु कान एमो० २३५
भोग सरे।
७१२ अहो खेलत बसंत पिय प्यारी० २३६
राजभोग दर्शन। कुंज समान।
भोग के दर्शन
७१३ समधानेते ब्राह्मण आयो भर होरी० २३६
संध्या समय।
७१४ भरो रे न भरो रे न भरो रे० २३७
शयनभोग आये सूँ कुंज-समान।
फाल्गुन शु० १५। होरी।
मंगला दर्शन
७१५ आज माई मोहन खेलत होरी० २३७

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठसंख्या
श्रृंगार समय।
··· खेलिए सुंदरलाल होरी० (पद-सं. ६१८)
··· बरसाने की गोपी माँगन० (पद-सं. ६९८)
श्रृंगार दर्शन।
··· होरी के रँगीले लाल० [पद-सं. ६७०]
राजभोग आये।
··· रहसि घर समधिन आई० [पद-सं.७०४]
··· मोहन वृषभान के आये० [पद-सं. ६४५]
भोगसरे।
··· अरी सुन डफ बाजे० [पद-सं. ६६८]
राजभोग दर्शन। कुंज समान
आरती पीछे।
··· होरीके रंगीले लाल गिरि० [पद-सं.६७०]
भोग संध्या समय।
··· सब दिन तुम व्रज मैं रहो० [पद-सं.७०२]
शयनभोग आये। कुंज समान। और-
··· ढोटा दोऊ राय के० (पद-सं. ६०६)
शयन दर्शन कुंज समान। फगुवा
नाचे पीछे सानिध्य में।
७१६ कोउ भलो बुरो जिन मानो० २३७
पोढवे में। उत्सव के कीर्तन।
चैत्र कृ० १. (डोल को उत्सव)
मंगला दर्शन।
··· आज माई मोहन खेलत० [पद.सं.७१५]
श्रृंगार समय।
··· खेलिये सुंदरलाल होरी [पद-सं.६१८]
··· घोष नृपति सुत गाइए० [पद-सं.६०१]
राजभोग दर्शन।
··· होरीके रंगीलेलाल गिरिधर०(पद-सं.६७०)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
श्रीठाकुरजी डोल में पधारे तब राग देवगंधार
की अलापचारी।
प्रथम दर्शन खुले।
··· मदनगोपाल झूलत डोल० (पद-सं.६७९)
अद्भुत डोल बनी मनमोहन० (पद-सं. ६८२)
भोग आये।
७१७ डोल माई झूलत है व्रजनाथ० २३७
७१८ झूलत डोल दोउ अनुरागे० २३८
७१९ झूलत फूलमई अतिभारी० २३८
७२० मोहन झूलत बढ्यो आनंद० २३८
दूसरे दर्शन।
७२१ डोल माई झूलत है नंदलाल० २३८
··· झूलत हससुता के कूल० [पद-सं.६८१]
भोग आये।
७२२ झूलत डोल नंदकिशोर० २३९
७२३ झूलत सुन्दर जुगलकिशोर० २३९
७२४ झूलत डोल जुगलकिशोर० ६३९
··· झूलत दोउ नवलकिशोर० (पद-सं. ६८०)
तीसरे दर्शन।
·· आज ललना लाल फाग (पद-सं.६८३)
··· सोभा सकल सिरोमणी० (पद-सं.६८४)
··· झूलत युग कमनीयकिशोर०(पद-सं.६८५)
चौथे दर्शन। राग सारंग की आलापचारी
··· डोल झूलत है पिय प्यारी०(पद-सं.६८६)
··· डोल झुलावत लालबिहारी०(पद-सं.६८७)
··· डोल झूलत है प्यारो० (पद-सं.६८८)
··· हरि को डोल देख० (पद-सं.६८९)
चौथे दर्शन।
राग नट
७२५ खेल फाग फूल बैठे० २४०

पद्-संख्या पद्-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
७२६ हस मुसक्याय परस्पर डोल० २४०
७२७ डोल झूलत है ब्रजयुवतिन के० २४०
राग हमीर डोल चन्दन को ।
७२८ डोल झूलत है गिरधरन नवल० २४०
... डोलझूलत है प्यारो लाल०(पद-सं.६९५)
फगुवा दें तब ।
...गोपी हो नंदराय घर माँगन०(पद-सं.६६९)
आरती समय ।
...तिहारो घर सुबस बसो० (पद-सं.७२)
भोग-दर्शन । तमूरा सूँ ।
७२९ तैं री मोहन को मन हरलीनो० २४०
संध्या समय ।
७३० मिस ही मिस आवे घर नंदमहर० २४१
शयनभोग आये ब्यारू के कीर्तन ।
शयन दर्शन ।
७३१ कुंजमहल में ललना रसभरे बैठे० २४१
पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।
होली और डोल के बीच में खाली दिन होय तो ।
मंगला, शृंगार, राजभोग आये में धमार ।
राजभोग दर्शन मे डोल ।
भोग, संध्या, शयन भोग आये में धमार ।
शयन मे डोल ।
पोढवे में फागुन के भाव के ।
डोल के दिन साँझ कूँ होली होय तो-
डोल की आरती तक डोल के समान ।
पीछे भोग दर्शन और सध्या समय ।
... सब दिन तुम व्रज में रहो० (पद-सं.७०२)
झाँझ पखावज सूँ शयन तक ।
शयन भोग आये ।
... ढोटा दोउ राय के० (पद-सं.६०६)

पद्-संख्या पद्-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
शयन दर्शन ।
... कोउ भलो बुरो जिन मानो०(पद-सं.७१६)
पोढवे मे उत्सव के कीर्तन ।
चैत्र कृ० २. (द्वितीया पाट)
जागवे मे ।
७३२ भोर भये जसोदाजू बोले जागो मेरे०२४१
मंगला दर्शन ।
७३३ मंगलकरन हरन मल आरत० २४१
शृंगार समय ।
... कुँवर के संग डोलत नंद० (पद-सं.२३५)
... कहा ओछी ह्वै जैहै जात० (पद-सं.२३६)
७३४ रसिक सिरोमनि नंदलाल० २४१
७३५ चार पहर रसरंग किये रंगभीने० २४२
७३६ जागत सबनिस गतभइ रंगभीने० २४२
७३६ राधा के रसबस भये रंगभीने० २४२
शृंगार दर्शन ।
७३८ आज और कल और० २४३
राजभोग आये छाक के कीर्तन ।
राजभोग दर्शन ।
७३९ लाल नेक देखिये भवन हमारो० २४३
७४० चक्र के धरन हार० २४३
७४१ फूलन की मंडली मनोहर बैठे० २४३
भोग के दर्शन ।
७४२ देखो सखी राजत हैं नंदलाल० २४३
संध्या समय ।
७४३ बेनु माई बाजत री बंसीवट० २४४
शृंगार दर्शन ।
... कुंजमहल में ललना० (पद-सं.७१६)

पद-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
	पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।	
	डोल पीछे मुकुट धरै तब ।	
	मंगला दर्शन ।	
७४४	श्रीवृन्दावन नवनिकुंज ठाड़े०	२४४
	शृंगार समय ।	
७४५	बने आज नंदलाल सखि प्रेम०	२४४
७४६	नवल व्रजराज को लाल ठाढो०	२४५
	शृंगार दर्शन ।	
७४७	देख री देख नवकुंजघन रुघन०	२४५
	राजभोग दर्शन ।	
७४८	वृन्दावन सघन कुंज माधुरी०	२४५
	अथवा ।	
७४९	वृन्दावन सघन कुंज माधुरीद्रुम०	२४६
	अथवा ।	
७५०	मुकुट की छाँह मनोहर किये०	२४६
	भोग के दर्शन	
...	तरु तमाल तरे त्रिभंगी०	(पद-सं-४२६)
	संध्या समय ।	
७५१	आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे०	२४६
	अथवा ।	
७५२	आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरै०	२४६
	शयन दर्शन ।	
७५३	एरी चटकीलो पट लपटानो०	२४६
	अथवा ।	
७५४	एहो आज रीझी हो तिहारी०	२४६
७५५	चलो क्यों न देखे री खरे दोउ०	२४७
	पोढवे में ।	
७५६	री तू अंग अंग रानी०	२४७
...	आज बनी कुंजेस्वररानी०	(पद-सं.४४६)

पद-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
	टिपारा धरै तब—	
	राजभोग दर्शन ।	
७५७	श्रीगोकुल राजकुमार सों मेरो०	२४७
	शयन दर्शन ।	
७५८	टेढी टेढी पगिया मन मोहे०	२४८
	चैत्र कृ० ९ (गुप्त उत्सव))	
	मंगला दर्शन ।	
...	आज बधाई मंगलचार०	(पद-सं.७४)
	पीछे आश्विन कृष्ण १३ समान ।	
	चैत्र कृ० १०. छप्पन भोग को उत्सव ।	
	मंगला दर्शन ।	
...	आज बधाई मंगलचार०	(पद-सं.७४)
	शृंगार समय ।	
...	बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल०	(पद-मं.१५०)
...	चहुँजुग वेद बचन प्रति०	(पद-सं.१५२)
७५९	श्री गोकुल घर घर प्रति०	२४८
...	अबके द्विजवर ह्वै सुख०	(पद-सं.१५३)
	शृंगार दर्शन ।	
७६०	महामहोत्सव श्रीगोकुलगाम०	२४८
	राजभोग आये ।	
...	श्रीवृषभान सदन भोजन०	(पद-सं.४७१)
७६१	बैठी गोपकुँवर की पाँत०	२४८
	राजभोग दर्शन ।	
...	आज महामंगल महराने०	(पद-सं.५६)
	भोग के दर्शन ।	
...	नातर लीला होती जूनी०	(पद-सं ८२)
७६२	जोपे श्रीवल्लभ प्रगट न होत	२४८
	संध्या समय ।	
..	हौं चरनातपत्र की छैयाँ०	(पद-सं.१५६)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शयन दर्शन ।

... श्रीलछमनगृह प्रगट भये हैं० (पद-सं.८४)
... जुग जुग राज करो० (पद-सं.१५८)

पोढवे मे उत्सव के कीर्तन ।

चैत्र शु० १. (सवत्सर)

जागवे मे ।

... भोर भये जसोदाजू बोलै० (पद-सं.७३२)

मंगला दर्शन ।

... मंगलकरन हरन मन आरत० (पद-सं.७३१)

शृंगार समय ।

... करमोदक माखन मिसरी० (पद-सं.२३५)
... कहा ओछी ह्वै जैहै जात० (पद-स.२३६)
७६३ प्रात समय उठ यशोमति जननी० २४९

शृंगार दर्शन ।

७६४ आज को सिंगार सुभग साँवरे० २४९

राजभोग आये छाक के कीर्तन ।

राजभोग दर्शन ।

७६५ बैठे हरि कुंज नवरंग राधे संग० २४९
... चक्र के धरनहार० (पद-सं.७४०)
७६६ चैत्रमास सवत्सर पडवा बरस० २४९

फूल मंडली को कीर्तन ।

भोग के दर्शन ।

७६७ आज मनमोहन पिय बैठे सिंहद्वार० २५०

संध्या समय ।

७६८ स्याम सुभग तन झाँई० २५०

शयन दर्शन ।

७६९ कहि न परे लाडिले लाल की० २५०

पोढवे मे उत्सव के कीर्तन ।

चैत्र शु० ३. (गनगौर) ।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

जागवे में ।

७७० जगावन आवेगी व्रजनारि अति० २५०

मंगला दर्शन ।

७७१ माइ आजु लाल लटपटात आये० २५०
७७२ ठाडे कुंजद्वारपियप्यारी करत० २५१

शृंगार समय ।

७७३ राधा माधो कुंज बुलावे० २५१
७७४ बोलत स्याम मनोहर बैठे० २५१
७७५ आज तन राधा सजत सिंगार० २५१
७७६ कहत जसोदा सब सखियन सों० २५१
७७७ अरबीलो गरबीलो रँगीलो छबीलो० २५२

शृंगार दर्शन ।

७७८ आज कोमल अंग ते ब्रज सुंदरी० २५२
७७९ भोर निकुंजभवन पियप्यारी० २५२

राजभोग आये ।

७८० रँगीली तीज गनगौर आज चलो० २५३
७८१ नवल निकुंज महल मंदिर मे० २५३
७८२ मुदित व्रजनारि पहर नये नये० २५३
७८३ तीज गनगौर त्यौहार को जान० २५३
७८४ नंदघरुनि वृषभानघरुनि मिल० २५३
७८५ सजि ससि आईं सकल व्रजनारी० २५४
७८६ सहेली मेरे आज तो रँगीली गन० २५४

भोग सरे ।

७८७ जल अचवाय लाल लाडिली को० २५५

राजभोग दर्शन ।

७८८ आज की बानिक कही न जाय० २५५
७८९ सघन कुंजभवन आज फूलन की० २५५
७९० राधा नवल लाडिली भोरी० २५५

पद-संख्या　पद-प्रतीक　पृष्ठ संख्या

भोग के दर्शन।

७९१ राधा कौन गौर तैं पूजी० २५६
७९२ राधा कौन गौर तैं पूजी। नंद० २५६

संध्या भोग आये।

७९३ बनठन आइ रँगीली गनगौर० २५६

संध्या समय।

७९४ दुहिवो दुहायवो० २५६
७९५ तीज गनगौर त्यौहार को जान० २५६

शयन भोग आये।

७९६ देखि गनगौर गहि अंगुरी बल० २५६
७९७ देखि गनगौर पिय प्यारी नव० २५७

शयन दर्शन।

... री तू अंग अंग रानी० (पद-सं.७५६)
७९८ बनठन व्रजराजकुँवर बैठे सिंहद्वार०२५७

मान।

७९९ तो-सी तिया नहीं भवन भटू री० २५७
८०० धन्य वृंदाविपिन धन्य गोकुल० २५७

पोढवे में।

८०१ कुंज में पोढे रसिक पिय प्यारी० २५७
८०२ नंदनंदन श्रीवृषभाननंदिनी संग० २५७

चैत्र शु० ४. जागवे में।

८०३ प्रात समे जागी अनुरागी सोवत० २५८

मंगला दर्शन।

८०४ प्यारी के महल तैं उठ चले भोर० २५८

शृंगार समय।

८०५ तैं गोपाल हेत नील कंचुकी० २५८
८०६ मैं तेरी अधिक चतुराई जानी० २५८
८०७ कंचुकी के बंद तरक तरक० २५८

शृंगार दर्शन

पद-संख्या　पद-प्रतीक　पृष्ठ-संख्या

... आज कोमल अंग तैं व्रजसु०(पद-सं.७७८)

चैत्र शु० ६. (श्री यदुनाथ जी को उत्सव) क्रम
भाद्र शु० ६. के समान

चैत्र शु० ८. (श्री व्रजभूषणजी को उत्सव) क्रम
भाद्र शु० ६. के समान।

चैत्र शु० ६. राम नवमी (श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव)

मंगला दर्शन।

... बधाई मंगलचार० (पद-सं. ७४)

पंचामृत-समय।

८०८ नवमी चैत की उजियारो० २५६

शृंगार समय।

८०९ कौशिल्या रघुनाथको लिये गोद० २५६
८१० सुभग सेज शोभित कौशल्या० २५६
८११ गावत-राम जनम की गाथा० २५०
८१२ राम-जनम मानत नँदराय० २६०
८१३ सब सुख चाह रही है राम की० २६०
८१४ श्रीरघुनाथ पालने झूले कौशिल्या०२६०
८१५ कनक रत्न मनि पालनो रच्यो० २६०

राजभोग आये।

८१६ भोजन लाव री तू मैया० २६२

जन्म पँचामृत समय।

८१७ प्रगट भये हैं राम माइ० २६२

उत्सव भोग आये

८१८ नौमी के दिन नोबत बाजे० २६२
८१९ कौशलपुर मे बजत बधाई० २६२
८२० आज महामंगल कोशलपुर सुन० २६३
८२१ आज सखी रघुनंदन जाये० . २६३
८२२ आज अजोध्या प्रगटे राम० २६३

पद्-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
८२३	आज अजोध्या माँझ बधाई०	२६४
८२४	फूले फिरत अजोध्यावासी०	२६४
८२५	आनंद आज नृपति दशरथ०	२६४
	राजभोग दर्शन ।	
···	(एहो ए) आज नंदराय के०	(पद-सं.२४)
	साँझ कूँ भाद्र शुक्ल ९ के समान ।	
	चैत्र शुक्ल १०, मंगला दर्शन ।	
८२६	फूलनकी माला हाथ फूली फिरें०	२६४
	शृंगार समय ।	
८२७	सुनु सुत एक कथा कहौं प्यारी०	२६५
८२८	बात कहौं एक हित की तोसों०	२६५
	चैत्र शुक्ल ११. (श्रीमहाप्रभुजीके उत्सव की बधाई)	
	मंगला दर्शन ।	
···	वधाई मंगलचार०	(पद-सं. ७४)
	शृंगार समय ।	
···	व्रज भयो महर के पूत०	(पद-सं. १०)
···	भूतल महामहोत्सव आज०	(पद-सं.२१५)
···	आज गृह नंदमहर के वधाई	(पद-सं.४७६)
८२९	भयो जगती पर जयजयकार०	२६६
···	जनमफल मानत जसोदा०	(पद-सं. १७)
८३०	जय श्रीलक्ष्मण राजकुमार०	२६६
···	जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने०	(पद-सं २०८)
	शृंगार दर्शन ।	
···	यह सुख देखोरी तुम माइ०	(पद-सं.१६)
	राजभोग आये ।	
८३१	जुर चली है बधावन नंदमहर०	२६६
···	जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने०	(पद-सं.२०८)
	राजभोग दर्शन ।	
...	(एहो ए) आज नन्दराय के०	(पद-सं.२४)

पद्-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
...	जोपे श्रीवल्लभ०	(पद-सं.२०८)
	भोग के दर्शन ।	
...	१ सब मिल गावो गीत०	(पद-स.२१०)
	संध्या समय ।	
...	१ मेरे मन आनन्द भयो०	(पद-स.२७)
	शयन भोग आये ।	
...	१ गावत गोपी मृदु मृदु०	(पद-स.३१)
...	प्यारे हरि को विमल यश०	(पद-स.३२)
...	भक्तिसुधा बरसत ही प्रगटे०	(पद-सं.८३)
...	श्रीलछमन गृह प्रगट भये०	(पद-स.८४)
	शयन दर्शन ।	
...	यह धन धर्म ही ते पायो०	(पद-स०३३)
	पोढवे में ।	
...	धन रानी जसुमति गृह०	(पद-सं.३०)
	चैत्र शु० १५ (छप्पनभोग-उत्सव) चैत्र कृष्ण १० के समान ।	
	श्रीमहाप्रभुजी की बधाई में मुकुट धरै तब—	
	शृंगार समय ।	
८३२	चौकडा । धन धन माधवमास०	२६७
८३३	चोकडा । श्रीलछमन गृह बधाये०	२६८
	शृंगार दर्शन ।	
८३४	जय श्रीवल्लभदेव धनी	२६८
	अथवा	
···	नंदराय के नवनिधि आई०	(पद-सं.४७७)
	राजभोग दर्शन ।	
८३५	एसी बंसी बाजी०	२६९
	अथवा ।	
···	जयति भट्ट लक्ष्मणतनुज०	[पद-सं.२१२]
	भोग दर्शन ।	
८३६	चोकड़ा, [राग धनाश्री] माधव०	२६९

पद्-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या समय।

१ बधाई गानी

शयनभोग आये।

८३७ श्रीवल्लभ मधुराकृत मेरे० २७०

८३८ प्रगट ह्वै मारग रीत बताई० २७०

शयन दर्शन।

... श्री लछमनवर ब्रह्मधाम काम०(पद-सं.२३२)

अथवा।

८३९ मधुर ब्रजदेश बस मधुर कीनो० २७०

सेहरा धरै तब—

शृंगार समय।

८४० मूल पुरुष नारायन यज्ञ० २७१

राजभोग आये।

८४१ नंदरानी सुत जायो महर के० २७५

राजभोग दर्शन।

८४२ केसर की धोवती पहरे० २७५

भोग संध्या समय।

८४३ हेरी होरी रे भैया होरी हेरी रे० २७५

शयन भोग आये।

८४४ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी रे० २७६

८४५ एरी चल जायँ जहाँ हरिवदनान० २७७

वैसाख कृ० ७. (मथुरेशजी श्रीद्वारकाधीश एक सिंहासन पर पे विराजे) (मृग० शु० ४ के समान)।

वैसाख कृ० १०. मंगला दर्शन।

... माइ सोहिलरा आज नंदमहर० (पद-सं.७)

शृंगार समय।

... आज वन कोउ में जिन जाय०(पद-सं.१५)

... जनमफल मानत जसोदा माय०(पद-सं.१७)

८४६ द्वारे आय गुनीजन ठाडे० २७८

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शृंगार दर्शन।

८४७ बाजे बाजे मंदिरला सकल ब्रज० २७८

राजभोग आये।

८४८ ग्वाल बधाई माँगन आए० २७८

८४९ नंद बधाई बाँटत ठाड़े० २७८

८५० नंद वृषभान के हम भाट० २७८

८५१ श्रीब्रजराज के हम ढाढी० २७९

... नंदजू तिहारे सुख दुख गये० (पद-सं.२२)

राजभोग दर्शन।

... सब ग्वाल नाचे गोपी गावे० (पद-सं.५२)

भोग के दर्शन।

८५२ आज अति बाढ्यो है अनुराग० २७९

... रानीजू जायो पूत सुलच्छन० (पद-सं.२५)

... कन्हैया कब चल है पायन० (पद-सं.२६)

संध्या समय।

८५३ आज बधावो श्रीब्रजराज के० २७९

शयनभोग आये।

८५४ आज तो मंदिलरा बाजे मंदिर० २७९

८५५ माइ आज तो गोकुलगाम कैसो० २८०

... श्रवन सुन सजनी बाजे मंदि०(पद-सं.४४)

भोगसरे।

८५६ दान देत श्रीलछमन प्रमुदित मनि०२८०

शयन दर्शन।

... रावल के कहे गोप० (पद-सं.४५)

पोढबे में।

... धन रानी जसुमति गृह० (पद-सं.३०)

वैशाख कृ० ११. (श्रीमहाप्रभुजी को उत्सव)।

जागवे सूँ झाँझ पखावज सूँ कीर्तन होय।

८५७ श्रीवल्लभ ३ कृपानिधान अतिउदार० २८०

पद्-संख्या	पद्-प्रतीक	पृष्ठसंख्या
...	श्रीवल्लभ ३ गुन गाऊँ०	(पद-सं.१)
...	जागिये व्रजराजकुँवर०	(पद-सं.३)
...	छगन मगन प्यारेलाल०	(पद-सं.४)
...	जय जय श्रीसूरजा कलिंदनंदि०	(पद-सं.५)
...	आज बड़ो दरबार देख्यो०	(पद-सं.६)
...	माइ सोहेलो आज नंदमहरघर०	(पद-सं.७)
	मंगल भोग सरे।	
...	आज मंगलमंगलं०	(पद-सं.८)
	मगला दर्शन।	
...	नैन भर देखो नंदकुमार०	(पद-सं.९)
	शृंगार समय।	
...	व्रज भयो महर के पूत०	(पद-सं.१०)
...	प्रगटे श्रीवल्लभ निजनाथ०	(पद-सं.१५१)
...	आज गृह नदमहर के०	(पद-सं.४७६)
८५८	आज जगती पर जयजयकार०	२८१
...	जय श्रीलछमनसुवन नरेश०	(पद-सं.१५४)
...	जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने०	(पद-सं.२०८)
	३५ तुक	
...	यह सुख देखोरी०	(पद-सं.१६)
	पादुकाजी कूं पंचामृत हाय तब।	
...	आपुन मंगल गावे०	(पद-सं.११)
...	सब मिल मंगल गावो माइ०	(पद-सं.१२)
	राजभोग आये।	
...	मंगलमंगलं०	(पद-सं.२११)
...	जयति भट्टलछमनतनुज०	(पद-सं.२१२)
...	प्रगट्या ए मा श्रीवल्लभदेव०	(पद.सं.२१३)
...	सब ग्वाल नाचे गोपी गावे०	(पद-सं.५२)
...	श्रीलछमन गृह महामंगल०	(पद-सं.७५)
८५९	धन्य माधवमास कृष्णा०	२८१
...	भूतल महा महोत्सव०	(पद-सं.२१५)
...	जसोदारानी सोवन फूलन०	(पद-सं.६०)
...	जय श्रीलछमन राजकुमार०	(पद-सं.८३०)
...	आज महामंगल महराने०	(पद-सं.५६)
...	नंद बधाई दीजे हो ग्वालन०	(पद-सं.५५)
...	नंदजू तिहारे आयो पूत०	(पद-सं.५४)
...	जोपे श्रीवल्लभ रूप न जाने०	(पद-सं.२०८)
	छल्ली तुक राखनी।	
...	भयो यह श्रीवल्लभ अवतार०	(पद-सं.२१९)
८६०	वल्लभ भूतल प्रगट भये०	२८१
८६१	जब तैं वल्लभ भूतल प्रगटे०	२८१
...	भागन वल्लभ जनम भयो०	(पद-सं.२२१)
८६२	प्रगट भये प्रभु श्रीमद्वल्लभ व्रज०	२८१
...	भागन वल्लभ भूतल आये०	(पद-सं.२२३)
...	श्रीवल्लभ श्रीलछमनगृह०	(पद-सं.४७५)
८६३	फल्यो जन भाग्य पथपुष्टि०	२८२
८६४	तत्व गुन बान भुवि माधवासित०	२८२
८६५	सुखद माधवमास०	२८२
८६६	कांकरवारे तैलंगतिलक द्विज०	२८३
	भोगसरे।	
...	पलना। झूलो पालने गोविंद०	(पद-सं.६४)
८६७	श्रीवल्लभलाल पालने झूले०	२८३
...	माइ री कमलनैन स्यामसुंद०	(पद सं.६८)
...	तुन व्रजरानी के लाला०	(पद-सं. ७१)
...	ढाढी। हौं व्रज माँगनो जू०	(पद-सं.२०)
...	नंदजू मेरे मन आनन्द भयो०	(पद-सं.२१)
८६८	ढाढी श्रीलछमन राजकुमार०	२८३
...	हौं जाचक श्रीवल्लभ तिहा०	(पद-सं.२२८)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

... नन्दजू तिहारे सुख दुख० (पद-सं.२२)

थापा दै तब।

८६९ आनन्द आज भयो जगती पर० २८४

राजभोग दर्शन।

... एहो ए आज नन्दराय० (पद-सं.२४)
... नन्दमहोच्छव हो बड कीजे० (पद-सं.५८)
... आज बधाई को दिन नीको० (पद-सं.१३)
... तुम जो मनावत सोइ दिन० (पद-सं.५९)
... जोपे श्रीवल्लभ रूप न जाने०(पदसं०२०८)

की छट्ठी तुक।
भोग के दर्शन।

... सब मिल गावो गीत बधाई० (पद सं०१२)
... जोपे श्रीवल्लभ प्रगट न होत०(पद-सं.७६२)
... नांतर लीला होती जूनी० (पद-सं.८२)

संध्या समय।

... मेरे मन आनन्द भयो० (पद-सं.२७)

शयनभोग आये।

... श्रीलछमनगृह प्रगट भये हैं० (पद-सं.८४)
... भक्तिसुधा बरषत ही प्रगटे० (पद-सं.८३)
... प्यारे हरि को विमल यश० (पद-सं.३२)
... गावत गोपी मधु० (पद-सं.३१)
... श्री लछमनवर ब्रह्मधाम० (पद-सं.२३२)
८७० श्रीलछमनकुलचंद उदति० २८४
... हरि जनमत ही आनन्द भयो०(पद-सं.३५)
... आनन्द बधावनो० (पद-सं.३६)
८७१ प्रभु श्रीलछमन गृह प्रगट भये २८४
... जनम लियो शुभ लग्न० (पद-सं.३७)

भोगसरे।

८७२ जप तप संयम नेम धर्म व्रत० २८५

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शयन दर्शन।

... यह धन धर्म ही तें पायो यह०(पद सं.३३)
... तिहारो घर सुबस बसो० [पद-सं.७२]

पोढवे में। उत्सव के कीर्तन।

वैशाख कृ० १२. क्रम भाद्र. कृष्ण १० के समान।

८ दिन तक बाललीला गावे।

वैशाख कृ० १३. (श्रीपुरुषोत्तमजी के उत्सव की बधाई) आश्विन-कृष्ण ९ के समान।

वैशाख शु० १. (श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव)

मंगला दर्शन।

... आज बधाई मंगलचार० [पद-सं.७४]

और आश्विन कृ० १३ के समान।

वैशाख शु० ३. (अक्षयतृतीया)

मंगला दर्शन

८७३ भोर भये देखो श्रीगिरिधर को० २८५

शृंगार समय।

... करमोदक माखन मिश्री० [पद-सं.२३५]
... कहा अब ओछी ह्वै जैहैं० [पद-सं.२३६]
८७४ आजु मोहिं आगम अगम जनायो०२८५
८७५ आजु गोपाल पाहुने आये आ० २८५
८७६ मज्जन करत गोपाल चौकी पर० २८५
८७७ भोग-शृंगार मैया सुन मोकों० २८६

शृंगार दर्शन।

८७८ धरयो हरि श्वेत पिछोरा ललित० २८६

राजभोग आये।

... परोसत गोपी घूँघट मारे [पद-सं.५३५]
... परोसत पाहुनी ज्योनारे० [पद-स.५३६]
... चित्र सराहत० [पद-सं०५३७]
... मोहन जेंवत० [पद-सं.५३८]

भोग सरे।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
८७९ बैठे लाल कुंजन में जो पाउँ० २८६
चंदन धरें तब झाँझ पखावज सूँ।
८८० अक्षयतृतीया अक्षय लील नवरंग० २८६
उत्सव भोग आये।
८८१ अक्षयतृतीया अक्षय शुभदिन० २८६
८८२ अक्षयतृतीया शुभ दिन नीको० २८७
८८३ आज बने नँदनदन री नव चंदन० २८७
८८४ आज बने नँदनंदन री नव० २८७
राजभोग दर्शन।
८८५ बागो बन्यो बामना चंदन को० २८७
भोग आये झाँझ नहीं।
८८६ चन्दन को बागो बन्यो चन्दन० २८७
संध्या समय।
८८७ पिछोरा खासा को कटि बाँधे० २८८
शयन भोग आये।
८८८ लाडिली लाल राजत रुचिर कुंज० २८८
८८९ सुखद यमुनापुलिन सुखद नव० २८८
दूसरे भोग आये।
८९० हँसिहँसि दूध पीवत नाथ० २८८
शयन दर्शन।
८९१ मेरे घर आओ नंदनंदन० २८८
पोढवे में उत्सव कीर्तन।
वैशाख शु० ४ मंगला दर्शन।
... धरयो हरि श्वेत पिछोरा० (पद-सं.८७८)
शृंगार समय।
८९२ घूमत रतनारे नैन सकल निसि० २८९
८९३ क्योंऽब दुरत हो प्रगट भये० २८९
शृंगार दर्शन
८९४ हौं वारी डारों री व्रजईश सीस० २८९
पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
राजभोग दर्शन।
८९५ सखि सुगंधजल घोर के० २८९
भोग के दर्शन।
... आज बने नँदनंद री नव० (पद-सं.८८३)
संध्या आरती सूँ शयन तक वैशाख
शु० ३ के समान।
पोढवे में।
८९६ पोढिये लाल निवास अटारी २९०
वैशाख शु० ११. (श्रीद्वारकेशजी के उत्सव की
बधाई।) क्रम आश्विन
कृ० ६ के समान।
वैशाख शु० १३. वैशाख बदी १० के समान।
वैशाख शु० १४ (श्रीद्वारकेशजी को उत्सव
तथा नृसिंह जयन्ती)
मंगला दर्शन।
... आज बधाई मंगलचार० (पद-सं.७४)
फेर आश्विनी कृष्ण १३ के समान।
पंचामृत समय। राग कान्हरा की
अलापचारी।
८९७ यह व्रत माधो प्रथम लियो० २९०
उत्सव भोग आये
८९८ तौलौं हौं वैकुण्ठ न जैहौं० २९०
८९९ कहा पढ़यो प्रह्लाद दुलारे० २९०
९०० अपनो जन प्रहलाद उबारयो० २९१
९०१ हरि राखे ताहि डर काको० २९१
९०२ जाको तुम अंगीकार कियो० २९१
शयन दर्शन।
९०३ श्रीनृसिंह भक्तभयभंजन० २९१
... यह धन धर्म ही तैं पायो० (पद-सं.३३)
... तिहारो घर सुबस बसो० (पद-सं.७२)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

पोढवे मे उत्सव के कीर्तन ।

ज्येष्ठ कृ० ५. छप्पन भोग । चैत्र कृष्ण १० के समान

ज्येष्ठ शु० ४. श्रीव्रजनाथजी के उत्सव की बधाई ।

आश्विन कृष्ण ६ के समान ।

ज्येष्ठ शु० ७. श्रीव्रजनाथजी को उत्सव ।

मंगला दर्शन ।

··· आज बधाई मंगलचार [पद-सं. ७४]

आश्विन कृष्ण १३ के समान ।

ज्येष्ठ शुक्ल १० गगा दशमी ।

मंगला दर्शन ।

९०४ आगे आगे भाज्यो जात भगीरथ० २९२

शृंगार समय ।

९०५ नमो देवी यमुने० अष्टपदी २९२
९०६ परमेश्वरी देव-मुनि-वंदित देवी० २९३
९०७ गंगे तैं त्रिभुवन जस छायो० २९३

शृंगार दर्शन ।

९०८ ग्वालिनि कृष्ण दरस सों अटकी २९३

राजभोग आये ।

९०९ हरिजू कों ग्वालिन भोजन० २९३
९१० लाल गोपाल है आनँदकंद २९३
९११ बाँट बाँट सबहिन कों देत० २९४
९१२ जमुनातट भोजन करत गोपाल० २९४

भोगसरे ।

९१३ भोजन कीनो री गिरिधरवर० २९४
··· बैठे लाल कालिंदीके तीरा०(पद-सं०३९१)

राजभोग दर्शन ।

९१४ मेरो लाल गंगा कोसो पान्यो २९४
९१५ जमुनातट नवनिकुंज द्रुमदल० २९४

भोग के दर्शन ।

९१६ अंग अनंगन रंग रस्यो० २९५

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

९१७ बैठे घनस्यामसुन्दर खेवत है नाव० २९५

संध्या समय ।

९१८ जमुनाजल खेवत है हरि नाव २९५

शयन-भोग आये अक्षयतृतीया के समान ।

शयन दर्शन ।

९१९ रति सुख सारे, धीर समीरे यमुनातीरे० अष्टपदी २९५

मान । पोढवे में ।

९२० बोलत चल व्रजराज लाडिले० २९६
९२१ नवलकिशोर नवलनागरिया० २९६

ज्येष्ठ शुक्ल ११ मंगला दर्शन ।

९२२ जमुनापुलिन सुभग वृंदावन० २९६

आज सूँ स्नानयात्रा तक सब समय
पनघट के कीर्तन होयँ

ज्येष्ठ शु० १४.

मंगलादर्शन ।

९२३ प्राणपति बिहरत श्रीयमुनाकूले० २९६

शृंगार समय ।

९२४ जमुना जल घट भर चली चंद्रा० २९७
९२५ मोहि जल भरन दे जमुना को० २९७

शृंगार दर्शन ।

९२६ आवतही जमुना भर पानी । साँवरे० २९७

राजभोग दर्शन

९२७ आवत ही जमुना भर पानी० २९७

भोग के दर्शन ।

९२८ भरि-भरि धरि-धरि आवत गागर० २९७

संध्या समय ।

९२९ साँवरो देखत रूप लुभानी० २९७

शयन भोग आये ।

९३० यह कोन टेव तिहारी कन्हैया० २९८

पद्-संख्या पद्-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

९३१ आवत सिर गागर धरे भरे जमुना० २९८

भोगसरे ।

९३२ कबते चली यह रीत रहत पनघट० २९८

शयन दर्शन ।

९३३ हों जल कों गई री लुघट० २९८

मान पोढ़वे में ।

९३४ नागरी बेग चलो प्यारी० २९८
नवलकिशोर नवलनागरिया० (पद-सं. ९२१)

ज्येष्ठ शु० १५.(स्नानयात्रा) श्री के जागवे सूँ कलेवा के कीर्तन तक तमूरा।
पीछे झाँझ-पखावज बजे ।

९३५ श्रीजनुनाजी तिहारो दरस० २९९

मगल भोग सरे ।

··· मंगल मंगलं० (पद-सं. ८)

मंगला दर्शन ।

··· मंगल आरतीं गोपाल की० (पद-सं.४६३)

स्नान के दर्शन ।
राग बिलावल की अलापकारी

९३६ मंगलज्येष्ठ ज्येष्ठा पून्यो करत० २९९
९३७ ज्येष्ठ मास पून्यो ज्येष्ठा को करत० २९९
९३८ ज्येष्ठ मास शुभ पून्यो शुभ दिन० २९९
९३९ पूरन मास पूरन तिथि श्रीगिरिधर० ३००

शृंगार समय ।

··· नमो देवी यमुने० [पद-सं. ९०५]
९४० नमो तरनितनया परम पुनीत० ३००
९४१ श्री जमुनाजी दीन जान मोहि० ३००
९४२ अधमउधारनी में जानी० ३००
९४३ यह प्रसाद हों पाऊँ० ३०१

पद्-संख्या पद्-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

९४४ शरन प्रतिपाल गोपाल रति० ३०१
९४५ तुमसी और न कोई० ३०१
९४६ श्रीयमुनाजी पतित पावन करे० ३०१
९४७ नेह कारन प्रथम यमुने आई० ३०२
९४८ कालिंदी महाकलिमलहरनी० ३०२
९४९ पिय सग भरि रंग करि कलोले० ३०२
९५० नैन भरि देख अब भानुतनया० ३०२
··· प्राणपति विहरत श्री यमुना०(पद-सं.९२३)
९५१ स्याम सुखधाम जहाँ नाम इनके० ३०२
९५२ कहत श्रुतिसार निरधार करके० ३०३
९५३ यमुनासी नाहिन कोउ और दाता ३०३
९५४ स्याम संग स्याम ह्वै रही श्रीयमुने० ३०३
९५५ जमुना जस जगत में जाय गायो० ३०३
९५६ चरनपंकज रेन यमुने जु देनी० ३०३
९५७ धायके जाय जे यमुना तीरे ३०३
९५८ जा मुख ते यमुने यह नाम आवे० ३०४
९५९ धन्य श्रीयमुने निधिदेनहारी० ३०४
९६० गुन अपार मुख एक कहाँ लों० ६०४
९६१ चित्त में यमुना निसदिन राखों ३०४

शृंगार दर्शन ।

९६२ कोन की उपरनी ओढ़ आये० ३०४

राजभोग आये ।
तमूरा सूँ कीर्तन होय ।

... पीत उपरना वारे ढोटा क० (पद-सं.३८४)
... यमुनातट भोजन करत गो०(पद-सं.९१२)
... बाँट बाँट सबहिन कों देत० (पद-सं.९११)
... लाल गोपाल है आनँद० (पद-सं.९१०)

पद-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
	भोग सरे ।	
...	बैठे लाल कुंजन मे जो०	(पद-सं.८७९)
...	बैठे लाल कालिंदी के ती०	[पदसं.३९१]
	राजभोग दर्शन ।	
९६३	करत गोपाल जमुनाजल क्रीड़ा०	३०५
	भोग के दर्शन ।	
९६४	जमुनाजल गिरिधर करत विहार ०	३०५
	संध्या समय ।	
९६५	यमुनातट देखे नंदनंदन०	३०५
	शयन दर्शन।	
९६६	जमुनाजल विहरत हैं श्याम०	३०५
	पोढवे मे उत्सव के कीर्तन ।	
	आषाढ़ कृ० ६. (श्रीद्वारकेश;लालजी को उत्सव)	
	खसखाना को मनोरथ ।	
	मंगला दर्शन ।	
...	आज बधाई मंगलचार०	[पद-सं.७४]
	शृंगार समय ।	
...	बहुरि कृष्ण श्रीकुल०	[पद-सं.१५०]
...	प्रगटे श्रीवल्लभ निजनाथ०	[पद-सं.१५१]
...	बेदवचन प्रतिपाल्यो०	[पद-सं.१५२]
...	अबके द्विजवर ह्वै सुख०	[पद-सं१५३]
	शृंगार दर्शन ।	
९६७	प्रगट भये तैलंगकुलदीपक०	३०५
	राजभोग आये ।	
...	श्रीलछमनगृह महामंगल०	[पद-सं.७५]
...	सुभ बैसाख कृष्ण एकादशी०	[पद-सं.७६]
...	गोवल्लभ गोवर्धनवल्लभ०	[पद-सं.७९]
९६८	गायन सों रति०	३०६
	राजभोग दर्शन ।	
९६९	सुन्दर तिवारो खसखाने को०	३०६
९७०	उसीर-भवन छायो सुमन०	३०६
९७१	वृंदावन कुंजन में मधि खसखा०	३०६
...	बैठे घनश्याम सुंदर खेवत०	[पद-सं.९१७]
...	आज बधाई को दिन नीको०	[पद-सं.१३]
	उत्थापन भोग सरे फूल के सिंगार के भाव के कीर्तन ।	
	भोग के दर्शन ।	
९७२	देखोरी मोहन पनघट पर ठाडो०	३०६
	भोग संध्या समय ।	
९७३	फूल के भवन गिरिधर नवल०	३०७
	संध्या समय ।	
९७४	कृपा रस नयन कमलदल फूले०	३०७
	शयन भोग आये ।	
...	भक्ति सुधा बरषत ही०	[पद-सं.८३]
...	श्री विट्ठलनाथ बसत जिय०	(पद-सं.१५७)
...	गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के०	(पद-सं ८७)
...	श्री लछमनगृह प्रगट भये हैं०	(पद-सं.८४)
	भोग सरे ।	
...	आज धन भाग हमारे०	(पद-सं.८६)
	शयन दर्शन ।	
...	तिहारो घर सुबस बसो०	(पद-सं.७२)
९७५	बैठे ब्रजराजकुँवर प्यारी संग०	३०७
९७६	चारु नटभेष धर बैठे गोविंद०	३०७
	पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।	
	आषाढ़ शु०१. (रथयात्रा को प्रथम दिन)	
	शृंगार समय ।	
	राग भैरव की रागमाला ।	
९७७	संग त्रियन वन में खेलत रवि०	३०८
९७८	मेरे तन की तपत बुझाई०	३०८
९७९	नई ऋतु आई माई परम सुहाई०	३०८

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शृंगार दर्शन।

९८० मुरली मन मोद बढ़ावत० ३०८

राजभोग दर्शन।

९८१ सारंग गावत सारंग नैनी० ३०९

संध्या समय।

... सारगनैनी री काहे को० (पद-स.४२८)

भोग के दर्शन।

९८२ मदनमोहन पिय गावत राग० ३०९

शयन दर्शन।

... ए मन मान मेरो कह्यो० (पद-स.५३२)

आषाढ़ शु० २, (रथयात्रा)

मंगला दर्शन।

... मंगल आरती गोपाल की० (पद-सं.४६३)

शृंगार समय।

... करमोदक माखन मिश्री० (पद-सं.२३५)

... कहा ओछी ह्वै जैहै जात० (पद-सं.२३६)

... आओ गोपाल सिंगार बना० (पद-स.३५७)

... भोग सिंगार मैया सुन० (पद-स.८७४)

शृंगार दर्शन।

.. आज और काल और० (पद-स.७३८)

राजभोग आये। अक्षयतृतीया के समान।

भोगसरे।

९८३ बैठी अटा मानो० ३०९

राजभोग दर्शन। झाँझ पखावज सूँ।

९८४ देवी के द्वार ते निकसी देवी० ३०९

आज सूँ सवेरे 'सुवा सुघराइ' के तथा साँझ कूँ सोरठ के कीर्तन।

रथ में पधारते समय झालर-घंटा-शंख बजे, तब राग बिलावल की आलापचारी।

पहिले दर्शन खुले।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

९८५ तुम देखो माई आज नैनभर० ३०९

भोग आये।

९८६ देखो देखो नैनन को सुख० ३१०

९८७ रथ चढ़ि चलत जसोदा अँगना ३१०

९८८ ब्रज में रथ चढ़ि चले गोपाल० ३१०

९८९ जसोदा रथ देखन को आई ३११

दूसरे दर्शन।

९९० रथ बैठे गिरधारी। राजत परम० ३११

भोग आये।

९९१ तू मोहि रथ ले बैठ री मैया० ३११

९९२ रथ बैठे मदनगोपाल० ३११

९९३ रथ चढ़ि डोलूँगो० ३१२

९९४ रथ बैठे गोपाल० ३१२

तीसरे दर्शन।

९९५ प्रगट प्रेम की फाँस परी हरि० ३१२

भोग आये। आज्ञा माँग के राग मल्हार की आलापचारी।

९९६ रथ बैठे गिरधारी। वाम भाग० ३१२

९९७ रथ बैठे नँदलाल० ३१३

९९८ रथ बैठे ब्रजनाथ० ३१३

९९९ रथ चढि जादोपति आवत ३१३

चौथे दर्शन।

१००० लाल माई खरे विराजत आज. ३१३

१००१ जय श्रीजगन्नाथ हरि देवा. ३१३

१००२ वा पटपीत की फहरान. ३१४

आरती समय।

... जसुमति तिहारो घर सुबस. (पद-सं.७२)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

श्री ठाकुरजी मन्दिर मे पधारें, तब तक होय ।

भोग के दर्शन । तमूरा सूॅ ।

१००३ आयो आगम नरेश देश-देश में. ३१४

संध्या समय ।

१००४ गाय सब गोवर्धन तें आई ३१४

शयन भोग आये ब्यारू के कीर्तन ।

शयन दर्शन ।

१००५ सुन्दर बदन री सुखसदन स्याम. ३१४

पौढवे मे उत्सव के कीर्तन ।

आषाढ़ शु० ३. (रथयात्रा के दूसरे दिन ।)

मगला दर्शन ।

१००६ तुम देखो माई रथ बैठे जदुराय. ३१५

राजभोग दर्शन ।

१००७ पावऋतु आगम जान आये नि. ३१५

आषाढ़ शु० ५ (श्रीद्वारकाधीश को पाटोत्सव) ।

मगला दर्शन ।

... आज गृह नन्दमहर के बधाई.(पद-सं.४७६)

शृ गार समय ।

... व्रज भयो महर के पूत. (पद-सं.१०)

... जनम फल मानत जसोदा. (पदसं०१७)

... यह सुख देखो री तुम माई. (पद-सं.१६)

... नैनभर देखो नन्दकुमार. (पद सं.९)

राजभोग आये ।

... नन्द तिहारे आयो पूत० (पद-सं.५४)

... नन्द बधाई दीजे हो ग्वालन. पद-सं.५५)

... आज महामगल महराने. (पद-स.५६)

... नन्द बधाई बाँटत ठाड़े. (पद सं.८४७)

राजभोग दर्शन ।

... एहो ए आज नन्दराय के. (पद-सं.२४)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

भोग के दर्शन ।

... आज बधावो श्रीव्रजराज के. (पद-सं.८५१)

संध्या समय ।

... मेरे मन आनन्द भयो. (पद-स.२७)

शयन भोग आये ।

... हरि जनमत ही आनन्द. (पद-सं.३५)

... आज तो आनन्द माइ. (पद-सं.३९)

... जनम लियो शुभ लगन. (पद-सं.३७)

शयन दर्शन ।

... यह धन धर्म ही ते पायो (पद-सं.३३)

... जसुमति तिहारो घर सुबस. (पद-स.७२)

मान पौढवे मे । उत्सव के कीर्तन ।

आषाढ शु० ६ (कसूॅभी छठ) ।

मंगला दर्शन ।

१००८ ठाड़े रहो अँगना हो पिय. ३१५

शृंगार समय ।

... कर मोदक माखन मिश्री. (पद-स.२३५)

... कहा ओछी ह्वै जैहै जात. (पद-सं.२३९)

१००९ मिष्टपिंडरू फल प्राप्त. ३१५

१०१० सुद अषाढ़ मिष्टपिंडरू० ३१६

१०११ कारी घटा सुखकारी. ३१६

१०१२ लाल माई बाँधे कसूँभी पाग. ३१६

शृंगार दर्शन ।

१०१३ नीके आज लागत लाल सुहाये० ३१६

राजभोग दर्शन ।

१०१४ व्रज पर नीकी आज घटा हो० ३१७

भोग के दर्शन

१०१५ देखो सखि ठाड़े नंदकिशोर० ३१७

संध्या समय ।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

१०१६ भवन मेरो कैसो लागत नीको० ३१७

शयन दर्शन।

१०१७ कुंजमहल के आँगन मध्यपिय० ३१७

मान पोढवे मे।

१०१८ रंगमहल ठाड़े पिय पाछे प्यारी० ३१७
१०१९ पहेरे कसूँभी सारी बैठी पियसँग० ३१८

आषाढ़ शु० ११. (देवशयनी)।

शृंगार समय

१०२० रूप सरोवर साजे० ३१८
१०२१ प्रसन्न भये हो लाल दियो० ३१८

शृंगार दर्शन।

१०२२ सजल दल-बादर-दल देखियत० ३१८

राजभोग दर्शन।

१०२३ आई जू श्याम जलद घटा० ३१९

भोग के दर्शन।

१०२४ स्यामघटा जुर आई० ३१९

संध्या समय।

... गाय सब गोवर्धन ते आई. (पद-सं.१००३)

शयन दर्शन।

१०२५ राधे रूप की घटा० ३१९

मान पोढवे में।

१०२६ कौन करे पटतर तेरी गुन रूप० ३१९
१०२७ सघन घटा घनघोर० ३१९

आषाढ़ शु० १५. मंगला दर्शन।

१०२८ हों जगाइ माई बोल बोल इन० ३२०

शृंगार समय।

१०२९ एरी माइ घन मृदंग रस भेद० ३२०
१०३० बाजत मृदंग उघटत सुधंग ३२०

शृंगार दर्शन।

१०३१ नाचत लाल त्रिभंगी रस भरे० ३२०

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राजभोग दर्शन।

१०३२ वृंदावनभुवि कुंदादिकयुत० ३२०
१०३३ नागर नंदलाल कुँवर मोरन० ३२०

भोग के दर्शन।

१०३४ इनि मोरन की भाँति देख नाचे० ३२१

संध्या समय।

१०३५ नाचत मोरन संग श्याम मुदित० ३२१

शयन दर्शन।

१०३६ माईरी श्यामघन तन दामिनी० ३२१

मान।

१०३७ प्यारी के गावत कोकिला० ३२१

श्रावण कृ० १ (हिंडोरा विराजै वा दिन)।

मंगला दर्शन।

... ठाड़े रहो अंगना० (पद-सं.१००८)

शृंगार समय।

... कर मोदक माखन-मिश्री० (पद-सं.२३५)
... कहा ओछी ह्वै जैहै जात० (पद-सं.२३६)

तथा बाललीला के भाव के कीर्तन।

शृंगार दर्शन।

१०३८ जहाँ तहाँ बोलत मोर सुहाये० ३२१

राजभोग दर्शन।

१०३९ गोपाल माई फेरत है चकडोर० ३२२
१०४० लालसिर फबी कसूँभी पाग० ३२२

संध्या-आरती भीतर होय तब नित्य हिंडोराविजय तक।

१०४१ लटकत चलत युवती सुखदानी० ३२२

हिंडोरा मे पधारते समय राग धनाश्री की आलापचारी होय।

हिंडोरा में भोग आये पे। राग धनाश्री।

१०४२ हिंडोरना हो रोप्यो नंदआवास० ३२२

पद्–संख्या	पद्-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
	राग जेतश्री।	
१०४३	दंपति झूलत सुरंग०	३२४
	भीगसरे भीतर झूले तब।	
१०४४	माइ झूलें कुँवरी गोपरायनकी०	३२५
	हिंडोरा दर्शन। राग मलार की आलापचारी।	
१०४५	झूलन आइ व्रजनारि०	३२४
१०४६	माइ तेसोइ वृंदावन०	३२४
१०४७	रंग मच्यो सिंहद्वार०	३२५
१०४८	झूलत सुरंग हिंडोरे राधामोहन०	३२५
	।शयन-दर्शन तमूरा सों।	
१०४९	सेन काम की लायो सो सावन०	३२५
	पोढ़वे में उत्सव के कीर्तन।	
	जन्माष्टमी की बधाई बैठे तब तक नित्त सबेरे सूँ हिंडोरा तक झाँझ पखावज बजे सेन में तमूरा बजे।	
	श्रावण कृष्ण ५. (श्रीजन्माष्टमी की बधाई)	
	मगला दर्शन।	
…	नैन भर देखो नंदकुमार०	(पद-सं. ९)
	शृंगार समय टीकेत तथा मुखियाजी जगमोहन में आवे फेर पुस्तक के तिलक होय कीर्तनियान के तिलक होय महाप्रसाद मिले फेर बधाइ गवे।	
…	व्रज भयो महर के पूत०	(पद-सं.१०)
…	आज गृह नंदमहर के बधाइ	(पद-सं.४७६)
…	जनमफल मानत जसुदा माय०	(पद-सं.१७)
…	यह सुख देखोरी तुम माइ०	(पद-सं.१६)
	ग्वाल बोले।	
…	आज नंदजू के द्वारे भीर०	(पद-सं.५१२)
	ग्वाल के दर्शन मे झाँझ-पखावज-सहित रीत के ५ पलना।	
…	झूलो पालने गोविंद०	पद-सं.६४)
…	अपने री बाल गोपाल	(पद-सं. ६५)

पद्-संख्या	पद्-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
…	माइ कमलनैन श्यामसुंदर०	(पद-सं. ६८)
…	तुम ब्रजरानी के लाला०	(पद-सं.७१)
	राजभोग आये।	
…	जुर चलीहे बधावन नंदमहर०	(पद-सं.८३१)
	राजभाग दर्शन।	
…	(एहो ए)आज नंदरायके आनंद	(पद-सं.२४)
	हिंडोरा-समय गोविद स्वामी के हिंडोरा रीत के शयन भाग आये।	
…	प्यारे हरि को विमल यश०	(पद-सं.३२)
…	गावत गोपी मधु मृदु बानी०	(पद.सं.३१)
…	आनद बधावना०	(पद-सं.३६)
…	हरि जन्मत हो आनद भयो	(पद-सं.३५)
	शयन दर्शन।	
…	यह धन धर्म ही ते पायो०	(पद-सं.३३)
	पोढ़वे में उत्सव के कीर्तन।	
	श्रावण कृष्ण १० (श्रीबालकृष्णलालजी को उत्सव की बधाई) क्रम आश्विन कृष्ण ६ के समान और हिंडोरा रीत के।	
	श्रावण कृष्ण १३. (श्रीबालकृष्णलालजी को उत्सव)	
	दुहेरो मंडान।	
	मगला दर्शन।	
…	आज बधाइ मंगलचार०	(पद-सं.७४)
१०५०	बाले माइ गोवर्धन पर मुरवा०	३२५
	शृंगार दर्शन।	
…	व्रज भयो महर के पूत०	(पद-सं.१०)
…	बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल प्रग०	(पद-सं.१५०)
	चहुँ जुग वेद वचन प्रतिपा०	(पद-सं.१५२)
…	श्रीगोकुल घरघर अति०	(पद-सं.७५९)
…	अबके द्विजवर ह्वै सुख०	(पद-सं.१५३)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

तथा मलार के सेहरा कै भी ४ कीर्तन

राजभोग आये बधाइ ८

राजभोग सरे ।

१०५१ प्रगटे श्रीबालकृष्ण सुजान० ३२५
१०५२ भयो श्रीविट्ठल के मनमोद० ३२६

राजभोग दर्शन ।

··· (एहो ए) आज नंदराय के० (पद-सं.२४)
१०५३ सावन दूल्हे आयो० ३२६
१०५४ रंगमहल रंगराग० ३२६

आरती समय ।

··· आज बधाइ को दिन नीको (पद-सं. १३)

संध्या समय ।

··· लटकत चलत० (पद-सं.१०४१)

फेर चोकड़ा ।

१०५५ हेम हिंडोरना० ३२६
१०५६ रसिक हिंडोरना० ३२७

हिंडोरा के दर्शन ।

१०५७ हिंडोरे अब झुलत है लाल० ३२७
१०५८ ए दोउ रीझे भीजे झूलत ३२८
१०५९ झूलत दुलहे दुलहिन संग लिए ३२८
१०६० स्यामाजु दुलहिन दूल्हे हो० ३२८

फेर चारों रीति के हिंडोरा ।

शयन-भोग आये बधाइ ८

शयन-भोग सरे बधाइ २

हिंडोरा सेहरा के २

शयन दर्शन ।

··· यह धन धर्म ही ते पायो० (पद-सं.३३)
१०६१ नवललाल को सेहरो० ३२८
१०६२ ओलर आइ हो घनघटा हिंडोरे० ३२८

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

··· जसुमति तिहारो घर सुबस० (पद-सं. ७२)

मान पोढ़वे मे उत्सव के कीर्तन २

तथा सेहरे के भाव के २

श्रावण कृष्णा ३० (हरियाली अमावस)

शृंगार समय ।

१०६३ सखीरी हरियारो सावन आयो० ३२९
१०६४ यह पावस ऋतु आइ० ३२९
१०६५ देखो माइ हरियारोसावन आयो० ३२९
१०६६ हरयो टिपारो सीस विराजत० ३२९

शृंगार दर्शन ।

१०६७ सीस टिपारो धरे० ३३०
१०६८ मदनमोहन वन देखत अखारो० ३३०

राजभोग दर्शन ।

१०६९ पावस नट नट्यो अखारो० ३३०

हिंडोरा के दर्शन ।

१०७० झूले माइ गोकुलचंद हिंडोरे ३३०
१०७१ हिंडोरे माइ झूलत गिरवरधारी० ३३०
१०७२ हिंडोरे नीकी आज रमकी० ३३१
१०७३ सोहत बन आयो री सावन० ३३१

श्रावण शु० ३ ((ठकुरानी तीज)

मंगला दर्शन ।

१०७४ कहो तुम कौन हो कहाँ ते आये० ३३१

शृंगार समय ।

··· ब्रज भयो महर के पूत (पद-सं. १०)
१०७५ चल बर कुंजन बरषत मेह. ३३१
१०७६ सुरंग चूनरी प्यारी पचरंग. ३३१
१०७७ गायो है मलार धुन सुन आइ ३३१
१०७८ लाल मेरी सुरंग चूनरी० ३३२

पद-संख्या पद प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शृंगार दर्शन ।

१०७९ सावन तीज हरियारी सुहाइ० ३३२

राजभोग दर्शन ।

१०८० श्याम सुन नियरे आयो० ३३२
१०८१ चूनरी पाग और चूनरी पिछोरा. ३३२

हिंडोरा में उत्सव भोग आये ।

१०८२ निज सुख पुंज वितान कुंज० ३३२
१०८३ सावन की तीज हिंडोरे झूले० ३३३

हिंडोरा दर्शन ।

१०८४ तीज महातम आयो० ३३३
१०८५ रंगहिंडोरना प्यारीजू झूलन० ३३४
१०८६ रंगहिंडोरना झूलत राधा सब. ३३४
१०८७ राधेजू झूलत रमक-रमक० ३३४

शयनभोग आये ।

१०८८ तीज सुनि आये हैं हरि मेरे० ३३४
१०८९ बालआलिन की मंडली फूली. ३३४
१०९० सुदी सावन हरियारी तीज० ३३५
१०९१ झूलत रसिक लाडिली सघन० ३३५
१०९२ रमक झमक झूलन में झमक० ३३५
१०९३ सघन कुंज परछाँह प्रीतम० ३३५
१०९४ झूलत दोऊ कुंज-कुटीर० ३३५
१०९५ नवल लाल पिय के सँग झूलन. ३३६
१०९६ ए दोउ झूलत हैं बाँह जोरे० ३३६
१०९७ ब्रज के आँगन माँच्यो हिंडोरो० ३३६
१०९८ झूलत मोहन रंग भरे० ३३६

शयन दर्शन ।

१०९९ यमुनातट नव सघन कुंज में० ३३६
११०० सो तू राख ले री झोटा तरल० ३३७

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

मान पोढवे में ।

... कुंज महल के आँगन मध. (पद-सं. १०१७)
१२०१ घनघटा आइ घूमघूमके न्हेनी० ३३७

श्रावण शुक्ल ४. मंगला दर्शन ।

११०२ आवत लाल लाडिली फूले० ३३७
११०३ झूलत कुंजन कुंजकिशोर० ३३७

शृंगार दर्शन

११०४ घुमड़ घुमड़ घटा आई झूम० ३३७

यदि झूलें तो ।

११०५ झूलो तो सुरत हिंडोरे झुलाउँ. ३३८

श्रावण शुक्ल ११. (पवित्रा एकादशी)

मंगला दर्शन

... आज गृह नंदमहर के बधाई. (पद-सं. ४७६)

शृंगार समय ।

... ब्रज भयो महर के पूत० (पद-सं. १०)

शृंगार के दर्शन में पवित्रा धरे तो ।

राग सारंग की अलापचारी ।

११०६ पवित्रा पहरे श्रीगिरिधरलाल० ३३८
११०७ पवित्रा पहरे श्रीगिरिधरलाल० ३३८
११०८ पवित्रा पहरे श्रीगिरिधरलाल० ३३८
११०९ पहरत पाट पवित्रा मोहन० ३३९

पवित्रा धरे पीछे खिलोनान सूँ खेलै तब बहोत जल्दी

... ब्रज भयो महर के पूत (पद-सं. १०)

राजभोग आये । राग सारंग की बधाई ।

राजभोग दर्शन ।

... (एहो ए) आज नंदराय के० (पद-सं. २४)

हिंडोरा दर्शन । गोविंद स्वामी के चारों हिंडोरा रीत के पद ।

शयन भोग आये ।

... प्यारे हरि को विमल यश० (पद-सं. ३२)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

... गावत गोपी मधु-मृदु बानी० (पद-सं.३१)
... आनंद वधावनो० (पद-सं.३६)
... हरि जन्मत ही आनंद भयो. (पद-सं.३५)

शयन दर्शन।

... यह धन धर्म ही ते पायो० (पद-सं.३३)

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

साँझ कूँ पवित्रा धरे तो भी पवित्रा के कीर्तन राग सारंग में गवे।

खेल को कीर्तन राग देवगंधार में।

श्रावण शुक्ल १२. हिंडोरा दर्शन राग कान्हरा।

... यमुनातट नव सघन कुंज. (पद-सं.१०९९)
१११० झूलत तेरे नैन हिंडोरे० ३३८
११११ ब्रजयुवतिन के यूथ में० ३३९
१११२ हिंडोरे माय झूलत री नँदनंद. ३३९

शयन दर्शन।

१११३ दिपत दिव्य दरबार श्रीव्रजराज०३३९
१११४ बाल झुलावन आइझूले नवल० ३४०

श्रावण शु० १५. (राखी को उत्सव)

मंगला दर्शन।

... आज गृह नदमहर के बधाई.(पद-स.४७६)

शृंगार समय।

... व्रज भयो महर के पूत० (पद-सं.१०)
... आपुन मंगल गावे० (पद-स. ११)
... सबै मिल मंगल गावो माइ० (पद-सं.१२)

शृंगार दर्शन।

... यह सुख देखो री तुम माइ० (पद-सं.१६)

शृंगार मे राखी धरै तो रागसारंग की अलापचारी।

१११५ मात यशोदा राखी बाँधत बल० ३४०

राखी धरै पीछे खिलोनान सूँ खेलैं तब बहोत जल्दी।

... झूलो पालने गोविंद० (पद-स.६४)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

... अपने री बालगोपाल रानी० (पद-सं.६५)
... माइ कमलनैन स्यामसुन्दर० (पद-स.६८)
... तुम ब्रजरानी के लाला० (पदसं.-७१)

साँझ कूँ राखी धरै तो भी ये सब कीर्तन इन्ही रागन में होंय।

राजभोग आये।

१११६ आज हौं नन्दे जाचन आइ० ३४०

राजभोग दर्शन।

... (एहो ए) आज नँदराय के० [पद-सं २४]

हिंडोरा दर्शन। राग अडाना।

१११७ सावन की पून्यो मनभावन हरि०३४१
१११८ भली करी आये प्रीतम प्यारे० ३४१
१११९ सुघर रावर की गोपकुमार० ३४१
११२० गोपीजन गावे गीत राखी को० ३४२

शयन भोग आये।

... गावत गोपी मधु-मृदु बानी० [पद-सं.३१]
... प्यारे हरि को विमल यश० [पद-स.३२]
... आनन्द बधावनो० [पद-सं.३६]
... हरि जनमत ही आनन्द भयों.[पद-सं.३५]

शयन दर्शन।

... आठे भादों की अँधियारी० [पद-सं.४२]

ऐसी चार है, सो जन्माष्टमी तक नित्त एक गावनी।

११२१ यह सुख सावन में बनि आवे० ३४२

पोढवे में।

... धन रानी जसुमति गृह० [पद-सं.३१]

हिंडोरा विजय होंय तब गोविंद स्वामी के चारों रीत के पद।

आरती समय।

... जसुमति तिहारो घर सुबस० [पद-सं.७२]

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
जन्माष्टमी की बधाई में मुकुट धरैं तब।
शृंगार दर्शन।
... नंदराय के नवनिधि आइ० (पद-सं.४७७)
सेहरा धरैं तब। राजभोग आये।
... नंदरानी सुत जायो महर के०(पद-सं.८४१)
राजभोग दर्शन
११२२ रानीजू जीओ दूल्हे तेरो व्रज० ३४२
भोगसंध्या समय।
... हेरी-हेरी रे भैया हेरी रे हेरी०(पद-सं.८४३)
शयन भोग आये।
... हेरी-हेरी रे भैया हेरी रे० (पद-सं.८४४)
किरीट धरैं तब। मंगला दर्शन।
११२३ हरिमुख देखिए बसुदेव० ३४२
शृंगार समय।
११२४ प्रगटित मथुरा माँझ हरि० ३४३
११२५ जागी महर पुत्रमुख देख्यो० ३४३
११२६ आनँद ही आनंद बढ्यो अति० ३४३
शृंगार दर्शन।
११२७ कमलनैन शशिवदन मनोहर० ३४४
राजभोग आये।
... देखो अद्भुत अवगत की० (पद-सं.५१७)
... देवक उदधि देवकी सींप० (पद-सं.५१८)
११२८ आज बाबा नंदे जाचन आयो० ३४४
संध्या समय।
११२९ गोकुल में बाजत कहाँ बधाइ० ३४५
शयन भोग आये।
११३० जनम लियो जादोकुल राय० ३४५
शयन दर्शन।
११३१ देवकी मन-मन चकित भइ० ३४६

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या
टिपारा धरैं तब। शयन-भोग आये।
११३२ महा निस आठे भादों की० ३४६
पगा धरैं तब। शृंगार समय।
११३३ जनम सुत को होत ही आनंद० ३४८
राजभोग आये।
... आज बाबा नंदै जाचन० (पद-सं.११२८)
११३४ आँगन दधि को उदधि भयो० ३५०
राजभोग दर्शन।
११३५ हों वृषभान को मगा० ३५०
११३६ हों व्रजवासिन को मगा० ३५०
फेटा धरैं तब। भोग के दर्शन।
११३७ एरी सखि प्रगटे कृष्णमुरारी० ३५०
दुमाला धरैं तब। शृंगार समय।
११३८ प्रथमहि भादों मास अष्टमी० ३५२
भाद्र० कृष्णा ७ (छट्ठी को उत्सव)
मंगला दर्शन।
११३९ माइ सोहिलो आज नंदमहर० ३५४
शृंगार समय।
... आज वन कोउ वे जिन जाय०(पद-सं.१५)
११४० लाल को जन्मद्योस दिन आयो० ३५४
ग्वाल के दर्शन।
... झूलो पालने गोविंद० (पद-सं.६४)
... अपने बाल गोपाल० (पद-सं.६५)
... माइ री कमलनैन स्यामसुन्दर०(पद-सं.६८)
... तुम व्रजरानी के लाला० (पद-सं.७१)
राजभोग आये।
... नंद बधाइ दीजे हो ग्वालन० (पद-सं.५५)
... ग्वाल बधाइ माँगन आये० (पद-सं.८४८)
... नंद बधाइ बाँटत ठाड़े० (पद-सं.८४९)

पद-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
११४१	सब मिलि ग्वालिनि देत०	३५५
···	नंद वृषभान के हम भाट०	(पद-सं.८५०)
···	श्रीव्रजराज के हम ढाढी०	(पद-स.८५१)
	राजभोग दर्शन ।	
···	सब ग्वाल नाचे गोपी गावे०	(पद-सं.५२)
	भोग के दर्शन ।	
···	रानीजू जायो पूत सुलच्छन०	(पद-सं.२५)
···	आज अति बाढ्यो है अनु०	(पद-सं.८५२)
	संध्या समय ।	
···	आज बधावो श्रीव्रजराज०	(पद-सं.८५३)
	शयन भोग आये ।	
···	आज छठी जसुमति के सुत ०	(पद-सं.४८)
···	मंगलघोस छटी को आयो०	(पद-सं.४९)
···	यह धन धर्म ही ते पायो०	(पद-सं.३३)
···	गावत गोपी मधु-मृदु बानी०	(पद-सं.३१)
···	प्यारे हरि को विमल यश०	(पद-सं.३२)
···	ऐसो पूत देवकी जायो०	(पद-सं.३४)
···	हरि जन्मत ही आनंद भयो०	(पद.सं.३५)

पद-संख्या	पद-प्रतीक	पृष्ठ-संख्या
···	अहो पिय सो उपाय कछु०	(पद-सं.५२१)
···	जनम लियो शुभ लगुन०	(पद-सं.३७)
··	आज तो आनंद माइ आज०	(पद-सं.३९)
···	आनन्द बधावनो०	(पद-सं.३६)
···	रंग बधावनो०	(पद-सं.३८)
···	माई आज तो गोकुलगाम०	(पद-मं.८५५)
···	जसोदे बधाइयाँ०	(पद-सं.४६)
···	श्रीगोपाललाल गोकुल चले०	(पद-सं-४७)
···	भादो की अति रैन अँधियारी०	(पद-सं.४०)
···	अँधियारी भादो की रात०	(पद-सं.४१)
···	भादों की रैन अँधियारी०	(पद-सं.४३)
···	श्रवन सुन सजनी बाजे०	(पद-स.४४)
	शयन दर्शन ।	
···	रावरे के कहे गोप०	(पद-सं.४५)
···	आठें भादों की अँधियारी०	(पद-सं.४२)
	पोढ़वे मे ।	
···	धन रानी जसुमति गृह०	(पद-सं.३०)

ग्रहण की रीति

सबेरे मंगलभोग आरोग के जो ग्रहण के दर्शन होयँ तो माहात्म्य के पद नही गावे प्रथम—

··· **मंगल मंगलं०** (पद-सं.८)

गाइ के फेर ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने। राजभोग आरोग के जो ग्रहण के दर्शन खुले तो राजभोग आरती को कीर्तन गायके फेर—

··· चक्र के धरनहार गरुड़ के० (पद-सं.७४०)

११४२ जाको वेद रटत ब्रह्मा० ३५६

गाय के पीछे ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने। शयनभोग आरोग के जो ग्रहण के दर्शन होयँ तो प्रथम राग मालव में।

··· मोहन नन्दराजकुमार० (पद-सं.२८)

११४३ पद्म धरयो जन ताप० ३५६

११४४ बंदौं धरन गिरिवर भूप० ३५६

··· चरनकमल बदौं जगदीश० (पद सं.४२२)

गाइ के ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने। दिवाली के दिन ग्रहण होय तो साँझ कूँ शयन के दर्शन में।

११४५ गाय खिलावन खिरक चले री० ३५६

११४६ गाय खिलाय आये नँदनन्दन० ३५७

फेर जा दिन कान गवे ता दिन दिवाली की रीत मुजब सब कीर्तन होयँ अन्नकूट नहीं होय तहाँ तक अन्नकूट के कीर्तन गवे, इद्रकोप के अन्नकूट होय पीछे सात दिन तक गवे।

शीतकाल-संबंधी रीति

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

टिपारा

लाल रंग के वस्त्र को टिपारा धरै तब

राजभोग-दर्शन ॥

११४७ देखो सखी सुंदरता को पुंज ३५७

भोग के दर्शन।

११४८ नाचत गावत बनते आवत० ३५७

संध्या समय।

११४९ आज लाल टिपारे छबि अति० ३५७

शयन दर्शन।

११५० आवत मदनगोपाल त्रिभगी० ३५८

पीले रंग के वस्त्र को टिपारा धरै तब

संध्या समय।

११५१ आवत ब्रज कों री गोधन संगे० ३५८

माणिक और जड़ाऊ को टिपारा धरै तब

भोग के दर्शन।

... गोधन पाछे-पाछे आवत है०(पद-सं० ३९७)

संध्या समय।

११५२ आज बने बनते आवत गोपाल० ३५८

और कोई जात को टिपारा धरै तब

राजभोग दर्शन।

११५३ विमल कदम्ब-मूल अवलम्बित० ३५८

अथवा

११५४ नवल निकुंज महल रसपुंजमे० ३५९

भोग के दर्शन।

११५५ गायन सों पाछे-पाछे काछनीसों० ३५९

अथवा

११५६ राधे तेरे नैन किधों० ३५९

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

संध्या-समय।

११५७ चद्रमा नटवा री साँझ समय० ३५९

२ किरीट—

किरीट धरै तब राजभोग दर्शन।

११५८ आज अति शोभित है नँदलाल० ३५९

भोग के दर्शन।

... देखो सखी राजत है० [पद-सं. ७४२]

इन दोनो में सूँ कोई भी एक राजभोग
और भोग मे गावनो।

अथवा भोग के दर्शन।

११५९ सोहत गिरिधर मुख मृदुहास० ३६०

संध्या समय।

... बेन माइ बाजत री बंसीबट (पद-सं. ७४३)

३ दुमाला—

पीलो दुमाला धरै तब

राजभोग-दर्शन।

११६० अधिक रजनी मानी हो नँदलाल ३६०

अथवा

११६१ ए दोउ एक रंग रंगे गहरे रंग० ३६०

रंग-विरंगी दुमालो धरैं तब

११६२ अति छबि बन्यो दुमालो सीस० ३६०

दुपेची अथवा खिरकीदार पाग धरै तब

राजभोग दर्शन।

११६३ आये हो जु अलसाने जो ए हम० ३६०

भोग के दर्शन।

११६४ सोहत सुरँग दुरंग पाग० ३६१

अथवा

११६५ लाडिलो ललित लाल वारी हों० ३६१

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

५ केसरी पाग, बागा—

केसरी पाग और बागा धरें तब ।

राजभोग दर्शन ।

११६६ आज बने मोहन रँगभीने० ३६१
११६७ अरुन दृगन की शोभा० ३६१

६ पाग—

लाल पाग धरै तब ।

भोग के दर्शन ।

... सोहत लाल पाग० (पद-सं.४२३)

श्याम पाग धरै तब ।

राजभोग दर्शन ।

११६८ स्याम लग्यो संग डोले० ३६१

शयन दर्शन ।

११६९ मेरे जीवन सुजान कान्ह० ३६१
११७० तेरे अंग श्याम सारी सोहे० ३६२

७ घटा—

सफेद घटा होय तब ।

राजभोग आये ।

११७१ जेंवत दोऊ रंग भरे० ३६२
११७२ गोपवधू अपनी सौंज बनाइ० ३६२
११७३ जेंवत श्रीवृषभान नन्दिनी० ३६२
११७४ दोऊ मिल जेंवत कंचनथारी० ३६३

राजभोग दर्शन ।

११७५ आधो मुख नीलांबर सों ढांप्यो० ३६३

पीली घटा होय तब ।

राजभोग आये सफेद घटा समान

राजभोग दर्शन ।

११७६ पीरे पटवारो अँग-अँग को है० ३६३
११७७ ठाडो री खिरक मांह कोन को० ३६३

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

हरी घटा होय तब ।

राजभोग आये सफेद घटा समान

राजभोग दर्शन ।

११७८ माइ मेरो हरि नागर सों नेह० ३६३

भोग के दर्शन

११७९ सोहत हरित कंचुकी० ३६४

लाल घटा होय तब ।

राजभोग आये सफेदघटा समान

राजभोग दर्शन ।

११८० गोकुल की पनिहारिन पनियाँ० ३६४

श्याम घटा होय तब ।

शृंगार दर्शन ।

... जागे हो रैन तुम सब नैना. (पद-सं.४६२)

राजभोग आये ।

११८१ रानीजू एक बचन मोहि दीजे० ३६४
११८२ जसोदा एक बोल जो पाऊँ० ३६४
... आज गोपाल पाहुने आए० (पद-सं.३६५)
... बल गई स्याम मनोहर गात.(पद-सं.३६३)

राजभोग दर्शन ।

११८३ ए कहूँ उमड़-घुमड़ गाजत हो० ३६५

भोग के दर्शन ।

११८४ मीठी-मीठी बतियाँ० ३६५

शयन दर्शन ।

११८५ अरी सखी सुन्दर श्याम सलो० ३६५

मान पोढवे मे ।

११८६ मनावन आए मनाय नहिं जाने० ३६५
११८७ पोढे श्यामाजू सुख सेज० ३६५

श्याम घटा होय वाके दूसरे दिन ।

राजभोग दर्शन ।

११८८ जैसो स्याम नाम तैसो तन-मन० ३६५

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

शयन दर्शन।

११८९ पिय तेरी चितवन में कछु टोना० ३६६

८ सेहरा—

सेहरा धरें तब।

शृंगार दर्शन।

... न्याय दीन दूल्हे हो नँद० (पद-सं.४६८)

राजभोग दर्शन।

... दिन दूल्हे मेरो कुँवर० (पदसं०४८०)
... राधेजू नवदुलही, दूल्हे मद०(पद-सं.४७२)

भोग के दर्शन।

... आज बने व्रजराज कुँवर० (पद सं.४१९)
११९० बसो मेरे नैनन में यह जोरी० ३६६
११९१ आज बने दूल्हे श्रीव्रजराज० ३६६

संध्या समय।

... राधाप्यारी दुलहिनीजू० (पद-सं.४७३)

शयन दर्शन।

... जुगलवर आवत है गठजोरे. (पद-सं.४७४)

मान पोढ़वे में।

... राय गिरिधरन सँग राधिका.(पद-सं.३२०)
... स्यामाजू दुलहिनी० (पद-सं.३२१)

सेहरा धरें वाके दूसरे दिन।

मंगला दर्शन।

... न्याय दीन दूल्हे हो नँद० (पद-सं.४६८)

अथवा।

... चिरियन की चुहुचान सुन. (पद-सं.४६९)

९ मोरचन्द्रिका—

शयन मे श्रीमस्तक पर मोरचंद्रिका धरै तब।

शयन के दर्शन।

११९२ गिरधरलाल बने रँग भीने० ३६६

१० वर्षा में—

बादर बरसते होय वा दिन।

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

राजभोग दर्शन।

११९३ माइ मेरो बहु नायक सों नेह० ३६६

११ सफेद जरी की पाग पर मोरचन्द्रिका धरै तब।

राजभोग दर्शन।

... पाछली रात परछाँइ पातन. (पद-स.४६०)

नित्य सेवा के अविशिष्ट कीर्तनों की सूची—

वर्षा ऋतु—जागवे के।

११९४ उमडि घूमडि बादर आयेरी० ३६७
११९५ घूमड़ि रहे बादर सगरी निसा० ३६७

कलेउ के।

११९६ बूंदन झर लायो० ३६७

छाक के।

११९७ आरोगत मोहन मंडल जोरे० ३६७
११९८ आरोगत नागर नन्दकिसोर० ३६७
११९९ चहुँदिस टपकन लागी बूंदे० ३६७
१२०० मोहन जेंवत छाक० ३६७

भोग सरवे के।

१२०१ भोजन भयो लाल० ३६८

बीरी के।

१२०२ पान मुख बीरी राची० ३६८

व्रतचर्या सीतकाल मे –

१२०३ हरि जस गावत चली० ३६८
१२०४ बसन लिये चढि कदंब० ३६८

आश्रय के।

१२०५ दृढ इन चरनन केरो० ३६८

साँझी के।

१२०६ मुरली वारे साँवरे० ३६९
१२०७ अरी तुम कौन हो री० ३६९
१२०८ लाडिले गुमानी देखत० ३६९

घैया के।

१२०९ जसोदा मथि-मथि ल्यावत घैया० ३६९
१२१० घैया पीवत सुन्दर स्याम० ३६९

राजा अंबरीष के सेव्य

❀ भगवान् श्रीद्वारकाधीश ✱

प्राकट्य-स्थान–विंदु सरोवर
(गुजरात, सिद्धपुर-पट्टण)

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी ने वि० सं० १५५२ में इस स्वरूप को कन्नौज
में प्राप्त कर दामोदरदास संभरवाले के माथे सेवार्थ
पधराये। पुष्टिमार्ग में महाप्रभु ने सर्वप्रथम
इस स्वरूप की राज-वैभव से
सेवा की है।

* श्री द्वारिकेशो जयति *

❀ श्रीद्वारकाधीश जी—तृतीय गृह के वर्ष भर के ❀

* कीर्तन प्रणाली के पद *

जन्माष्टमी* (भाद्र वद ८)

❀ जगायवे के समय के पद ❀ श्री महाप्रभुजी के पद ❀ राग भैरव ❀ श्री वल्लभ श्री वल्लभ श्री वल्लभ गुन गाऊँ। निरखत सुन्दर स्वरूप बरखत हरिरस अनूप द्विजवर कुल भूप सदा बल बल बल जाऊँ ॥१॥ अगम निगम कहत जाहि सुरनर मुनि लहें न ताहि सकल कला गुन निधान पूरन उर लाउँ। 'गोविंद' प्रभु नन्दनन्दन श्री लछमन सुत जगत वंदन सुमिरत त्रयताप हरत चरन रेनु पाऊँ ॥२॥ ❀१❀ जय जय श्रीवल्लभ प्रभु श्री विट्ठलेस साथे। निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे। दोस सबै दूर करत भक्तिभाव हृदय धरत काज सबै सरत सदा गावत गुन गाथे ॥ १ ॥ काहे कों देह दमत साधन कर मूरख जन विद्यमान आनन्द त्यज चलत क्यों अपाथे। 'रसिक' चरन सरन सदा रहत हैं बड़भागी जन अपुनो कर गोकुल पति भरत ताहि बाथे ॥ २ ॥ ❀ २ ❀ जागिये ब्रजराज कुंवर कमलकोस फूले। कुमुदिनी जिय सकुचि रही भृङ्गलता भूले ॥१॥ तमचर खग करत रोर बोलत बन मांही। रांभत गऊ मधुर नाद बच्छन हित धाई ॥२॥ विधु मलीन रवि प्रकास गावत ब्रजनारी। 'सूर' श्री गोपाल उठे आनन्द मंगलकारी ॥३॥ ❀३❀ कलेऊ के ❀ राग भैरव ❀ छगन मगन प्यारे लाल कीजिये कलेवा। छीकें पर सगरी दधि ऊखल चढि उतार धरी पहरि लेहु झगुलि फेंट बांध लेहु मेवा ॥१॥ ग्वालन संग खेलन जाओ खेलन मिस भूख लागे कौन परी प्यारे लाल निस दिन की टेवा। 'सूरदास' मदनमोहन घरहि खेलो प्यारे लाल भौंरा चक डोर देहों हंस और परेवा ॥२॥

---

*श्री के जागवे सूं झाँझ पखावज सूं कीर्तन होय।

❀ ४ ❀ श्री यमुनाजी के ❀ राग भैरव ❀ जय जय श्री सूरजा कलिन्दनन्दिनी। गुल्मलता तरु सुवास कुंद कुसुम मोद मत्त, गुंजत अलि सुभग पुलिन वायु मंदिनी ॥१॥ हरि समान धर्मसील कान्ति सजल जलद नील, कटि नितंब भेदत नित गति उत्तंगिनी। सिक्ता जनु मुक्ता फल कंकन युत भुज तरंग कमलन उपहार लेत पिय चरन वंदिनी ॥२॥ श्रीगोपेन्द्र गोपी संग श्रम जल कन सिक्त अंग अति तरंगनी रसिक सुर सुफंदिनी। 'छीतस्वामी' गिरिवरधर नन्द नन्दन आनन्द कन्द यमुने जन दुरित हरन दुःख निकंदिनी ॥३॥ ❀५❀ ❀ राग भैरव ❀ आज बडो दरबार देख्यो नन्दराय तेरो। भयो सुख सबहि भांति दुःख गयो मेरो ॥१॥ बाजत निसान ढोल ढाढिन जगायो। सोवे कहा उठि न कंथ जसुमति सुत जायो ॥२॥ माँगन जे लिये जात भीख जो तिहारी। गायन के ठाठ लुटत भीर भई भारी ॥ ३ ॥ तेहि देखि लिये जात कीरति तिहारी। तिहुँलोक सुन्यो सुजस भयो अति भारी ॥४॥ सुमन फूलन फूली जसुमति रानी। जाके सर्वसु दिये वसुधा अघानी ॥ ५ ॥ अबलों मैं नेम लियो रह्यो बरसाने। लैहों भीख जब पूत ह्वैहै महराने ॥ ६ ॥ अबके महर मोहि माँगनो न कीजे। 'सूरदास' कहत मोकों दास पदवी दीजे ॥७॥ ❀ ६ ❀ राग रामकली ❀ माई सोहिलरा आज नन्द महर घर बाजे बाजे मंदलरा अनुपम गति। सखी सहेली मिल मंगल गावें मोतिन चोक पुरावे ऋषिवर वेद पढ़त ब्रह्मा सिव सुर मुनि नाचत सुरपति ॥१॥ भयो आनन्द तिहूँ पुर-पुर मंगल विप्र अभय कीने ब्रजपति। 'जगन्नाथ' प्रभु प्रगट भये हैं कूख सिरानी रानी जसुमति ॥ २ ॥ ❀७❀ मंगल भोग सरे ❀ राग बिभास ❀ मंगल मंगलंब्रजभुविमंगलं । मंगलमिहश्रीनंदयशोदा नामसुकीर्तनमेतद्रुचिरोत्संगसुलालितपालितरूपं ॥ १ ॥ श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वार्त जनाशयतापापहमितिमंगलरावं । ब्रजसुंदरी वयस्य सुरभीवृंद मृगीगणनिरुपमभावामंगलसिंधुचया ॥ २ ॥ मंगलमीषत्स्मितयुतमीक्षण भाषण

महरिजूकी कूख भागि सुहाग भरी । जिन जायो एसो पूत सब सुख फलन फरी । थिर थाप्यो सब परिवार मनकी सूल हरी ॥६॥ सुनि ग्वालन गाय बहोरि बालक बोलि लिये । गुहि गुंजा घसि वनधातु अंगअंग चित्र ठये । सिर दधि माखन के माट गावत गीत नये । मिलिझांझमृदंग बजावत सब नन्दभवन गये ॥७॥ एक नाचत करत कुलाहल छिरकत हरद दही । मानों बरखत भादोंमास नदी घृतदूध बही । जाको जहीं-जहीं चित जाय कौतुक तहीं तहीं । रस आनन्द मगन गुवाल काहू बदत नहीं ॥८॥ एक धाइ नंद जू पे जाय पुनि-पुनि पांय परे । एक दधि रोचन और दूब सबन के सीस धरे । एक आपु-आपुही मांझ हसि-हसि अंक भरे । एक अंबर सवहि उतार देत निसंक खरे ॥९॥ तब नन्द न्हाय भये ठाड़े अरु कुस हाथ धरे । घसि चंदन चारु मगाय विप्रन तिलक करे । नांदीमुख पितर पुजाय अंतर सोच हरे । वर गुरुजन द्विज पहराय सबनके पांय परे॥१०॥ गन गैया गिनी न जाय तरुन सुवच्छ बढ़ी । वे चरिहें जमुनाजू के तीर दूने दूध चढ़ी । खुर रूपे तांबे पीठ सोने सींग मढ़ी । ते दीनी द्विजन अनेक हरखि असीस पढ़ी ॥११॥ तब अपने मित्र सुबंधु हसि-हसि बोलि लिये । मथि मृगमद मलय कपूर माथे तिलक किये । उर मनिमाला पहराय वसन विचित्र दिये । मानों बरखत मास असाढ़ दादुर मोर जिये ॥१२॥ वर बंदी मागध सूत आंगन भवन भरे । ते बोले ले ले नाम हित कोउ ना बिसरे । जिन जो जाच्यो सो दीनों रस नन्दराय ढरे । अति दान मान परिधान पूरन काम करे ॥१३॥ तब अंबर और मगाय सारी सुरंग घनी । ते दीनी वधुन बुलाय जेसी जाय बनी । अति आनंदमगन बहुरि निजगृह गोप धनी । मिलि निकसी देत असीस रुचि अपुनी-अपुनी ॥१४॥ तब घर घर भेरि मृदंग पटह निसान बजे । वर बांधी बंदनमाल अरु ध्वज कलस सजे । तब तादिन ते वे लोग सुख संपति न तजे । सुनि 'सूर' सबन की यह गति जे हरिचरन भजे॥१५॥

❀ १० ❀ अभ्यंग समय ❀ राग धनाश्री ❀ आपुन मंगल गावे हो रानीजू । आज लालको जन्मद्यौस है मोतिन चोक पुरावे ॥१॥ गाम गाम ते जाति आपनी गोपिन न्योति बुलावे । अन्वाचार्य मुनिगर्ग परासर तिनपे वेद पढ़ावे ॥२॥ हरदी तेल सुगंध सुवासित लालैं उबटि न्हवावे । हरि तन ऊपर वारि नोछावर 'जन परमानन्द' पावे॥३॥ ❀११❀ राग धनाश्री ❀ मिलि मंगल गावो माइ । आज लाल को जन्मद्यौस है बाजत रंग बधाइ ॥१॥ आंगन लीपो चोक पुरावो विप्र पढ़न लागे वेद । करो सिंगार स्यामसुंदर को चोवा चंदन मेद ॥२॥ फूली फिरत नन्दजू की रानी आनंद उर न समाइ । 'परमानन्ददास' तिहि अवसर बहोत नोछावर पाइ ॥३॥ ❀१२❀ फेर तिलक के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ आज बधाई को दिन नीको । नन्दघरनि जसुमति जायो है लाल भामतो जीको ॥१॥ पंचसब्द बाजे बाजत घर घरते आयो टीको । मंगल कलस लिये ब्रजसुंदरि ग्वाल बनावत छीको ॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन जियो कोटि बरीसो । 'परमानन्ददास' को ठाकुर गोप भेख जगदीसो ॥३॥ ❀१३❀ राग धनाश्री ❀ जसोदा रानी जायो हो सुत नीको । आनंद भयो सकल गोकुल मे गोपवधू लाइ टीको ॥१॥ अक्षत दूब रोचनां मांथे नंदे तिलक दही को । अंचल वारि वारि मुख निरखत कमल नैन प्यारो जीको ॥२॥ अपने अपने भवनते निक्सी पहरे चीर कसूँभी को । 'यादवेन्द्र' गोकुल में प्रगटे कंसकाल भयभीको ॥३॥ ❀१४❀ दरशन होय चुके जगमोहन में ❀ राग देवगंधार ❀ आज वन कोउ वे जिनि जाय । सब गायन बछरन समेत तुम लाओ चित्र बनाइ ॥१॥ ढोटा हो व्रज भयो रायजु के कहत सुनाय सुनाय । चहुंदिस घोख यह कोलाहल उर आनंद न समाय ॥२॥ कितहो विलंब करत बिन काजे बेगि चलो उठि धाय । अपने अपने मन को चीत्यो नैनन देखो आय ॥३॥ एक फिरत दधि दूध देत है एक रहत गहि पाँय । एक वसन पट देत बधाई एक उठत हसि गाय ॥४॥ बाल वृद्ध

नरनारिन के मन भयो चोगुनो चाय। 'सूरदास' प्रमुदित व्रजवासी गिनत न राजा राय ॥५॥ ❀१५❀ राग देवगंधार ❀ यह सुख देखोरी तुम माइ । बरस गांठ गिरिधरन लाल की बहुरि कुसल सों आइ ॥१॥ आगम के दिन नीके लागत उर सुख लहरि उठाइ । एसी बात कहत व्रजसुंदरि अपअपने मन भाइ ॥२॥ फिर हंसि लेत बलाय कूख की जिहि जन्मे जु कन्हाइ । तुमरे पुत्र अहो नन्दरानी जु सब तन तपत बुझाइ ॥३॥ नन्दकुमार सकल या व्रज में आनन्दबेलि बढ़ाइ । 'श्री विट्ठल गिरिधरनलाल' निधि सबहिन भूखे पाइ ॥४॥ ❀१६❀ राग देवगंधार ❀ जनम फल मानत यसोदा माय । जब नन्दलाल धूरि धूसर वपु रहत कंठ लपटाय ॥१॥ गोद बैठि गहि चिबुक मनोहर बात कहत तुतराय । अति आनन्द प्रेम पुलकित तन मुख चूमत न अघाय ॥२॥ आरति चित विलोकि वदन विधु पुनि पुनि लेत बलाय । 'परमानन्द' मोद छिन-छिन को मोपे कह्यो न जाय ॥३॥ ❀१७❀ ❀ राग देवगंधार ❀ झगरिन तें हों बहोत खिजाइ । कंचन हार दिये नहिं मानत तूइ अनोखी दाइ ॥१॥ वेगहि नार छेदि बालक को जात है ब्यार भराइ । सत संयम तीरथ व्रत कीने तब यह संपति पाइ ॥२॥ करो बिदा घर जाऊ आपने कालि सांझ की आइ । 'सूरदास' प्रभु गोकुल प्रगटे भक्तन के सुखदाइ ॥३॥ ❀१८❀ राग देवगंधार ❀ जसोदा नाल न छेदन देहों । मनिमय जटित हार ग्रीवा को वह आज हों लेहों ॥१॥ ओरन के हैं सकल गोप मेरे एक भवन तिहारो । मिटि जो गयो संताप जनम को देख्यो नन्ददुलारो ॥२॥ बहोत दिनन की आसा लागी झगरिन झगरो कीनों । मन ही मन में हसत नन्दरानी हार हिये को दीनों ॥३॥ जाको नाल आदि-ब्रह्मादिक सकल विश्वसंसार । 'सूरदास' प्रभु गोकुल प्रगटे मेटन कों भुवभार ॥४॥ ❀१९❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ ढ़ाढ़ी ❀ हों व्रज मांगनो जू व्रज तज अनत न जाउं । बड़े-बड़े भुवपति राज लोकपति दाता सूर सुजान ।

कर न पसारों सीस न नाउं या व्रज के अभिमान ॥१॥ सुरपति नरपति नागलोकपति मेरे रंक समान । भांत भांत मेरी आसा पुजये व्रजजन सो जिजमान ॥२॥ बाबा मैं व्रत करि करि देव मनाये अपनी घरनी संयूत । दियो है विधाता सब सुखदाता गोकुलपति के पूत ॥३॥ बाबा हौं अपनो मन भायो लेहों कित बोरावत बात । औरन कों धन घन जों बरखत मो देखत हंसि जात ॥४।! अष्टसिद्धि नवनिधि मेरे मंदिर तुव प्रताप व्रजईस । कहत 'कल्यान' मुकुंद तात करकमल धरो मम सीस ॥५॥ ❀२०❀ राग धनाश्री ❀ नन्दजू मेरे मन आनंद भयो सुनि गोवर्धन ते आयो । तिहारे पुत्र भयो हों सुनि के अति आतुर उठि धायो ॥१॥ बंदीजन और भिक्षुक सुनि सुनि देस देस ते आये । एक पहले मेरी आसा लागी बहोत दिनन के छाये । ॥टेक॥ तुम दीने कंचन मनि मुक्ता नाना वसन अनूप । मोहि मिले मारग मे मानों जात कहूं के भूप ॥२॥ तुमतो परम उदार दानेश्वर जो मांग्यो सो दीनो । एसो और नाहिं त्रिभुवन में तुम सरता को कीनो ॥टेक॥ कोटि देहु तो परयो रहूंगो बिनु देखे नहि जाउं । नंदराय सुन बिनती मेरी सबै बिदा भरि पाउं ॥३॥ दीजे मोहि कृपाकर सोई जो हों आयो मांगन । रानी जसुमति सुत अपने पायन चलि खेलन आवे आँगन ॥टेक॥ मदनमोहन मैया कहि बोले यह सुन के घर जाउं । हों तो तिहारे घर को ढाढी 'सूरदास' मेरो नाउं ॥४॥ ❀२१❀ राग धनाश्री ❀ नन्दजू तिहारे सुख दुख गये सबन के देव पितर भलो मान्यो । तिहारे पुत्र प्रान सबहिन को भवन चतुर्दस जान्यो ॥१॥ हों तो तेरो वृद्ध पुरातन ढाढी नाम सुने सिर नाउं । गिरिगोवर्धन बास हमारो गिरि तजि अनत न जाउं ॥ टेक ॥ ढाढिन मेरी झांझ बजावे हों करताल बजाउं । मेरो चीत्यो भयो तिहारे जो मांगूँ सो पाउं ॥२॥ अब तुम मोकों करो अजाची ज्यों हों कर न पसारुं । द्वारे रहूं देहु एक मंदिर स्याम स्वरूप निहारुं ॥ टेक ॥ महाप्रसाद तिहारे घर को

बिन मागे हों पाउं । जब जब जन्म धरों ढाढी को जन्म कर्म गुन गाउं ॥३॥ ले ढाढिन कंचन मनि मुक्ता और वसन मन भाये । टोडर हेम पाटंबर अंबर ले ढाढिन पहराये ॥टेक॥ हसि बोली ढाढिन ढाढी सों अब कछु बरन बधाई । एसो दियो न देहे कोऊ जेसी जसुमति हों पहराई ॥४॥ हों पहरी पहर्यो मेरो ढाढी दान मान की अथाइ । नंद उदार भये पहरावत देत भले बनि आइ ॥टेक॥ बालक भलें भयो नारायन 'दास' निरख निधि पाइ । भक्ति करूं पालने झुलाऊं यह मन अनत न जाइ ॥४॥ ❀२२❀ राग धनाश्री ❀व्रजपति मांगिये जू दाता परम उदार । जाके हें बरही बर दीपे हाथी हाथ हजार । अगनित नग मनि वसन मुकुट सिर धरत न लागे वार ॥१॥ कामधेनु सुरपति की गैया सब कोऊ जाने एक । एसी बोलि बोलि विप्रन कूं दीनी ठाठ अनेक ॥२॥ जे नर करन कामना आये तेउ कल्पतरु कीन । तिन अपने घर बेठे ही बेठे फिर फिर अंबर दीन ॥३॥ तुमहि मांगि मांगि वो अजाची करत जाचक नित जात । भये पुरंदर चले पुरन कों फूले अंग न मात ॥४॥ तुमरे पुत्र भयो जग जान्यो दीने नाना दान । बोलों बिरद बिदा नहिं व्हेहों सुनिहो महर सुजान ॥५॥ जब तुमे तात मात यों कहिहै हँसि दैहै मोहि पान । तबहि उचित मन भायो लेहों नन्द महर की आन ॥६॥- मेंहरिया उर बास बसूंगो सदा करूं गुनगान । एक बार जो दरसन पाऊं हरिजू को जिजमान ॥७॥ दनुजदवन नंदभुवन प्रगट भये गर्ग बचन परमान । 'जगजीवन' घनस्याम मनोहर कृष्ण स्वयं भगवान ॥८॥ ❀२३❀ राजभोग के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ आज नन्दराय के आनन्द भयो । नाचत गोपी करत कुलाहल मंगलचार ठयो ॥१॥ राती पियरी चोली पहरे नौतन झूमक सारी । चोवा चन्दन अंग लगाये सेंदुर मांग समारी ॥२॥ माखन दूध दह्यो भरि भाजन सकल ग्वाल ले आये । बाजत बेन बखान महुवरी गावत गीत सुहाये ॥३॥

हरद दूब अच्छत दधि कुमकुम आंगन बाढी कीच। हसत परस्पर प्रेम मुदितमन लागलाग भुज बीच ॥४॥ चहूँ वेदध्वनि करत महामुनि पंच सब्द ढमढोल। 'परमानन्द' बढ्यो गोकुल में आनंद हृदे कलोल ॥५॥ ❀२४❀ भोग के दर्शन में तमूरा सूं ❀ राग पूरवी ❀ रानीजू जायो पूत सुलच्छन। विप्रन दान दिये मनि कंचन वधुअन कों पट दच्छन। ॥१॥ जनमत गयो घोख को नसिके सब संताप ततच्छन। 'सूरदास' प्रभु प्रगट भये हैं निज दासन के रच्छन ॥२॥ ❀२५❀ ❀ राग पूरवी ❀ कन्हैया कब चलिहै पायन चायन और कब कहै मोसों आओ माखन रोटी दे री मैया। कब जैहै वन गौ चरावन धरिहै बेन बखान महुवरी बोल लैहो बलभद्रजू सों भैया ॥१॥ सो दिन कब व्हैहै आलीरी बालकवृन्द मधि नायक सोभित और मथि पीवे घया। 'दास कल्यान' कुंवर गिरिधर को मुख निरखत अभिलाख होत जिय जसुमति लेत बलैया ॥२॥ ❀२६❀ संध्या आरती ❀राग गोरी❀ मेरे मन आनन्द भयो हौंतो फूली अंग न समाउं। सात साख को मेरो राजा जा घर बजत बधायो। देव कुसुम बरखत है नीके रानी जसुमति ढोटा जायो ॥१॥ हय गज हीर चीर नानारंग भादों झरी लगाइ। पुत्र भयो व्रजराज नृपति घर अष्टमहासिध आइ ॥२॥ आओरी मिलि सखी सुवासिन मिल साथिये धराई। भाभीजू सों झगरो कीजे आज भली बनि आई ॥३॥ बाजे महाघोर सों बाजत जसुमति पकर नचाइ। 'गरीबदास' कों बहो धन दीनों बहोत पंजीरी पाइ ॥४॥ ❀२७❀ राग मालव ❀ मोहन नन्दराय कुमार। प्रगटब्रह्म निकुंजनायक भक्त हित अवतार ॥१॥ प्रथम चरनसरोज वन्दों स्यामघन गोपाल। कनक कुंडल गंड मंडित चारुनयन बिसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला सेस संकर हेत। 'दास परमानन्द' प्रभु हरि निगम बोले नेति ॥३॥ ❀२८❀ ❀ राग मालव ❀ पद्म धरयो जनताप निवारन। चक्र सुदर्सन धरयो कमलकर भक्तन की रक्षा के कारन ॥१॥ संख धरयो रिपु उदर विदारन गदा धरी

दुष्टन संहारन । चारों भुजा चार आयुध धरे नारायन भुवभार उतारन ॥२॥ दीनानाथ दयाल जगतगुरु आरति हरन भक्त चिन्तामनि । 'परमानन्ददास' को ठाकुर यह औसर औसर छांडो जिनि ॥ ३ ॥ ❀ २९ ❀ ❀ जागरण के दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ धन रानी जसुमति गृह आवत गोपी जन । वासर ताप निवारन कारन वारंवार कमलमुख निरखन ॥१॥ पकरि देहरी उलंघनो चाहत किलकि किलकि हुलसत मन ही मन । राईलोन उतारि दुहूकर वारिफेर डारत तन मन धन ॥२॥ लेत उठाय लगाय हियो भरि प्रेम विवस लागे दृग ढरकन । ले चली पलना पोढावन लाल कों अरकसाय पोढे सुंदरघन ॥३॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजियो लाल जौंलों गंग जमुन । 'परमानन्ददास' को ठाकुर भक्तवत्सल भक्तन मन रंजन ॥ ४ ॥ ❀३० ❀ राग कान्हरा ❀ गावत गोपी मधु मृदु बानी । जाके भवन बसत त्रिभुवन पति राजानन्द यसोदारानी ॥ १ ॥ गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी । गावत गुन गंधर्व काल सिव गोकुलनाथ महातम जानी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जगनायक गावत सेस सहस्र मुखरासी । मन वच कर्म प्रीति पदअम्बुज अब गावत 'परमानन्ददासी' ॥३॥ ❀ ३१ ❀ राग कान्हरा ❀ प्यारे हरि को विमल यस गावत गोपांगना । मनिमयआंगन नन्दराय के बालगोपाल करे जहाँ रिंगना ॥ १ ॥ गिरि गिरि उठत घुटुरुबन टेकत जानु पानि मेरो छगन को मगना । धूसरधूर उठाय गोदले मात यसोदा के प्रेम को मगना ॥ २ ॥ त्रिपद भूमि मापी तब न आलस भयो अब जु कठिन भयो देहरी उलंघना । 'परमानंद' प्रभु भक्त वत्सल हरि रुचिरहार बर कंठ सोहे वघना ॥ ३ ॥ ❀ ३२ ❀ राग कान्हरा ❀ यह धन धर्म हीते पायो । नीके राख जसोदा मैया नारायन ब्रज आयो ॥१॥ जा धन कों मुनि जप तप खोजत वेदहू पार न पायो । सो धन धरयो क्षीरसागर मे ब्रह्मा जाय जगायो ॥ २ ॥ जा धन ते गोकुल सुख लहियत सगरे काज

संवारे । सो धन वारवार उर अंतर 'परमानन्द' विचारे ॥ ३ ॥ ❀ ३३ ❀
❀ राग कान्हरा ❀ एसो पूत देवकी जायो । चारों भुजा चार आयुध धरि
कंस निकन्दन आयो ॥१॥ भरि भादों अधरात अष्टमी देवकी कंत जगायो ।
देख्यो मुख वसुदेव कुंवर को फूल्यो अङ्ग न समायो ॥२॥ अब ले जाहु
बेगि याहि गोकुल बहोतभाँति समझायो । हृदय लगाय चूमि मुख हरिको
पलना में पोढ़ायो ॥३॥ तब वसुदेव लियो कर पलना अपने सीस चढ़ायो ।
तारे खुले पहरुवा सोये जाग्यो कोउ न जगायो ॥४॥ आगे सिंह सेस ता
पाछे नीर नासिका आयों । हूँक देत बलि मारग दीनो नन्द भवन में आयो
॥५॥ नन्द यसोदा सुनो बिनती सुत जिनि करो परायो । जसुमति कह्यो
जाउ घर अपने कन्या ले घर आयो ॥६॥ प्रात भयो भगिनी के मंदिर
प्रोहित कंस पठायो । कन्या भई कूखि देवकी के सखियन सब्द सुनायो ॥७॥
कन्या नाम सुन्यो जब राजा पापी मन पछतायो । करों उपाय कंस मन
कोप्यो राजा बहोत रिसायो ॥८॥ कन्या मगाय लई राजाने धोबी पटकन
आयो । भुजा उखारि ले गई उर ते राजा मन बिलखायो ॥९॥
वेदहु कह्यो स्मृति हू भाख्यो सो डर मन में आयो । 'सूर' के
प्रभु गोकुल प्रगटे भयो भक्तन मन भायो ॥ १० ॥ ❀ ३४ ❀
❀ राग कान्हरा ❀ हरि जन्मत ही आनन्द भयो । नवनिधि प्रगट भई नन्द द्वारे
सब दुख दूर गयो ॥१॥ वसुदेव देवकी मतो उपायो पलना मांझ लयो हो ।
जब ही कमलाकंत दियो हूंकारो यमुना पार भयो ॥२॥ नन्द जसोदा के
मन आनन्द गर्ग बुलाय लयो । 'परमानन्द दास' को ठाकुर गोकुल प्रगट
भयो ॥३॥ ❀३५❀ राग नायकी ❀ आनन्द बधावनो नन्द महरजू के धाम ।
वडभागिन जसुमति जायो है कमल नैन घनस्याम ॥१॥ बजत निसान
मृदंग ढोल रव मंगल गावत वाम । देत दान कंचन मनिभूसन धेनु बसन
लेले नाम ॥२॥ नाचत तरुन वृद्ध और बालक व्रज जन मन अभिराम ।

'हरिनारायण श्यामदास' के प्रभु माई प्रगटे हैं पूरन काम ॥३॥ ❀ ३६ ❀ ❀ राग नायकी ❀ जन्म लियो सुभ लगुन बिचार। कृष्णपक्ष भादों निस आठे नक्षत्र रोहिनी और बुधवार ॥१॥ संख चक्र गदा पद्म बिराजत कुंडल मनि उजियार। मुदित भये वसुदेव देवकी 'परमानन्ददास' बलिहार ॥२॥ ❀ ३७ ❀ राग नायकी ❀ रंग बधावनो हो ब्रज में श्रीब्रजराज के धाम। कृष्ण कमलदल नैन प्रगट भये मोहन मूरति पूरन काम ॥१॥ नाचत गावत नेह जनावत आई सब मिलि भाम। 'विचित्र' को प्रभु नैनन देख्यो सुन्दर घनतन स्याम ॥२॥ ❀ ३८ ❀ राग नायकी ❀ आज तो आनन्द माइ आज तो आनन्द माइ आज तो आनन्द। पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक सो आये गृह नन्द ॥१॥ गर्ग परासर और मुनि नारद पढ़त वेद श्रुति छंद। 'हरिजीवन' प्रभु गोकुल प्रगटे मिटे सकल दुख द्वन्द ॥२॥ ❀ ३९ ❀ राग कान्हरा ❀ भादों की अति रेन अंध्यारी। द्वार कपाट बाट भट रोके दिसदिस कंत कंस भय भारी ॥१॥ गरजत मेघ महा भय लागत बीच बड़ी जमुना अति भारी। सब तजि यह सोच जिय उपज्यो क्यों दुरि है ससिवदन उजारी ॥२॥ कित हों बचन बोल पति राखी वरहु जन काहु न समारी। देखो धों एसो सुत बिछुरत कहो कैसे जीवे महतारी ॥३॥ जब विलाप देवकी के मुख दीनबंधु दयाल भक्त हितकारी। छुटि गये निगड गये गो सुरपुर 'सूर' सुमति दे विपति विसारी ॥४॥ ❀ ४० ❀ राग कान्हरा ❀ अंधियारी भादों की रात। बालक कों वसुदेव देवकी पठें पठें पछतात ॥१॥ बीच नदी घन गरजत बरखत दामिनी आवत जात। बैठत उठत सेज सोवरि में कंस डरन अकुलात ॥२॥ गोकुल बजत सुनी बधाई सुनि ले कनहेर सिहात। 'सूरदास' प्रभु आनन्द गोकुल देत नन्द बहो दान ॥३॥ ❀ ४१ ❀ राग कान्हरा ❀ आठे भादों की अंधियारी। गरजत गगन दामिनी कोंधत गोकुल चले मुरारि ॥१॥ सेस सहस्र फन बूंद निवारत सेत छत्र सिर तानी। वसुदेव अंक

मध्य जगजीवन कहा करेगो पानी ॥२॥ यमुना पार भयो तिहि अवसर आवत जात न जान्यो। 'परमानन्ददास' को ठाकुर देव मुनिन मन मान्यो ॥३॥ ❀४२❀ ❀ राग कान्हरो ❀ भादों की रात अंधियारी। संख चक्र गदा पद्म बिराजत मथुरा जन्म लियो बनवारी ॥१॥ बोलि लिये वसुदेव देवकी बालक भयो परम रुचिकारी। अब ले जाहु याहि तुम गोकुल अधम कंस को मोहि डर भारी ॥२॥ सोवत श्वान पहरुवा चहुँदिस खुले कपाट गयो भय भारी। पाछे सिंह दहाड़त हूँकत आगे है कालिंदी भारी ॥३॥ तब जिय सोच करत ठाडे ह्वै अब विधि कहा विधाता ठानी। कमल नैन को जानि महातम जमुना भइ चरननतर पानी ॥४॥ पहोंचे है गृह नन्दमहर के जिनकी सकल आपदा टारी। 'गोविन्द' प्रभु बडभागि यसोदा प्रगटे हैं गोवर्धन धारी ॥५॥ ❀ ४३ ❀ राग विहाग ❀ श्रवन सुनि सजनी बाजे मंदिलरा आज निस लागत परम सुहाइ। अति आवेस होत तन मन में श्री गोकुल बजत बधाइ ॥१॥ देदे कान सुनत अरु फूलत रावल के नरनारी। नन्दरानी ढोटा जायो है होत कुलाहल भारी ॥२॥ आनन्द भरि अकुलाय चली सब सहज सुन्दरी गोपी। प्रादुर्भाव यसोदा सुत को जासों तनमन ओपी ॥३॥ अति ऊंचे चढ़ि चढ़ि के टेरत पसरि उठे सब ग्वाल। गैया बगदावो रे भैया भयो है नन्द जू के लाल ॥४॥ आय जुरे सब गोप ओपसों भयो सबन मन भायो। पंचामृत डारत सीसन ते नाचत गहि नचायो ॥५॥ मंगल साज सिंगार चंद मुखी चंचल कुण्डल हारा। हाथन कंचनथार रहे लसि पग नूपुर झनकारा ॥६॥ धनि दिन धनि यह राति आज की धनि धनि यह गोरी। स्यामसुन्दर चंदे निरखत मानों अंखिया तृषित चकोरी ॥७॥ नाचत सिव सनकादिक नारद हरद दही भरि राजे। इत निसान उत भेरी दुन्दुभी हरखि परस्पर बाजे ॥८॥ जा सुख कों ब्रह्मादिक इच्छत सो विलसत व्रज गेही। कहि 'भगवान हित रामराय'

प्रभु प्रगटे प्रान सनेही ॥ ९ ॥ ❋ ४४ ❋ राग विहाग ❋ रावरे के कहे गोप
आज व्रज दूनी ओप कान देदे सुना बाजे गोकुल में मंदिलरा । जसोदा
के सुत जायो वृखभान सचुपायो गोपी ग्वाल लेले धाये दूध दधि गगरा ॥१॥
आगे गोप वृन्द वर पाछे त्रिय मनोहर चलि न सकत काउ पावत न डगरा ।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरधारी को जनम भयो फूल्यो फूल्यो फिरे जहाँ नारद सो
भंवरा ॥२ । ❋४५❋ राग रायसा ❋ जसोदे बधाइयाँ बधाइयाँ जसोदे बधाइयाँ ।
नंदरानी दे लाल ऊपना सेस सनेह जिवाइयाँ ॥१॥ सजल चंदा रवि कीता
फूली अंग न माइयाँ । आज सबे सुखदानियाँ व्रज भीना सभी भलाइयाँ॥२॥
आनन्द भरियाँ सोहनियाँ सब गोपियाँ तो घर आइयाँ । पुत्र जायो जग
जीवना तेडे लागि बडाइयाँ॥३॥ तेडे भागि सुख होंदा सभी घोल घुमाइयाँ।
अमृतसार जौ लाधा एसी पुरियाँ केतिक मगाइयाँ ॥४॥ अखियाँ ठंडियाँ
सोहनियाँ ऐसी साधा सबे पुजाइयाँ। सुखी होए सुरनर मुनि मानो रंक
निधि पाइयाँ ॥५॥ दूध दही सिर पाँवड़े नाचे दे ग्वाला खेल मचाइयाँ ।
बड़भागी नंदजू दानदें मोहो मांगी ठकुराइयाँ ॥६॥ 'रामराय' प्रभु प्रगटिया
' भगवान लला ' मन भाइयाँ । जसोदे बधाईयाँ बधाईयाँ जसोदे बधाईयाँ
॥७॥ ❋ ४६ ❋ राग मारू ❋ श्री गोपाललाल गोकुल चले हों बलबल
तिहि काल । मोद भरे वसुदेव गोद ले अखिल लोक प्रतिपाल ॥१॥ तरनि
तेज तम फूटत जैसे खुलि गये कुटिल कपाट । महावेग बल छाँड़ि आपनो
दीनो श्रीयमुना वाट ॥२॥ हरखि हरखि फुंहि फूलसी बरखत अंबुद अंबर
छायो । अपनो निजवपु सेस जानि तहाँ बूंद बचावन आयो ॥३॥ भोर
भये कुमुदिनी ज्यों सकुची कंसादिक भये मोहे । संतजनन के मन अंबुज मानो
फूले डहडहे सोहे ॥४॥ अपनो निज सुख धाम जानि अभिराम तहाँ चलि
आये । 'नन्ददास' आनन्द भयो व्रज हरखित मंगल गाये ॥५॥ ❋४७❋
❋ छठी पूजा होय तब ❋ राग कान्हरा ❋ आज छठी जसुमति के सुत का चलो

बधावन माइ । भूसन वसन साज मंगल ले सबै सिंगार बनाइ ॥१॥ भली बात विधि करी वयस बड़ सुत पायो नन्दराइ । पूरन पुन्य सबे व्रजवासी घर घर होत बधाइ ॥ २ ॥ पूरन काम भये व्रजजन के जब ह्वै गई सगाई । 'परमानन्द' बात भइ मनकी मुद मरजादा पाई ॥३॥ ❀४८❀ राग कान्हरा ❀ मंगलद्यौस छठीको आयो । आनन्दे व्रजराज यसोदा मानो यह धन पायो॥ १॥ कुंवर कन्हाइ जायो जसोदा रानी कुल के देव के पाँय परायो । बहु प्रकार व्यंजन धरि आगे सब विधि भलो मनायो ॥ २ ॥ सब व्रजनारी बधावन आइ सुत कों तिलक करायो । जयजयकार होत गोकुल मे 'परमानन्द' यस गायो ॥३॥ ❀ ४९ ❀ महाभोग के दर्शन मे तमूरासूं ❀ राग रामकली ❀ ललना हों वारी तेरे या मुख पर । मेरी दृष्टि लगो जिनि माइ मसि बिंदुका दियो भ्रुव पर ॥१॥ सर्वस मैं पहले ही दीनो दतिया न्हेनी न्हेनी दूपर । अब कहा नोछावर करों 'सूर' सुनि ललित त्रिभंगी ऊपर ॥२॥ ❀ ५० ❀ ❀ पलना ❀ राग रामकली ❀ प्रेंखपर्यङ्क शयनं । चिरविरहतापहरमतिरुचिर मीक्षणं प्रकटय प्रेमायनं । ध्रुव० । तनुतरद्विजपंक्तिमतिललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम् । यदवधि परमेतदाशया समभवज्जीवितंतावकीनाम् ॥ १ ॥ तोकता वपुषि तव राजते दृशि तु मदमानिनीमानहरणम् । अग्रिमे वयसि किमु भाविकामेऽपि निज गोपिकाभावकरणम् ॥ २ ॥ व्रजयुवतिहृद्य कनकाचलानारोढुमुत्सुकं तव चरण युगलम् । तत्तु मुहुरुन्नमनकाभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मृदुल मृदुलम् ॥ ३ ॥ अधिगोरोचनातिलकमलकोद्ग्रथितविविधमणिमुक्ताफलविरचितम् । भूषणं राजते मुग्धतामृतभरस्यंदिवदनेन्दुरसितम् ॥४॥ भ्रूतटे मातृरचितांजनबिंदुरतिशयित शोभया दृग्दोषमपनयन् । स्मरधनुषि मधु पिवन्नलिराज इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ॥५॥ वचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्तिभरमपनयन् । पालय सदास्मानस्मदीय 'श्रीविट्ठले' निजदास्यमुपनयन् ॥ ६ ॥ ❀५१❀

❁नन्दमहोत्सव के दर्शन खुले ❁ राग सारंग❁ सब ग्वाल नाचे गोपी गावे । प्रेममगन कछु कहत न आवे ॥१॥ हमारे राय घर ढोटा जायो । सुनि सब लोग बधाये आयो॥ २ ॥ दूध दही घृत कावरि ढोरी । तंदुल दूब अलंकृत रोरी ॥३॥ हरद दूध दधि छिरकत अंगा । लसत पीतपट वसन सुरंगा ॥४॥ ताल पखावज दुंदुभी ढोला । हसत परस्पर करत कलोला ॥ ५ ॥ अजिर पंक गुलफ़न चढि आये । रपटत फिरत पग न ठहराये ॥ ६ ॥ वारिवारि पट भूषन दीने । लटकत फिरत महा रस भीने ॥ ७ ॥ सुधि न परे को काकी नारी । हसिहसि देत परस्पर तारी ॥ ८ ॥ सुर विमान सब कौतुक भूले । मुदित 'त्रिलोक' विमोहित फूले ॥ ९ ॥ ❁ ५२ ❁ राग सारंग ❁ आंगन नन्दके दधिकादो । छिरकत गोपी ग्वाल परस्पर प्रगटे जगमे जादो ॥ १ ॥ दूधलियो दधिलियो लियो घृत माखन माट संयूत । घरघरते सब गावत आवत भयो महर के पूत ॥ २ ॥ वाजत तूर करत कोलाहल वारिवारि दे दान । जियो जसोदा पूत तिहारो यह घर सदा कल्यान ॥ ३ ॥ छिरके लोग रंगीले दीसे हरदी पति सुवास । 'मेहा' आनंद पुंज सुमंगल यह ब्रज सदा हुलास ॥ ४ ॥ ❁ ५३ ❁ राग सारंग ❁ नंदजू तिहारे आयो पूत । खोलि भंडार अब देहु बधाइ तुमारे भाग अद्भूत ॥ १ ॥ लेले दधि घृत देहरि पखारो तोरन माल बँधाइ । कंचन कलस अलंकृत रतनन विप्रन दान दिवाइ ॥ २ ॥ विप्र सबे मिलि करत वेद धुनि हरखित मंगल गाये । सब दुख दूरि गये 'परमानन्द' आनन्द प्रेम बढाये ॥३॥ ❁ ५४ ❁ ❁ राग सारंग ❁ नन्द बधाइ दीजे हो ग्वालन । तुमारे स्याम मनोहर आये गोकुल के प्रतिपालन ॥ १ ॥ युवतिन बहु विधि भूषन दीजे विप्रन कों गोदान । गोकुल मंगल महामहोत्सव कमलनैन घनस्याम ॥ २ ॥ नाचत देव बिमल गंधर्व मुनि गावे गीत रसाल । 'परमानन्द' प्रभु तुम चिरजीयो नंदगोप के लाल ॥३॥❁५५❁राग सारंग❁ आज महामंगल महराने । पंच

सब्दध्वनि भीर बधाइ घर घर बे रखवाने ॥ १ ॥ ग्वाल भरे कावर
गोरस की वधू सिंगारत बाने । गोपी गोप परस्पर छिरकत दधि के माट
ढराने ॥ २ ॥ नाम करन जब कियो गर्ग मुनि नन्द देत बहु दाने । पावन
जस गावत 'कटहरिया' जाहि परमेश्वर माने ॥३॥ ❀ ५६ ❀ राग सारंग ❀
घर घर ग्वाल देत है हेरी । बाजत ताल मृदंग बांसुरी ढोल दमामा भेरी
॥१॥ लूटत झपटत खात मिठाइ कहि न सकत कोउ फेरी । उन्मद ग्वाल
करत कोलाहल ब्रज वनिता सब घेरी ॥ २ ॥ ध्वजा पताका तोरन माला
सबे सिंगारी सेरी । जय जय कृष्ण कहत 'परमानन्द' प्रगट्यो कंस को बैरी
॥ ३ ॥ ❀ ५७ ❀ राग धनाश्री ❀ नंद महोत्सव हो बड कीजे । अपने लाल
पर वारि नोछावर सब काहू कों दीजे ॥ १ ॥ विप्रन देहु गाय और सोनो
भाटन रूपो दाम । ब्रज जुवतिन पाटंबर भूषन पूजे मन के काम ॥ २ ॥
नाचो गावो करो बधाइ अजन जन्म हरि लीनो । यह अवतार बाल लीला
रस 'परमानंद' हि दीनो ॥ ३ ॥ ❀ ५८ ❀ राग सारंग ❀ तुम जो मनावत
सोइ दिन आयो । अपनो बोल करो किन जसुमति लाल घुटुरुवन धायो
॥ १ ॥ अब चलिहै पायन ठाडो ह्वै महरि बजाय बधायो । घरघर आनन्द
होत सबन के दिनदिन बढत सवायो ॥ २ ॥ इतनो बचन सुनत नन्दरानी
मोतिन चोक पुरायो । बाजत तूर तरुनि मिलि गावत लाल पटा बैठायो
॥ ३ ॥ 'परमानन्द' रानी धन खरचत ज्यों विधि वेद बतायो । जा दिन
कों तरसत मेरी सजनी गहि अँगुरियन लायो ॥ ४ ॥ ❀ ५९ ❀
❀ राग धनाश्री ❀ जसोदारानी सोवन फूलन फूली । तुमारे पुत्र भयो कुल
मंडन वासुदेव समतूली ॥१॥ देत असीस बिरध जे ग्वालिन गाम गाम ते
आई । ले ले भेट सबे मिलि निकसी मंगलचार बधाइ ॥२॥ एसे दसक
होंइ जो औरे सब कोउ सचुपावे । बाढो वंस नंदबाबा को 'परमानन्द' जिय
भावे ॥३॥ ❀ ६० ❀ राग धनाश्री ❀ रानी तेरो चिरजीयो गोपाल । वेगि

बडो बढि होय विरध लट महरि मनोहर बाल ॥१॥ उपजि परयो यह कूखि भाग्यबल समुद्र सीप जैसे लाल । सब गोकुल के प्रान जीवन धन वैरिन के उरसाल ॥२॥ 'सूर' कीतो जिय सुख पावत है देखत स्यामतमाल । रज आरज लागो मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल ॥३॥ ❀ ६१ ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ बधाइ माइ आज बधाइ ।ध्रु०। आज बधाइ सब ब्रजछाइ । ब्रज की नारी सबे जुरि आइ ॥१॥ सुंदर नंदमहरजू के मंदिर । प्रगट्यो है पूत सकल सुख कंदर ॥२॥ होतहि ढोटा ब्रजकी सोभा । देखि सखी कछु औरहि ओभा ॥३॥ मालिन सी जहाँ लछमी लोले । वंदनवार बाँधती डोले ॥४॥ बगर बुहारत फिरत अष्टसिद्ध । कोरन साथिया चित्रत नव निध ॥५॥ गृह गृह ते गोपी गमनी जब । रंगीली गलिन मे भीर भई तब ॥६॥ वीथी प्रेम नदी छबि पावे । नंदसदन सागर कों धावे ॥७॥ हाथन कंचन थार रहे लसि । कमलन चढि आये मानो ससि ॥८॥ मंगल कलस जगमगे नग के । भागे सकल अमंगल जग के ॥९॥ फूले ग्वाल मानो रन जीते । भये सबन के मन के चीते ॥१०॥ कामधेनु ते नेक न हीनी । द्वै लच्छ गाय द्विजन कों दीनी ॥११॥ नन्दराय तहाँ अति रस भीने । पर्वत सात रतन के दीने ॥१२॥ नंदराय गृह माँगन आये । वे बहोरयो माँगन न कहाये ॥१३॥ घरके ठाकुर के सुत जायो । 'नंददास' तहाँ सब सुख पायो ॥१४॥ ❀ ६२ ❀ राग आसावरी ❀ बाला मैं जोगी जस गाया । धन जसुमति तेरे या तन कों जिन एसा सुत जाया ॥१॥ गुनन बड़ा छोटा जिनि जानो अलख पुरुष घर आया । जाको ध्यान धरत है मुनिजन निगम खोज नहिं पाया ॥२॥ जो चाहो सो लीजिये रावल करो आपनी दाया । देहु असीस मेरे या सुतकों बाढे अविचल काया ॥३॥ नाहीं लेहों पाट पाटंबर ना लेहों कंचन माया । अपने सुत को दरस दिखावो जो मेरे गुरु ने बताया ॥४॥ बिनती किये कहत नन्दरानी सुनि जोगिन के राया ।

देखन न देहुँ तोहि दिगम्बर बालक जाय दिठाया ॥५॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जाय दिठाया। अलख पुरुष है मेरा स्वामी सो तेने भवन छिपाया ॥६॥ बालकृष्ण कों लाय जसोदा करि अंचल की छाया। दरसन पाय चरन रज बंदी सिंगी नाद बजाया ॥७॥ निरख निरख मुख पंकज लोचन नैनन नीर बहाया। देखत बने कहत नहिं आवे नाटक भला बनाया ॥८॥ 'ठाकुरदास' महाप्रभु लीला महादेव लौ लाया। लीला लाल ललित गुन अटक्यो चित नहिं चलत चलाया॥९॥ ❀ ६३ ❀ पलना ❀ राग रामकली ❀ झूलो पालने गोविन्द। दधि मथों नवनीत काढों तुमकों आनन्द कन्द ॥१॥ कंठ कठुला ललित लटकन भृकुटी मन के फंद। निरखि छबि छिनछिन झुलाउं गाउं लीला छंद ॥२॥ द्वै दूध की दतियाँ सुख की निधियाँ हसत जब कछु मन्द। 'चतुर्भुज' प्रभु जननी बलि गिरिधरन गोकुलचंद ॥३॥ ❀ ६४ ❀ राग रामकली ❀ अपने बाल गोपाले रानी जू पालने झुलावे। वारंवार निहारि कमल मुख प्रमुदित मंगल गावे ॥१॥ लटकन भाल भृकुटी मसि बिंदुका कण्ठ कठुला बनावे। सदमाखन मधु सानि अधिक रुचि अंगुरिन करके चटावे ॥२॥ कबहुक सुरंग खिलोना ले ले नाना भाँति खिलावे। देखि देखि मुसिकाय साँवरो द्वै दतियाँ दरसावे ॥३॥ सादर कुमुद चकोर चंद ज्यों रूप सुधारस प्यावे। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल कों हँसि हँसि कंठ लगावे ॥४॥ ❀ ६५ ❀ राग रामकली ❀ नन्द को लाल ब्रज पालने झूले। कुटिल अलकावली तिलक गोरोचना चरन अंगुष्ठ मुख किलकि फूले ॥१॥ नैन अंजन रेख भेख अभिराम सुठि कंठ केहरि नख किंकिनी कटि मूले। 'नन्ददासनि' नाथ नन्दनन्दनकुंवर निरखि नागरि देह गेह भूले ॥२॥ ❀ ६६ ❀ राग बिलावल ❀ हालरो हुलरावत माता। बलि बलि जाउँ घोख सुख दाता ॥१॥ अति लोहित कर चरन सरोजे। जे ब्रह्मादिक मनसा खोजे ॥२॥ जसुमति अपनो पुन्य बिचारे। वारवार मुख कमल

निहारे ॥३॥ अखिल भुवनपति गरुडागामी । नन्द सुवन 'परमानन्द' स्वामी ॥४॥ ❀ ६७ ❀ राग आसावरी ❀ माईरी कमलनैन स्यामसुन्दर झूलत है पलना । बाल लीला गावत सब गोकुल की ललना ॥१॥ लाल के अरुन तरुन चरन कमल नखमनि ससि जोति । कुंचित कच मकराकृति लर लटकत गज मोती ॥२॥ लाल अंगुष्ठा गहि कमलपानि मेलत मुख मांहि । अपनो प्रतिबिंब देखि पुनि पुनि मुसिकाई ॥३॥ रानी जसुमति के पुन्य पुञ्ज वार-वार लाले । 'परमानंद' स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले ॥४॥ ❀ ६८ ❀ ❀ राग बिलाबल ❀ फूली चायन हुलरावे यसोदाजू लेत बलैया । अनूप पालने झुलाय हरख सों अंचल ओलि मागे विधिना पे जीयो मेरो कान्ह ललैया ॥१॥ यह ब्रजनायक यह ब्रज सोभा गोपी ग्वाल गौ वच्छ पलैया । 'जगन्नाथ कविराय' के प्रभु माइ सब सुख फलन फलैया ॥२॥ ❀ ६९ ❀ ❀ राग आसावरी ❀ वारी मेरे लटकन पग धरो छतियां । कमल नैन बलि जाउँ वदन की सोभित नैंनी नैंनी द्वै दूध की दतियां ॥१॥ यह मेरी यह तेरी यह बाबानन्दजू की यह बलभद्र भैया की यह ताकी जो झुलावे तेरो पलना । इहां ते चली खर खात पीवत जल परिहरो रुदन हँसो मेरे ललना ॥२॥ रुनक झुनक पग बाजत पैंजनिया अलबलकलबल बोलो मृदु बनियाँ । 'परमानंद' प्रभु त्रिभुवन ठाकुर जाहि झुलावे बाबा नंदजू की रनियाँ ॥३॥ ❀ ७० ❀ राग आसावरी ❀ तुम ब्रजरानी के लाला । अहो दधि मथत सुहाइ के लाला ।ध्रु०। दिव्य कनक को पालनो लाल रतन जटित नगहीर । गजमोतिन के झूमका हो लाल ऊपर दच्छिन चीर ॥१॥ घुटुरुन चलत सुहावने लाल पग नूपुर को नाद । कटि किंकिनी रुनझुनन करे लाल सुनत जननी अल्हाद ॥२॥ आधे आधे बचन सुहावने लाल सुनत जननी मन मोद । मुख चूमत स्तन पान देहो लाल ले बैठारति गोद ॥३॥ कुल्हे सुरंग सिर ताफताकी लाल झगुली पीत सुदेस । कण्ठ बधना कर पहोंचिया

लाल सोभित सुंदर वेस ॥४॥ तिलक खुल्यो गोरोचना लाल घूंघरवारे केस । नैनी नैनी दतियाँ द्वै दूध की लाल देखियत हंसत सुदेस ॥५॥ काजर लोचन आँज के लाल भोंह मटुक दे ईठ । अपनो लाल काहु देखन न देहों जिनि कोउ लावो डीठ ॥६॥ प्रथम हनी तुम पूतना लाल सकट भंजन तृन मारि । यमलार्जुन तारि के लाल अब किन छांड़ो आरि ॥७॥ मेरे लाल की मैया ब्रजरानी बाप गोपकुलराज । धनि धनि तुमारे बलभद्र भैया करत सकल सुर काज ॥८॥ मेरे लाल की गैया अति बाढ़ी चरन बृन्दावन जाँय । पान्यो पीवे नदी जमुना को अंजन खर वे खाँय ॥९॥ मेरे लाल हो प्यारे लाल तुम कंस मारि गढ़ लेहु । मथुरा फेरो ब्रजराज दुहाइ लाल गोप सखन सुख देहु ॥१०॥ लिये उठाय ब्रजराज मोद करि दे उगार हृदे लाय । बहोरयो लिये जननी गोद करि स्तन चले है चुचाय ॥११॥ कहत यसोदा सुनो मेरे 'गोविंद' लेहु कनिया चढ़ाय । जो झूलो तो पालने झुलाउं नातर आंगन बैठि खिलाय ॥१२॥ ❀ ७१ ❀ आरती समय राग कान्हरा ❀ जसुमति तिहारो घर सुबसबसो । सुनरी जसोदा तिहारे ढोटा को न्हावत हू जिनि बार खसो ॥१॥ कोऊ करत मंगल वेदध्वनि कोउ गाओ कोऊ हंसो । निरखि निरखि मुख कमल नैन को आनंद प्रेम हिये हुलसो ॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवो कोटि वरीसो । 'परमानंद' नंद घर आनंद पुत्र जन्म भयो जगतजसो ॥३॥ ❀ ७२ ❀ राग सारंग ❀ गह्यो नंद सब गोपिन मिलि के देहु हमारी बधाई । अखिल भुवन की जो है महा सिद्धि सो तुमारे गृह आई ॥१॥ बाजत तूर करत कोलाहल मंगलचार सुहाइ । कंचुकी ऊपर कचलर लटकत ये छबि बरनी न जाइ ॥२॥ देदे कनक पाटंबर भूसन ग्वाल सबै पैहराइ । 'परमानंद' नंद के आँगन गोपी महानिधि पाइ ॥३॥❀७३❀

उत्सव श्री बडे ब्रजभूषण जी को (भादों बदी ६)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग देवगंधार ❀ आज बधाई मंगलचार। गावत मंगल गीत युवतिजन नवसत साज सिंगार ॥१॥ मंगल कनक कलस सुभ मंगल बांधी बंदनवार। मंगल मोतिन चौक पुराये पंचसब्द गृहद्वार ॥२॥ घरघर मंगलमहा महोत्सव श्रीवल्लभ अवतार। 'हरिजीवन' प्रभु यज्ञ पुरुष श्रीलछमन भूप कुमार ॥३॥ ❀ ७४ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ श्रीलछमन गृह मंगल भयो प्रगटे श्रीवल्लभ पूरन काम। माधव मास कृष्ण पच्छ सुभ लग्न उदित एकादसी दूसरो याम ॥१॥ मंगल कलस चोक मोतिन के बिबिध बिचित्र चित्र बने धाम। मंगल गावत मुदित मानिनी नख सिख रूप कामसी बाम ॥२॥ मिट्यो तिमिर दुख द्वन्द्व जगत को भोर भयो मानो मिटगइ याम। 'मानिकचन्द' प्रभु सदा बिराजो आय बसो श्री गोकुल गाम ॥३॥ ❀ ७५ ❀ राग सारंग ❀ सुभ बैसाख कृष्ण एकादसी श्रीवल्लभ प्रभु प्रगट भये। दैवी जीवन के भाग्य विस्तरे निरखत तन के ताप गये ॥१॥ पुष्टि भक्तिरस निज दासन कों अति उदार मन दान दये। 'मानिकचंद' हिय बसो निरंतर श्रीबल्लभ आनंद मये ॥२॥ ❀ ७६ ❀ राग सारंग ❀ जे वसुदेव किये पूरन तप सो फल फलित श्रीवल्लभ देह। जे गोपाल हुते गोकुल मे ते अब आन बसे निज गेह ॥१॥ जे वे गोप वधू ही व्रज में सो अब वेद ऋचा भइ जेह। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल तेइ एइ एइ तेइ कछु न संदेह ॥२॥ ❀ ७७ ❀ राग सारंग ❀ श्री वल्लभनन्दन रूप अनूप स्वरूप कह्यो न जाइ। प्रगट परमानन्द गोकुल बसत हैं सब जगत के सुखदाइ ॥१॥ भक्ति मुक्ति देत सबन कों निजजन कों कृपा प्रेम बरखत अधिकाइ। सुख मैं सुख रूप सुखद एक रसना कहां लों बरनो 'गोविंद' बलि जाइ ॥२॥ ❀ ७८ ❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ गो वल्लभ गोवर्धन वल्लभ श्री वल्लभ गुन गिने न जाइ। भुव की रेनु तरैया नभ की घन की बूँदे परत लखाइ ॥१॥ जिनके चरन कमल रज वंदित संतन होत

सदा चित चाइ । 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल नन्दनन्दन की सब पर छाँहि ॥२॥ ❀ ७९ ❀ राजभोग के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ जब मेरो मोहन चलैगो घुटुरुवन तब हौं करौंगी बधाइ । सर्वसु वारि देहुँगी तिहि छिनु मैया कहि तुतराइ ॥१॥ यसोदा के बचन सुनत 'केसो' प्रभु जननी प्रीति जानि अधिकाइ । नंद सुवन सुख दियो मात कों अति कृपाल मेरो नन्दललाइ ॥२॥ ❀ ८० ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ जो पै श्री विट्ठल रूप न धरते । तो कैसे के घोर कलियुग के महा पतित निस्तरते । श्रीबिट्ठल नाम अमृत जिन लीनो रसना सरस सुफलते ॥२॥ कीरति विसद सुनी जिन श्रवनन विषय विष परिहरते । 'गोन्विद' बलि दरसन जिन पायो उमग उमग रस भरते ॥३॥ ❀ ८१ ❀ राग गौरी ❀ नातर लीला होती जूनी । जो पै श्री वल्लभ प्रगट न होते वसुधा रहती सूनी ॥१॥ दिन प्रति नई नई छबि लागत ज्यों कंचन नग चूनी । 'सगुनदास' या घर को सेवक यस गावत जाको मुनी ॥२॥❀८२❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ भक्ति सुधा बरखत ही प्रगटे श्री बल्लभ द्विजराज । माधव मास कृष्ण एकादसी पिय पुनीत दिन आज ॥१॥ करुणावंत अतुल सुखसागर संग लिये सकल समाज । बंधु कुमुद अनुचर चकोर के भये मनोरथ काज ॥२॥ आनन्द रूप जगत के भूषन लगत सबन सिरताज । 'विष्णुदास' गुनगनित थकित भये पंडित पावत लाज ॥३॥ ❀ ८३ ❀ राग कान्हरा ❀ श्री लछमन गृह प्रगट भये हैं श्री वल्लभ परमानन्द रूप । ब्रह्मवाद उद्धारन कारन गोपीपति पदरति पति भूप ॥१॥ महाभाग्य पूरन दैवीजन जिन के हित अवतार लियो । प्रगट अनल देखत निज जनकों मायामत को तिमिर गयो ॥२॥ अपने दीन जान करुनामय वचनामृत पोखे संतत सब । नंदराय की फेर दिखाइ 'गिरिधर'की लीला ही जे तब ॥३॥ ❀ ८४ ❀ राग कल्याण ❀ श्री वल्लभलाल के गुन गाउं । माधुरी माधुरी मूरति देखे आनंद सदन मदनमोहन नयन चैन पाउं ॥ १ ॥

श्री वल्लभनन्दन जगत वंदन सीतल चंदन ताप हरन येहि महाप्रभु इष्ट करन चरनन चित लाउं। 'छीतस्वामी' मन वच कर्म परम धर्म येहि मेरे लाड़िलो लड़ाउं ॥२॥ ❀ ८५ ❀ राग कान्हरा ❀ आज धन भाग्य हमारे, प्रगटे श्री विट्ठलनाथ। निरखत त्रिविधताप तन के गये भवसागर ते तारे ॥१॥ स्यामल अंग बदन पूरनचंद देखियत जग उजियारे। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल वल्लभराज ललारे ॥२॥ ❀ ८६ ❀ सेनभोग सरे ❀ राग कान्हरा ❀ गाउं श्री वल्लभनन्दन के गुन लाउँ सदा मन अंग सरोजन। पाउं प्रेम प्रसाद ततच्छिन गाउं गोपाल गहे चित चोजन ॥१॥ नाउं सीस रिझाउं लाले आयो सरन यह जो प्रयोजन। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल छबि पर वारों कोटि मनोजन ॥२॥ ❀ ८७ ❀ पोढ़वे में ❀ राग कान्हरा ❀ कुंज भवन आज मङ्गल है री। किसलयदल कुसुमन की सैया तापर बिछाई पीतपिछोरी ॥ ओट्यो दूध कनक कटोरा और पानन की भर भर झोरी। सघन कुंज में श्री गिरिधर विलसत ललितादिक चितवत दृग चोरी ॥२॥ होंय मनोरथ मेरे जिय के दंपति पोढ़े एकहि ठोरी। कहे 'श्रीभट' ओटह्वै निरखों क्रीडा करत किसोर किसोरी ॥३॥ ❀ ८८ ❀ राग विहाग ❀ कुञ्ज भवन में पोढ़े दोउ। नंदनंदन वृखभाननन्दिनी उपमा को दूजो नहिं कोउ ॥ लाल कुसुम की सेज बनाइ कोककला जानत है सोउ। रस में माते रसिक मुकुटमनि 'परमानन्द' सिंहद्वारे होउ ॥३॥ ❀ ८९ ❀

बाल लीला (भादों बदी १०)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग बिलावल ❀ जा दिन कन्हैया मोसों मैया कहि बोलेगो ॥ सो दिन सुभग ता दिन गिनूँगी री आली रुनक झुनक व्रज गलियन में डोलेगो ॥१॥ भोर ही उठेगो धाय खिरक दुहेगो गाय बन्धन बछरुवा झटक कर खोलेगो। 'परमानन्द' प्रभु नवलकुंवर मेरो गोपन के अङ्ग सङ्ग बन में कलोलेगो ॥२॥ ❀ ९० ❀ शृङ्गार के ओसरा में तमूरा सूं ❀

❀ राग बिलावल ❀ सोभित कर नवनीत लिये। घुटुरुन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये ॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन को तिलक दिये। लर लटकन मानों मत्त मधुपगन मादिक मधुहि पिये ॥२॥ कठुला कण्ठ वज्र केहरि नख राजत है सखी रुचिर हिये। धन्य 'सूर' एको पल यह सुख कहा भयो सतकल्प जिये ॥३॥ ❀ ६१ ❀ राग बिलावल ❀ ब्रज की रीति अनोखी री माइ। जो कोउ नंद भवन में आवत ताको मन हर लेत कन्हाइ ॥१॥ उर बघना मुख माखन सोहे तन की कहा कहों जो निकाइ। घुटुरुन चलत छाँह कों पकरत किलकत हसत खेलत अंगनाइ ॥२॥ मात यसोदा लेत बलैया मन में मोद बढ्यो न समाइ। 'कल्याण' के प्रभु यह छबि निरखत पलक की ओट सही नहिं जाइ ॥३॥ ❀६२❀ शृङ्गार के दर्शन ❀ ❀ राग बिलावत ❀ आज प्रात ही तुतरात बात कहत बलि कन्हैया। जैसे सुक सुक पिक पिक बोल बोलत है अरस परस सुनि सुनि सुख पावत भावत नन्द जसोदा मैया ॥१॥ बचन रचन कहत समझ समझ परत नहिं कछु बिच बिच दाउ जब कहत मेरी गैया। रीझ रीझ पुलकि पुलकि उर लगात चूमत मुख वार वार कहत यह लेत पुनि बलैया ॥२॥ बहुविध पकवान पान खीर नीर माखन मधु मेवा मिश्री ले प्यावत मथि घैया। बलि बलि ब्रज वनिता जहाँ 'दामोदर' हित चित नित हरत लरत भूखन पट नटवर दोउ भैया ॥३॥❀६३❀ ❀ राग सारंग ❀ आँगन खेलिये झनक मनक। लरिका यूथ संग मन मोहन बालक ननक ननक ॥१॥ पैया लागों पर घर जैवो छाँडो खनक खनक। 'परमानन्द' कहत नंदरानी बानिक तनक तनक ॥ २ ॥ ❀ ६४ ❀ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ दुहूँकर फोंदना मुख मेलत। रामकृष्ण बैठे गोद जननी की कबहुक उतरि घुटुरुन खेलत ॥१॥ चाही रहत खुन खुना सुनि सुनि हंसि वसुधा पगसों पग ठेलत। 'रामदास' प्रभु सिसुता के बस अरबराय खिलोना संकेलत ॥२॥ ❀ ६५ ❀ संध्या आरती में ❀ राग नट ❀

काहू जोगिया की नजर लगी मेरो बारो कान्हर रोवे । घर घर हाथ दिखाय जसोदा दूध पीये नहिं सोवे ॥१॥ राई लोन उतार यसोदा जोगिया यह कोहै । 'सूर' प्रभु को यही अचंभो तीन लोक सब मोहे ॥२॥ ❀ ९६ ❀ ❀ सेन के दर्शन में ❀ राग ईमन ❀ चलो मेरे लाड़िले हो पायन पैजनी के चाय । रतन जटित की गढ़ाइ याही लालच कों पहराइ ठुमकि ठुमकि पग धरो मनमोहन लेहुँ बलाय ॥१॥ आज को दिन सुहावनो बलि जाउं लला मेरे आँगन खेलिये धाय । वारोंगी सर्वस्व 'नारायन' विप्रन देहुँगी गाय ॥ २ ॥ ❀ ९७ ❀ पौढ़वे में ❀ राग बिहाग ❀ सोवत नींद आय गइ स्यामहि । महरि उठ पोढ़ाय दुहुन कों आपुन लगी गृह कामहि ॥१॥ बरजत है घर के लोगन कों हरिये ले ले नामहि । गाढ़े बोल न पावत कोऊ डर मोहन वलरामहि ॥२॥ सिव सनकादि अन्त नहिं पावत ध्यावत है दिनयामहि । 'सूरदास' प्रभु ब्रह्म सनातन सो सोवत नंद धामहि ॥३॥ ❀९८❀

उत्सव छठी को—पलना (भादों वदी १३)

❀ मंगला के दर्शन मे ❀ राग बिलावल ❀ सखीरी नंदनंदन देख । धूरि धूसर जटा जरुली हरि कियो हर भेख ॥ केहरी के नखन देखत रही सोच विचारि । बाल ससि मानो भाल ते ले उर धरयो त्रिपुरारि ॥२॥ नीलपाट पिरोहि मनिगन फनिग धोखे जाय । खुनखुना कर लिये मोहन नचत डमरु बजाय ॥३॥ जलजमाल गोपाल के उर कहा कहूँ बनाय । गंग मानों गौरी के डर लई कण्ठ लगाय ॥४॥ देखि अङ्ग अनंग लज्जित निरखि भयो भय मान । 'सूर' हिरदे सदा बसिये स्याम सिव की बान ॥५॥ ❀९९❀ ❀ राग बिलावल ❀ जसोदा अपनों लाल खिलावे प्रेम की कलोलन सों लाड़ लड़ावे । उबट मज्जन करि सिंगार भ्रकुटी मसि बिंदुका लावे जाहि गावे वेद ताहि चलन सिखावे ॥१॥ विस्वधरन सबके सरन ताहि थाम गहि हाथ ठुमकि ठुमकि चलत नाथ नूपुर वजावे । तेसेइ सोभित सखा संग

खेलवे कों आनन्दकंद कबहु हंस चकोर परेवा पकरवे कों धावे ॥२॥ विंजन करत ब्रज की नारि पीतझगुलि फरहरात मानों नील निपट घन कों दामिनी दुरावे । कबहु उछंग लेत कन्हैया करि राखत कण्ठ मनिया पुनि उतारि मुख निहारि आभूखन बनावे ॥३॥ कबहु माखन मेवा खावे अंगन फूलि अंग न मावे कबहु कछु देन कहत बालगोपाल नचावे । 'रामराय' प्रभु गिरिधर काहिन करत भक्त हेत ऐसे गोकुलचन्द कों 'भगवानदास' गावे ॥४॥❀१००❀

❀ शृङ्गार के दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ आये सो आँगन बोले माइरी जसोदा अपने बालका को दरस दिखाओ । यह चन्द ले कण्ठ धराओ जटा गंग सुत तन छिरकाओ । हाथ दिखाय मेरो पतर (खपर) भराओ ॥१॥ बड़ो पुरुस ह्वै है सुत तेरो देहों भभूत ललाट लगाओ । आदिनाथ की पीत झगुलिया की धजा चड़ाओं 'धोंधी' कों हू भक्ति दिवाओ ॥२॥ ❀ १०१ ❀

❀ राजभोग के दर्शन में ❀ राग बिलावल ❀ क्रीडत मनिमय आँगन रंग । पीत ताफ को झगुला बन्यो है कुलही लाल सुरंग ॥१॥ कटि किंकनी घोष विस्मित अति धाय चलत बल संग । गो सुत पूंछ भमावत करगहि पंक राग सोहे अंग ॥२॥ गजमोतिन लर लटकत सोहत सुन्दर लहर तरंग । 'गोविंद' प्रभु के अंग अंग पर वारों कोटि अनंग ॥३॥ ❀ १०२ ❀

❀ भोग के दर्शन में ❀ ❀ राग नट ❀ सोहत स्याम तन पीत झगुलिया । कुलहि लाल लटकन छबि बघना चलन सिखावत मैया ॥१॥डगमगात पग धरत मनोहर अति राजत पैंजनिया । जसुमति मन प्रफुलित तन आनंद पुनि पुनि लेत बलैया ॥२॥ किलकि किलकि कर लेत खिलोना प्रेम मगन हुलसैया । अरबराय देखत फिर पाछे घुटुरुन चलत है धैया ॥३॥ गोपवधू मुखकमल निहारत ललन सबैं सुख दैया । ब्रजलीला ब्रह्मादिक दुर्लभ गावत 'दास' सदैया ॥४॥ ❀ १०३ ❀

❀ पोढवे में ❀ राग अडानो ❀ अहो मेरे लाडिले नींद करो किन पलना न सुहाय तो मैं गोद ले सुवाउं । हठ छाँड़ो गीत गाउं हालरो

हुलराउं ग्वालन के मुख की कहानी सुनाउं ॥१॥ कोनधों भवन आये काहू की नजर लागी भोरही ऋषिराज रच्छा बंधाउं । मेरे 'व्रजईस' तुम एसी बूझो न रीस भोरही कुंवर कान्ह झगुली सिवाउं ॥२॥ ❀ १०४ ❀

राधाष्टमी की बधाई (भादो सुदी १)

❀ शृङ्गार के ओसरा में ❀ राग देवगंधार ❀ जनम बधाई कुंवरि लली की । प्रगटी प्रभा अद्भुत सुगंधिनी हरि अलि कंज कली की ॥१॥ सुमुख समूह सिहात सुनत ही यह विधि बात भली की । कीरति रानी की कल कीरति गावत सुफल फली की ॥२॥ बिनु बछरन गैया खेलत सुभ सगुन दसा कुसली की । बलि को चार सार सोइ सजनी दानव दलन दली की ॥३॥ रोपत बंदनवार द्वार वर रूपी अवल कदली की । रोपति सींक सुवासिनि सथिये सिख नहिं सुनत अली की ॥४॥ अगनित सुत अवतार निवारो को भयो प्रनत पली की । महामोद मूरति को उद्भव लाल अनुज मुसली की ॥५॥ भायो भयो नंदयसोदा को प्रथमहि बात चली की । भायो भयो वृखभान गोप को बचन सहित दृढली की ॥६॥ कनकथार भरि रतन वारने आवनि गली गली की । रावल रावरि कुसुमन झरझरे अरु भरि डलाडली की ॥७॥ नाचत गोपी गोप ओप सों और निसान धुली की । यह भयो दान अमान मानदे और मर्याद मली की ॥८॥ राधा नाम कहत ऋषिवर पढ़ि यह थिर निगम थली की । दधिकादों भादों झर लायो आठे पंथ पथली की ॥९॥ बेगि बधैया गयो महावन बिदा भइ महली की । हेरी देत अघै है नाहीं अब चढ़ि बनी 'बली' की ॥१०॥ ❀१०५ ❀ राग बिलावल ❀ आज बधाइ है बरसाने । कुंवरि किसोरी जनम लियो है सब लोकन बजे निसाने । कहत नंद वृषभान राय सों बहुत बात को जाने । आज भैया हम सब ब्रजवासी तेरे हाथ बिकाने ॥२॥ या कन्या के आगे कोटिक बेटन कों को माने । तेरे भले भलो सबहिन को आनंद कोन बखाने ॥३॥ छैल छबीले गोप रंगीले हरद

दही लपटाने । पहरे वसन विविध अंग भूसन गिनत न राजा राने ॥४॥ नाचत गावत प्रेम मुदित नर नारी न को पहिचाने । 'व्यास' रसिक तन मन फूले अति निरखि सबे खिसियाने ॥५॥ ❀ १०६ ❀ राग विलावल ❀ बाजत रावल माँझ बधाइ । श्री वृषभानगोप के प्रगटी श्रीराधा आनन्ददाइ ॥१॥ घर घर ते नर नारी मुदित मन सुनत चले उठि धाइ । ललित बचन लोचन भरि निरखत मानों रंक निधि पाइ ॥२॥ नाचत गावत करत कुलाहल घर घर बात लुटाइ । फूले गात न मात कंजलों मानों तमरिपु दरसाइ ॥३॥ कुल मण्डन दुख खण्डन सुंदरि स्याम सरीर सुहाइ । निरवधि नित्य स्नेह परायन 'प्रिय दयाल' बलिजाइ ॥४॥ ❀ १०७ ❀ राग बिलावल ❀ आज रावल मे जयजयकार । प्रगट भइ वृखभान गोप के श्री राधा अवतार ॥१॥ गृहगृह ते सब चली बेगते गावत मंगलचार । प्रगट भइ त्रिभुवन की सोभा रूपरासि सुखसार ॥ २ ॥ निर्तत गावत करत बधाइ भीर भई अति द्वार । 'परमानन्द' वृषभान नंदिनी जोरी नन्ददुलार ॥३॥ ❀ १०८ ❀ राजभोग आये ❀ ❀ राग आसावरी ❀ जनम लियो वृषभान गोप के बैठे सब सिंहद्वार री । लग्न घरी बलि नछत्र साधि के गुरुजन कियो बिचार री ॥१॥ कंचन मनि आँगन आगे रहि बोलत द्विजवर बेन । कबहुक सुधि पावत सुभवन मे पुत्र जनम के चैन ॥२॥ इतने एक सखी आइ धाइ के जहाँ बैठे बलि ग्वाल । बेगि पुकार कह्यो मुख आली प्रगटी सुता लघु बाल ॥३॥ तब हसि तारी दे गुरुजन कों देख्यो जन्म विधान । हमरे कोटि पुत्र की आसा पूरन करी वृखभान ॥४॥ कर भाजन भृङ्गीजु गर्गमुनि लग्न नछत्र बलि सोध । भये अचरज गृह देखि परस्पर कहत सबन प्रति बोध ॥५॥ सुदि भादों सुभ मास अष्टमी अनुराधा के सोध । प्रीति योग बल बालव करण लग्न धनुष वर बोध॥६॥प्रथम पहर दिन उदित दिवाकर सत्या सुखद सुजात। नामकरन राधा रति रंजन रमा रसिक बहु भाँति ॥७॥ सुनि वृखभान

सुता जिनि मानों ऐसी रमा रति लोल। नाहिन और सुन्दर त्रिभुवन मे श्रीराधा समतोल ॥८॥ नाहिन सची रमा गिरिजा रति रोम-रोम प्रति ठाने। नवनिधि चारि पदारथ को फल आयो सकल ग्रहताने ॥९॥ जब व्याहन सुभ योग होयगी सोभा कहत न आवे। दस और चारि लोक को नायक यह सुता वर पावे ॥१०॥ तब हँसि कह्यो दुर्वासा बेनन सुनो श्रुति सकल गुवाल। मेरेही चित आयो निश्चल नंदमहर घर बाल ॥११॥ वृन्दावन रस-रास रसिकमनि दंपति-संपति माने। संकेत स्थल विहरत दोउ सोइ सकल यह जाने ॥१२॥ युवति यूथ मधि सुभग सिरोमनि वल्लव कुल नंदलाल। यह जोरी जग जुगति होयगी राधारमन गोपाल ॥१३॥ सिव विरंचि जाकी जूठन पावे सो ग्रास परस्पर देत। कुंज निकुंज क्रीडत अद्भुत दोउ निगम अगम रस लेत ॥१४॥ यह विधि कह्यो द्विजराज जुवति सों ग्वाल-मण्डली जाने। जय-जयकार करत सुर लोकन बाजत तूर निसाने ॥१५॥ घर-घर ते गोपी सब निकसी गावत मङ्गल बाल। पिकबेनी मृगनैनी सुन्दरि चलत सु चाल मराल ॥१६॥ जो रस नंदभवन मे उमग्यो ताते दूनो होत। हय गज धेनु कनक भरि दीने बंदीजन द्विज बहोत ॥१७ बसन विचित्र बहुत पहराये सब सिसु देखन जाय।मुख अवलोकि कहत चिरजीयो पुलकि-पुलकि सचुपाय ॥१८॥ सुर मुनि नाग धरनि जङ्गम कों आनंद अति सुख देत। ससि खंजन विद्रुम सुक केहरि तिनकों छीनि बलि लेत ॥१९॥ 'सूरदास' उर वसो निरन्तर राधा-माधो जोरी। यह छबि निरखि-निरखि सचु पावे पुनि डारे त्रन तोरी ॥२०॥

❀ १०६ ❀ राग धनाश्री ❀ बरसाने वृषभान गोप के आनंद की निधि आइ जू। धनि-धनि कूखि रानी कीरत की जिन यह कन्या जाइ जू ॥१॥ इन्द्रलोक भुवलोक रसातल देखी सुनी न गाइ। सिंधु सुता गिरि सुता सची रति इन समान कोउ नांइ ॥२॥ आनंद मुदित जसोदा रानी लाल की करी